प्रकत

१. भाषा-विज्ञान की परिभाषा दीतिए । वह कला है ग्रथना विज्ञान ?

२. भाषा-विज्ञान भीर ध्याकरण के सम्बन्ध की सम्बन्ध मीमांसा कीजिए। भाषा-विज्ञान से व्याकरण और साहित्य के श्रद्ययन ग्रीर द्यापापन में कहाँ तक सहायता मिलती है, स्पन्ट कीजिए ।

३. भाषा-विज्ञान के प्रमुख धर्मा का परिचय दीजिए तथा उसकी सप्रयोगिता का विवेचन की जिए ।

४. सिद्ध कीजिए, भाषा-विज्ञान की परम्परा बहुत प्राचीन काल

से ग्रविच्छिन्त चली धाती है। ४. ब्राधुनिक भाषा विज्ञान के प्रारम्भिक इतिहास का दिग्दर्शन

कराइये ।

६. भाषा की उत्पत्ति के विषय में विभिन्न प्रचलित मतो का उल्लेख करने हुए, कारण सिह्न ज्याच्या कीजिए कि कौन-सा मन द्यधिक तर्कसंगत है ?

७. 'एक भाषा-विज्ञानी के तिए माहित्यक भाषा की अपेक्षा बोलियां ब्रधिक महत्वपूर्ण हैं।' ब्रालोचना करते हुए बोली, विभाषा, भाषा और राष्ट्रमापा का ग्रन्तर स्पष्ट कीजिये।

भाषा परिवर्तनशील क्यों कही जाती है। परिवर्तन के मुख्य-

मुख्य कारणो की विवेचना उदाहरण सहित कीजिए। जववा

भाषा के बाह्य तथा धास्यन्तर रूप मे विकास ग्रीर परिवर्तन के कारणों पर प्रकाश डालिए।

ह. दी भाषाओं के परस्पर सम्बन्ध की निर्धारण करने के प्रमुख तरवो का उल्लेख करते हूए भ(पा-विभाजन की पद्धनियों कि गुण-दोपो का विवेचन कीजिए।

<u>ज्यार</u>िस्

१०. मापा वा माइतिमूनक या कदर-पनता की दृष्टि से वर्गीकरण २ वीजिए । उस वर्गीकरण की उपयोगिता पर भी प्रकास झानिए 🛂 🕵 ११. भाषाची का पारिवारिक वर्गीकरण किन मिद्रान्ती के भाषार X. पर किया जाता है। प्रत्येक वर्ग का सशिष्त परिचय दीजिए।

🗘 भारोपीय (ब्रायं) मनुष्यों के मूल निवास स्थान के सम्बन्ध में विभिन्न मनो पर प्रकाश हालिए।

११ रूप-पश्चितंत्रया भाषा वे दाद्य समूह म पश्चित्रत किस प्रकार

होता है भीर उस पहिस्तन के सुरूप कारण क्या माल जाते हैं है १४. बौद्धिक-निष्यमी का पश्चिम दीजिए।

प्रिक्रण प्रशिष्ठमन की दिलाका के ब्राइटर कर उपना के जिला।

स्वयुक्त एइ हरण भी दीहिता।

१६ द्राष्ट्रां से परिवास होत वे सहार बारण का है रिज्ञाया

उद्दार्शन द्वर ६ प्रश्न समय की पृथ्य कोर्गहर ।

रेश गरहत स्वति समहत्वा वा इत प्रस्त द्वर यह बनाई।

कि हिन्दी १व सन्त्रम् स उमकी नुसना स क्या क्या प्राव्य न्या हरा है।

हिन्दी न्द्रतिया से विकास पर एक तल जिल्ह १६ १६ नियाक्तिया व एस्य शिद्धान्य स्थ स्थ । स्थ र पर्

यत्रपाते हुए स्वाटला का वर सरा वर हर ।

१६ ६६ ति पारबन्त वर्ग ह दोरव ६ ४००० विदेशना की हरा। E 11 Tr

स्वीर प्रान सायव की एला ६ वरिष्टानन हमा है। इस करन

a) eure eifen :

६० व्यति नियम क्या है वे दिस कृत व्यक्ति दिस १८०

રિક્ષ) થી કરવ સહોદા કોશા કોટા કર પ્લીત ધ્રવ્ય કે કે urenta & on eine Gritee teen . ६६ कार्यत्रक्षीरक एक क्षित्र जिल्ला रहाएन दर्ग हो। इ.स.स.

the a rate has been freed after .

ef biet beltett a fairente abear, er ger-बामके हुए छ। वे विभावत का की बांत्यद दांबर क

٤.

. . ٤ŧ

¥¥

,:

٠.

१. मापा-विशान की परिभाषा दीविए । यह कता है प्रवत्ता विशास ?

२, भाषा-विद्यान भीर क्याकरण के गुम्बन्य की गुम्बन् भीमांना रीजिए। भागा-विज्ञान में स्वाहरण धीर साहित्य के ग्रम्ययन घोर प्रध्यापन में कहाँ तक गहायता गिलनी है, स्वयं कीनिए ह

इ. भाषा-विज्ञान के प्रमुत्त बागी का परिवय दीमिए तथा उसकी

उपयोगिया का विवेषन कीर्तिए । ४. विद्य गीविद, भाषा-विकास शी परस्परा यहून आसीत नाच

तं भविष्टिग्न यती भाती है। प्र. मापुनिक भाषा विज्ञान के ब्रारम्भिक श्रीहरण का दिख्यांत

हराइये ।

६, भाषा की उत्पत्ति के विषय में विभिन्न मचलित मती का इन्तेस करने हुए, बारण महिन ब्यारचा कीजिए कि कीन-मा मन

प्रधिक सर्कमगत है ? ७. 'एक भाषा-विज्ञानी के निए साहित्यक भाषा की अपेशा होतियाँ मधिक सहत्वपूर्ण हैं।' भालीचता करते हुए बोली, विभाषा,

राचा धौर राष्ट्रमाया का घन्तर स्वय्ट कीजिये । भाषा परिवर्तनशील क्यों कही जाती है। परिवर्तन के मुस्य-मुख्य कारणों की बिनेचना उदाहरण सहित की जिए। ध्यवस

भाषा के बाह्य तथा धारमन्तर रूप मे विकास मीर परिवर्तन के कारणों पर प्रकाश डालिए।

 हे दी भाषामों के परस्पर सम्बन्ध की निर्धारण करने के प्रमृतः सत्यों का उल्लेख करते हुए भाषा-विभाजन की पद्धतियों रह गुण-योषो का विवेचन कीजिए।

न्याहरू

१०. भाषा का भाइतिमूनक या शब्द-रचना की दृष्टि से वर्गीकरण ० कीजिए । उस वर्गीकरण की उपयोगिता पर भी प्रकास डानिए ११. भाषाम्रो का पारिवारिक वर्गीकरण किन मिजान्तो के भाषार 85 पर किया जाता है। प्रत्येक वर्ग का संक्षिप्त परिचय दीजिए। १२. भारोपीय (भार्य) मनुष्यों के मूल निवास स्थान के सम्बन्ध 88 में विभिन्त मनो पर प्रकाश द्वालिए। १३ रूप-परिवर्तन या भाषा के झब्द-समझ से परिवर्तन किस प्रशास ٤, होता है भीर उस परिटलंन के मुख्य कारण नया मान जाते है ? १४. बौदिक-नियमो का परिचय दीजिए। 88 १४ भ्रय पश्चितन की दिशामों के भ्राधार का उल्लेख की जिए। ٤۵ खपयुक्त उदाहरण भी दीजिए । 53

जयनुत्त ज्याहरण भी सीजिए।

१. तादार्थ में परिवर्गत होने के मुख्य कारण क्या है ? ज्यामुक्त अरे ज्याहरण देवर पाये जलार वी पूरित शीजिए।

१० ताहर प्रतिन्तामुद का वर्गीहर परिचय देवर यह बनाइये ७०० कि हिस्सी प्रतिन्तामुद का वर्गीहर परिचय देवर यह बनाइये ७००

का हरता प्यापनापूर साज्यका तुमका सामानामा पारवणा हुए है । स्यवा हिन्दी ध्वनियों के विकास पर एक लेल निर्मिय । १८ प्यन्तिकोत्तिस्य के सन्य शिकाल क्या माने जाने हैं? यह व्य

विवक्ता काजिए। प्रथम 'ध्वति प्रयत्न-साधव की देशा से परिवर्तित होती है।' इस क्यन को स्पट कीशिए।

२० ध्वनि निषम बसा है ? विस् हन ध्वनि-नियम (Grim's १६ Law) की सम्मन् सभीक्षा बीजिए। बसाध्यनि-नियम भी उसी प्रकार सकार्य है जैसे सम्य बैज्ञानिक नियम ?

समार्थ है जन साथ कार्तानक तनसा है है से सामार्थन स्वीर से हिस्स-निवस मारोधन पर दृष्टि हापन है ब्र हुए साथ किनि-निवसी का विशेषन वीलिए । पर आरोपीय-परिवार की विशेषणधी और सहस्व पर प्रसास है हुई

रूप अस्तिवासीरबार का विदायनाथा आहे । बालने हुए उसके विभावन का भी परिचय दीविए ।

प्रदन

 भाषा-विज्ञान की परिभाषा दीनिए । वद् कसा है प्रयवा विज्ञान ?
 भाषा-विज्ञान घीर ध्याकरण के सम्बन्ध की सम्बन्ध मीमांना कीतिए । भाषा-विज्ञान से व्याकरण घीर साहित्य के प्रथयन घीर

क्षध्यापन में कहाँ तक सहायता मिलती है, स्पष्ट कीजिए । 3. भाषा-विज्ञान के प्रमुख धनो का परिचय दीजिए तथा उमकी

३. भाषा-विज्ञान के प्रमुख भागे का परिचय दाजिए तथा उसका उपयोगिता का विवेचन कीजिए।

४. सिद्ध कीतिए, भाषा-विज्ञान की परम्परा बहुत प्राचीन काल से प्रविच्छिन्त चली धाती है।

५. भ्राद्युनिक भाषा विज्ञान के प्रारम्भिक इतिहास का दिग्दर्शन कराइये।

६, भाषा की उत्पत्ति के विषय में विभिन्न प्रचलित मतो का उत्केख करने हुए, कारण सिह्तं व्याख्या कीजिए कि कौम-सा मत प्रशिक तक्तेमतत है ?

७. 'एक भाषा-विज्ञानी के निष् साहित्यिक भाषा की प्रपेशा बोलियाँ मधिन महत्वपूर्ण हैं ।' बालोचना करते हुए बोली, विभाषा, भाषा भीर राष्ट्रभाषा का अन्तर स्पष्ट कीजिये।

माया आर राष्ट्रभाषा का अतार स्वयंद्य कालाय । ह. भाषा परिवर्तनशील क्यों कही जाती है। परिवर्तन के मुख्य-मृख्य कारणों की विश्वेचना उदाहरण सहित कीजिए।

ग्रववा

भाषा के बाह्य तथा भाग्यन्तर रूप मे विकास भीर परिक्तन के कारणों पर प्रकाश डालिए।

कारण है. दो सायाओं के परस्पर सम्बन्ध को निर्धारण करने के प्रमुख है. दो सायाओं के परस्पर सम्बन्ध की निर्धारण करने के प्रमुख त्रांची का जन्मेज करते हुए प्रापा-विमाजन की पद्मियों 13 गुण-दोवों का विवेधन की निए!

<u> ३</u>१५ जारट्य

१०. मापा का बाहतिमूलक या सन्देरपत्रा को दृष्टि से व्यक्तिकृष । ४२ लीजिए । उस वर्षीहरण को उपयोगिता पर भी प्रशास बालिए () ११ भाषामा वालि स्वार्थिक को उपयोगिता पर भी प्रशास बालिए पर भाषामा पर पर किया जाता है । प्रश्वेक कर्म का समिल्ल परिचय बीजिय ।

में विभिन्न मती पर प्रभाग जाविद् । ११. रप-परिवर्तन या मापा के ग्रन्थ समृद्ध में परिवर्तन किन प्रकार ११ में विद्यन-निवर्षों का परिषय वीजिए । ११ में विद्यन-निवर्षों का परिषय वीजिए । ११ मं विद्यन-निवर्षों का परिषय वीजिए । ११ मं विद्यन-निवर्षों का परिषय वीजिए । ११ मं विद्यन-निवर्षों का परिषय वीजिए । १९ मं व्याप्त भी वीजिए । १९ मं व्याप्त भी वीजिए । १९ मं व्याप्त में प्रतिप्तन होने के मुग्द कारण क्या है ? क्यमुक्त एवं वेदार में प्रतिप्तन होने के मुग्द कारण क्या है ? क्यमुक्त एवं वेदार मान मुद्द का वर्धीहन विद्यय देकर यह वनाइये परि हिर्मी धर्मन-मृद्द का वर्धीहन विद्यय तह वनाइये परि हिर्मी धर्मन-मृद्द का वर्धीहन विद्यय निवर्ष हो है ? स्था हिर्मी धर्मन-मृद्द का वर्धीहन विद्यय निवर्ष हो है है स्थान हिर्मी धर्मन-मृद्द के विद्या निवर्ष क्या माने जाने है ? यह व्याप्तनिवर्धों हम वर्धीहन के स्था (स्थान) मी सहस्य विद्या का परिवर्णन के स्था (स्थान) मी सहस्य विद्या का परिवर्णन होने है । देश क्यम स्थान विद्या में विद्यान की वर्धीहन होने है । देश क्यम विद्यान की स्थान स्थानित विद्या भी वर्धीहन होने है । देश क्यम वर्धानित विद्या में विद्यान परिवर्णन भी महस्य स्थानित विद्या भी वर्धीहन होने है । देश का पर्य वर्धानित विद्या में वर्धीहन होने है । देश का पर्य वर्धानित विद्या में वर्धीहन होने है । देश का पर्य वर्धानित विद्या में वर्धीहन होने है । देश का पर्य वर्धानित विद्या में वर्धीहन होने है । देश का पर्य वर्धीहन होने होने हम हम वर्धीहन होने हम हम वर्धीहन होने हम हम वर्धीहन हम		
१३. रप-परिवर्तन या भाषा के प्रवर-समूह में परिवर्तन निन प्रकार होता है भीर उस परिवर्तन के पुन्त कारण नया माने जाते हैं ? १४. वीव्य-निवर्षों ना परिवर्ष विजिए । १४. पर्य-परिवर्तन ने दिसाक्षों के साधार ना उन्नेस कीजिए । १५. पर्य-परिवर्तन ने दिसाक्षों के साधार ना उन्नेस कीजिए । १५. पर्य-परिवर्तन ने दिसाक्षों के साधार ना उन्नेस कीजिए । १५. पर्य-पर्य में परिवर्ग होने के पुन्त नारण नया है ? उत्पुक्त उत्पारण देनर घरने उत्तर नो पुन्ति कीजिए । १५. पर्य-पर्य उत्तर नो पुन्ति ने विजय देकर यह नताईये था तिर्वर्श धर्मन समूह से अमकी नुतना में नवान्त्रम परिवर्गन हुए है ? १६. धर्मनिवर्गा इस अमकी नुतना में नवान्त्रम परिवर्गन हुए है ? १६. धर्मनिवर्गा इस अमकी नुतना में नवान्त्रम परिवर्गन हुए है ? १६. धर्मनिवर्गा इस विजय नया नवान्त्रम ना निवर्ग । १८. धर्मनिवर्गा इस वर्गा हरण निवर्गन ना नो नो ने है ? यह व्यन्तात्र हुए धर्मनिवर्ग ना पर्या निवर्गन ना निवर्ग । १८. धर्मनिवर्गा ना वर्गा हरण वर्गनिवर्ग । १८. धर्मनिवर्गन के रप (द्यार्ग) परिवर्गन ने नो नो प्रार्थन ना निवर्गन ने स्था में वर्गनिवर्ग । १८. धर्मनिवर्गन ने दसा में वर्गनिवर्गन (Gnm') है । १८. धर्मनिवर्गन की दसा में वरिवर्गन ने निवर्गन भी उर्गा प्रवर्गन स्थान का निवर्गन निवर्गन भी उर्गा प्रवर्गन का निवर्गन निवर्गन ने एक प्रवर्गनिवर्गन भी उर्गा प्रवर्गन का निवर्गन निवर्गन ने एक प्रवर्गन का निवर्गन का निवर्गन निवर्गन निवर्गन निवर्गन ने एक प्रवर्गन का निवर्गन निव		ХX
होना है भोर उस परिस्तंत के मुख्य कारण तथा माने जाते हैं ? १४. मीदिक-नियमों ना परिचय वीजिए। १४. भारे-विस्तंत ने निर्मासों के माभार ना उन्लेख कीजिए। १५. पराराधं से परिवर्णने होने के मुख्य कारण नया है ? उत्पुक्त अ उत्पारण परिवर्णने होने के मुख्य कारण नया है ? उत्पुक्त अ उत्पारण परेन प्रवर्णने नमुद्र ना वर्णीहन परिषय देकर यह बनाईये अ कि हिस्सी ध्वनि-समूद्र ना वर्णीहन परिषय देकर यह बनाईये अ कि हिस्सी ध्वनि-समूद्र ना वर्णीहन परिषय देकर यह बनाईये अ क्षित्र अविन-समूद्र ने उत्पर्धन निर्माण निर्माण निर्माण निर्माण क्षित्र अविन-सम्बद्ध ने निर्माण क्षित्र मानि ना वर्णी हरण वर्णित्र । १६. ध्वनि-सर्विष्ट ने के स्थ (दसाई) सीर नारणों को मोसहरण विवेषमा भीजिए। प्रवात अपन-सम्बद्ध के स्थ (दसाई) सीर नारणों को मोसहरण विवेषमा भीजिए। एक ध्वनि नियम क्या है ? दिस हन प्यनि-नियम (Gnm's दिस्क) को मामद्व कार्य कि हिस्स हन प्यनि-नियम भी उपी प्रकार स्थाल कार्य कि हिस्स हन प्यनि-नियम भी उपी प्रकार स्थाल कार्य के किस नियम भी स्थाल स्थाल कार्य क्षित स्थाल कार्य कि हम ने प्यन्ति कार्य कार कार्य कार्	में विभिन्न मेतो पर प्रकास हालिए।	
हंश. वीदिक-नियमों वा परिचय दीतिए। इ. पर्य-परिवर्तन वी दिशाओं के माधार वा उन्नेस कीतिए। इ. पर्य-परिवर्तन वी दिशाओं के माधार वा उन्नेस कीतिए। इ. पर्य-परिवर्तन वी दिशाओं के मुख्य कारण बया है? वयपुक्त अहरण रूप प्रयोग अहर विश्व होंगे के मुख्य कारण बया है? वयपुक्त अहरण देश प्रयोग अहर वा वर्ग हिन परिचय देकर यह बनाई वे कि दिस्ती ध्वतियों के विवर्धन वर्ग परिवर्तन हुए हैं? पर्यवा दिल्यी ध्वतियों के विवर्ध पर एक केस निवर्ध । इ. ध्वति-यों इरण है मुख्य निद्यान वया माने जाने हैं? यह व्यवक्ति हुए ध्वतियों का वर्धी रहा व्यव्या ध्वति हुए ध्वतियों का वर्धी रहा व्यव्या ध्वति क्षण-न्यायव की द्या में परिवर्तन होते हैं। इस वयन वी पर्या की भीतिए। प्रया ध्वति क्षण-न्यायव की द्या में परिवर्तन होते हैं। इस वयन वी पर्य कीतिए। इ. ध्वति नियम क्या है? दिस हुन ध्वति-त्रियन (Gnm') दि. क्षण होते विवर्ध क्या विवर्धन की उर्धा में परिवर्धन की उर्धा महस्त विवर्धन की उर्धा में किए नियम की दिस्त । वया ध्वति-त्रियन भी उर्धा महस्त विवर्धन की स्वर्धन विवर्धन नियम होता हो कि परिवर्धन होता हो हिस्त होता विवर्धन की स्वर्धन होता हो हो हम की स्वर्धन होता हो हम की स्वर्धन होता हो हम की स्वर्धन विवर्धन की हम की हम की स्वर्धन की स्वर्धन होता हम की स्वर्धन की हम हम स्वर्धन हम हम हम्म हम्म हम	१३. रूप-परिवर्तन या भाषा के शब्द-समूह में परिवर्तन किस प्रकार	٤0
१४. प्रवे-शिवसंत की दिशाओं के साधार का उम्मेस कीजिए। ६ वरमुक उराहरण भी दीजिए। १६. पराधा में परिस्तरित होते के मुख्य कारण क्या है ? वस्तुक उराहरण देवर घपने वस्तर ने शिट कीजिए। १७ तरहर घपने वस्तर ने शिट कीजिए। १७ तरहर घपने महत्व का वर्षीहर वरिषय देवर यह वसाईये उर्क हिस्सी ध्वनित्तमूर से उसकी तुलता में बसान्य परिवर्गत हुए है ? प्रधानित्याहित्य के जिल्ला कि कितियों। १८. ध्वनित्याहित्य के पर्या निव्याप्त माने जाने है ? यह वस्तानित्र हुए है श्वनित्याहित्य के पर्या निव्याप्त मोति हुए भीतिया वस्तानित्य। १८. ध्वनित्याहित्य के पर्या क्यांतिए। १८. ध्वनित्याहित्य के पर्या प्रधानित्य हित्य के निव्या में विवर्गत ने शीतिए। १८ तित्र प्रधानित्या की दिशा में विवर्गत होतिए। १८ तित्र प्रधानित्या की दिशा में विवर्गत होतिए। १८ तित्र प्रधान निवस होति हो। १८ तित्र वस्त्र की सम्त विवर्गत होतिए। १९ तित्र प्रधानित की कितिया निवस में १९ दिस स्तर्भतित्य भी उसी प्रधान स्तितित्यों की विवर्गत स्तित्य स्तित्व स्तित्व स्तिति होति हो। १९ तित्र प्रधानित की कितिया निवस स्तितित्य भी उसी प्रधान स्तितित्यों की विवर्गत की स्तित्य स्तित्य स्तित्य स्तितित्य स्तित्व स्तित्य की स्तित्य स्तित्व स्तित्व स्तित्व स्तित्य स्तित्य स्तित्व स्तित्य स्तित्व स्तित्य स्त		
वरामुता वराहरण भी दीविष् । १८ राराध मे परिवर्तन होने के मुरा बारण बया है ? वरामुक्त वराहण देनर पत्र ने जान की पुरिट की निष् । १७ गरइन पत्र ने जान की पुरिट की निष् । १७ गरइन प्रति-मामूह वा वर्गीहन परिचय देकर यह बनाइये व कि हिस्सी प्रति-मामूह से वमकी नृतना मे बना-वा परिवर्तन हुए है ? प्राप्त कि हिस्सी प्रति-मामूह से वमकी नृतना मे बना-वा परिवर्तन हुए है ? प्रति-वर्गीवर्द्धन के निष्ठा निज्ञान बसा माने जाने है ? यह व्यवनाई हुए प्रति-माम्बिक्त के लग्न (द्वार्गि) मोर बारणी भी मोराहरण विवष्ण भी निष् । प्रति प्रयम्न-माम्ब की द्वार्गी भी प्रदान होनी है। इस वमन को स्पर्द भी निष् । एका प्रयम्न-माम्ब की द्वार्गी में परिवर्तन होनी है। इस वमन को स्पर्द की निष्म क्या है ? विम्न हन प्रवित-निप्तम (Gnm's E.s.) को निष्य मुक्त स्वार की हिए। वस प्रवित-निप्तम भी उसी प्रतार प्रवार है जैसे माम्ब कार्गिश की हिए। वस प्रवित-निप्तम भी उसी प्रवार प्रवार है जैसे माम्ब कार्गिश की निष्य निप्तम निप्त में प्रवार की उसी प्रवार प्रवार है जिस हन प्रवार पर दृष्टि द्वार पर वित्तन प्रवार है उसी माम्ब कार्गिश की कि विवस की माम्ब माम्बिन निप्तम में पर वृत्य प्रवार विवस है हिस्स हम प्रवार पर वृत्य द्वार विवस हम हम प्रवार पर वृत्य हम विवस हम स्वार विवस हम स्वार विवस हम स्वार विवस हम हम प्रवार विवस हम हम प्रवार विवस हम हम प्रवार विवस हम हम स्वार विवस हम हम स्वार विवस हम हम प्रवार हम हम स्वार विवस हम स्वार विवस हम स्वार विवस हम स्वार विवस हम स्वार विवस हम हम स्वार विवस हम हम स्वार विवस हम स्वार विवस हम हम स्वार विवस हम स्वार विवस हम स्वार विवस हम हम स्वार विवस हम स्वार हम स्वर विवस हम स्वार विवस हम स्वार हम स्वार विवस हम स्वार हम स्वार विवस हम स्वार हम हम स्वार हम स्वार हम स्वार हम स्वार हम हम स्वार हम स्वार हम हम स्वार हम हम स्वार हम स्वार हम हम स्वार हम स्वार हम स्वार हम हम स्वार हम हम हम स्वार हम हम हम हम हम स्वार हम हम हम हम	१४. बौदिक-नियमी मा परिचय दीजिए।	६४
दे स्तरार्थ में परिवर्णन होने के मुख्य कारण बया है ? बवयुका जिसारण देनर प्रवत्ने कवत्त को पूर्वट को निज्य ।		ξĸ
उदाहरण देवर घपने उत्तर वो पूरिट वो निया । र कारत घटन प्रतिन्मपूर का वर्गीतन परिषय देवर यह बनाइये कि हिर्मी ध्वनित्वमूर से उमारी नृतना में बना-वा परिवर्गत हुए हैं ? प्रथम हिर्मी ध्वनियों के विकास वुन एक नेगा निर्मा ने निर्मे हैं ? यह व्यवनाते हुए ध्वनियों का विकास वुन निया माने जाने हैं ? यह व्यवनाते हुए ध्वनियों का वर्गीत हुए वोगित हुए ध्वनियों का वर्गीत हुए वोगित हुए ध्वनियों का वर्गीत हुए वोगित हुए ध्वनियों का वर्गीत हुए व्यवनाते हुए ध्वनियों का वर्गीत हुए व्यवनाते हुए ध्वनियों का वर्गीत हुए व्यवनाते विवर्गन विवर्गन के प्रथम-नायव को द्वाम विद्या में वर्गित होने हैं। दूर क्या विवर्गन विवर्गन को स्था में वर्गित होने हैं। दूर क्या विवर्गन को स्था स्थानिय है। दिस इन प्रवनित्वम्य (Gram's Elaw) को मध्यक् मधील होने हिम्म स्थानिय क्या ध्वनित्वम्य भी उर्गी प्रवार प्रथमित को स्थानिय होना होने हम्म स्थानिय पर हृष्टि हान्ने है। दूर स्थानित को स्थानिय होन्य हम्म प्रथम प्रवित्वम्यों का ध्विष्ठ क्या हम्म व्यवन्तित्वम्यों का ध्विष्ठ क्या हम्म व्यवन्तित्वम्यों का धिष्ठवन क्या हम्म व्यवन्तित्वम्यों का धिष्ठवन क्या हम्म	चपमुक्त उदाहरण भी दीजिए।	
हैं। सहन प्यान-समूह से वर्शीहन परिषय देवर यह बनाईवे । हि हिन्दी प्यान-समूह से वसकी तुलता से बनान्या परिवर्तन हुए हैं ? प्रदेश हिन्दी प्यान-समूह से वसकी तुलता से बनान्या परिवर्तन हुए हैं ? प्रदेश हिन्दी प्यान-सम्बद्ध को स्वाद निवरात क्या माने जाते हैं ? यह व्यान-स्वाद हुए प्रतिन्या का वर्शी हरण वीतिए। प्रदेश प्रतिन्यान के स्वाद (द्वार्य) मीर हारणों को मोशहरण विवेषना भीतिए। प्यान प्रयन-सम्बद्ध को द्या में परिवर्तन होती है। इस वस्त को स्वाद अधितए। एक प्रतिन्यान की द्या में परिवर्तन होती है। इस वस्त को उसी स्वाद अधितए। एक प्रतिनिवस क्या है ? दिस इन प्यतिन्यत भी उसी प्रदार प्रदार है जैसे साम विवार क्या प्यान-तिम्यत भी उसी प्रदार प्रवाद है उसे साम विवार तथा है ? एक प्रामित की साम विवार विवार साम रि	१८ स्टार्थं मे परिवर्तन होने के मुख्य कारण बवा है ? स्पयुक्त	७३
हि हिस्से ध्वति-समूह से समकी नुजना में बया-या परिवर्गन हुए है ? सम्बा हिस्से ध्वतियों के विवास पर एक नेम निर्मित । १८- ध्वति-वर्शावरण वे मुद्य निद्यान बया माने जाने है ? यह व बनताते हुए ध्वतियों का वर्शी हरण वर्शित । १८- ध्वति-वर्शिक्ष ने के रण (द्यार्ग) घीर बारजी को मोशहरण विवेषता भीतिए। सम्बा ध्वति प्रमन्तनात्म को द्या में वरिवर्शित होनी है। इस बमन बो व्यव्य कीतिए। स्वति प्रमन्त्रमध्य को द्या में वरिवर्शित होनी है। इस बमन बो व्यव्य कीतिए। २०- ध्वति नियम क्या है ? दिम इन ध्वति-नियम (Gnm's Law) को मध्यक्ष मधीशा के तिए। वया ध्वति-नियम भी उसी प्रशास प्रमास है उसे सम्ब बेशित विवास ने प्रमास है है हिस्स हैन प्रमास पर दृष्टि हान्ते । १ - ११- प्रमानित कीर कोर्य वे दिस्स नियम ए	उदाहरण देनर ६पने उत्तर वी पृष्टिः वीजिए ।	
हिन्दी ध्वतियों के विवास पर एक नेगर निर्मित । १०. ध्वति-योर्डियण के मुद्रत मिद्रान वया माने जाने है ? यह व्यत्नाते हुए ध्वतियों का वर्षीक रण योगित । १६. ध्वति-योर्डियण के मुद्रत मिद्रान वया माने जाने है ? यह व्यत्नाते हुए ध्वतियों का वर्षीक रण योगित । ध्वति प्रयत्न-नापव की दशा मे वरिवर्डित होती है। देश क्यत की स्पद्र की विवर्ध । २०. ध्वति त्रियम क्या है ? दिस इन ध्वति-तियम (Grim's E.Law) की मध्यक् ग्रेभीश की विवर्ध । २०. ध्वति त्रियम क्या है ? दिस इन ध्वति-तियम (Grim's E.Law) की मध्यक् ग्रेभीश की विवर्ध ने स्वति-तियम भी ज्या प्रवार प्रयान की वर्षी प्रवार प्रवार की त्रियम ने दिस मिद्रत मिद्रान प्रवार की त्रियम व्यवित्तियम मे स्वति हो स्वत्ति विवर्ध ने स्वतिन्तियम प्रवार की व्यवित्तियम वर्षीतियम ने स्वतिन्तियम में का विवर्ध की की स्वतिन्तियम की वर्षीतियम की स्वतिन्तियम स्वति	१७ सरहत ध्वनि-समूह का वर्गीहत परिचय देकर यह बनाइये	७५
हिन्दी ध्वतियों के विवास पर एक लेख निर्मित । १८. ध्वति-वर्गांदिय में मुख्य नियान क्या माने जाते है ? यह व्यत्नाते हुए ध्वति-वर्गांदिय में मुख्य नियान क्या माने जाते है ? यह व्यत्नाते हुए ध्वति-वर्गांदिय में किए प्रिति हुए ध्वति नियान के स्था (द्वार्ण) धीर वारणों में मोशहन्य विवेचन भीतिए । १८. ध्वति त्रमण-न्यान की द्या में परिवर्गति होती है। 'इस वस्य में स्थर की निष्य क्या है ? दिस इन ध्वति-त्रमय (Gnm's E.w) की सम्यन् स्था शि हिन्दा क्या ध्वति-त्रमय भी ज्या प्रवार ध्वति है । 'इस वस्य ध्वति-त्रमय भी ज्या प्रवार प्रवार है जैसे मान की स्थान त्या है । दिस इन ध्वति-त्रमय भी ज्या प्रवार प्रवार है जैसे मान के से हैं हिम-त्रमय मानेपन पर दृष्टि हालने १० हिम्म प्रवार प्रवित्तिम्यों का विवेचन की स्थित होतिए।	कि हिन्दी ध्वति-समूर् से उसकी नुलना में बया-क्या पश्वितन हुए हैं ?	
१६. घ्यति-वर्धां रण वे मुख्य विद्यान्त वया माने जाने है? यह व यननाते हुए पर्शन्ती का वर्धा रण वर्धान्छ । १६. घ्यति-वरिवर्धन के रण (द्याग्ष्ये) घीर वारणी को मोसहरण विवेचना भीतिए। प्रयान ध्यति प्रयम्न-सम्पन्न को द्या में वरिवर्धनित होनी है। इस वयन वो स्पट्य कीतिए। २०. ध्यति नियम क्या है? विम् इन घ्यति-नियम (Gnm's र) को सम्बन्धन स्थान है? विम् इन घ्यति-नियम पी जमी प्रशार ध्यार्व है जैसे सम्ब बेसारित नियम ? २१. घामित घोर कर विद्यान सम्बन्धन पर दृष्टि दाप्तने १०	भ्रम्बा	
यनताते हुए श्वतियों का वर्शीक्षण वर्शीवतः । ११. श्वीत्योश्यित के रूप (द्यार्ग) सीर कारणां भी मीशहरण विवेचना भीतितः । प्रयद्या ध्वति प्रयन्न-सायव भी द्या से यरिवर्शित होती है। देग जयन वो स्पट भीतितः । २०. श्वीत नियस क्या है ? दिस इन प्यति-तियस (Grim's है Low) वो सम्बन्ध स्थाप (दिस् । वया श्वति-तियस भी ज्या प्रवार स्पाह्य है जैन सन्य बैसानित नियस ? २१. सम्पति कोई करने दे दिस-नियस सारोधन पर दृष्टि हान्ने है। दुष्टाय प्यति-तियसो ना श्वित्य क्षीतितः	हिन्दी ध्वतियो के विवास पर एक लेख लिखिये।	
१६. ध्वित-परिवर्तन के रण (द्यार्ग) घोर रारणों नो मोशहरण विषेत्रता भीतिए। घरवा 'ध्वित प्रधन-लायन को द्या में यदिवित होनी है। इस नयन को रपट कीवित । २०. ध्वित प्रधन-लायन को द्या में यदिवित होनी है। इस नयन को रपट कीवित । २०. ध्वित तियम वसा है ? दिम इन ध्वित-तियम (Gnm's ELw) को सम्बन्ध स्थापित कीवित । वसा ध्वित-तियम भी उसी प्रशास ध्वाप्त है जैसे याच बीतानिक विषय है वित्य प्रधानिक हो हम हमें १० एक प्रधनितियम पर दृष्टि सामने १० एक प्रधनितियमों को ध्वित कीवित को स्थित हमार्थित पर दृष्टि सामने १० एक प्रधनितियमों को ध्वित कीवित को स्थित हमार्थित ।	१८. ध्यति-याशिक्षण के मुख्य सिद्धान्त क्या माने जाने हैं ? यह	5 2
विवेचना भीतिए। समझा भवति प्रमन्तनाम्यव भी दशा मे परिवर्तन होनी है। 'हम वसन भी स्पाट भीतिए। २०, ध्वति तियम वसा है? दिम इन ध्वति-तियम (Gnm's ह Law) वो सम्बन्ध स्थातीश कीतिए। वसा ध्वति-तियम भी उसी प्रवार स्वार्य है उसे सम्बन्ध स्थातिक नियम ? ११, ध्वमतिक साम वेचेर वे दिस-तियम सारोपन पर दृष्टि हालने १० हुए सम्बन्ध को दिवेचन कोतिए।		
विवेचना भीतिए। समझा भवति प्रमन्तनाम्यव भी दशा मे परिवर्तन होनी है। 'हम वसन भी स्पाट भीतिए। २०, ध्वति तियम वसा है? दिम इन ध्वति-तियम (Gnm's ह Law) वो सम्बन्ध स्थातीश कीतिए। वसा ध्वति-तियम भी उसी प्रवार स्वार्य है उसे सम्बन्ध स्थातिक नियम ? ११, ध्वमतिक साम वेचेर वे दिस-तियम सारोपन पर दृष्टि हालने १० हुए सम्बन्ध को दिवेचन कोतिए।	१६. ध्वति-प्रस्थितंन के रूप (दशाएँ) ग्रीर कारणी की सीशहरण	33
को स्पट की बिए। २० ध्यति नियम क्या है? विस कृत ध्वति-नियम (Grim') है. [.au) को गम्य गर्भागा की तिए। बया ध्वति-नियम भी उनी प्रकार ध्वाद्य है जैने प्रस्य बैसानिक नियम ? २१. शामीन धीर करेंद्र के विस-नियम गरोधन पर दृष्टि शामी के दिस्मानियम गरोधन पर दृष्टि शामी के दिस्मानियम गरोधन पर दृष्टि शामी के		
२०. ध्वति नियम वया है ? विम इत ध्वतिनियम (Gnm's E Law) वो गम्बन् समीधा की विद्या वया ध्वतिनियम भी उसी प्रवार धनाय है उसे याय बेसानिक वियम ? ११. समर्थन घोर वर्षन दे विमानियम महोपन पर दृष्टि सम्बने १० द्रियम ध्वतिनियमो का विदेषन को लिए।	'ध्वति प्रयन्त-लापव की दशा मे परिवर्तित होती है।' इस कथन	
Law) को गम्बन् साथीश के बिए। वया व्यक्तिनियम भी उसी प्रशार स्वराष्ट्र है उसे मान्य बेमानिक नियम ? १६: मार्गन भीर करें के विमानियम गरीयन पर वृष्टि शांकी है। ट्रियम व्यक्तिनियमी का विशेषन कोलिए।	को स्पष्ट कीकिए ।	
सनाह्य है जैसे सन्य बैतातिन तियस ? परे प्राप्तति घोर वर्तर वे प्रिस-नियम गरीयन पर दृष्टि डाश्ते १० हुए सम्य प्वति-नियमो ना विदेवन वीलिए।	२०. ध्वनि नियम वया है ? विम इन ध्वनि-नियम (Grim's	33
सनाह्य है जैसे सन्य बैतातिन तियस ? परे प्राप्तति घोर वर्तर वे प्रिस-नियम गरीयन पर दृष्टि डाश्ते १० हुए सम्य प्वति-नियमो ना विदेवन वीलिए।	Law) की सम्दर्भ सभीक्षा के जिए। बया ध्वति-तियम भी उगी प्रकार	
हुए प्रत्य प्रवित-नियमो का विशेषन की जिए।	घराट्य है जैसे बन्य बैजानिक नियम ?	
		105
२२ भारोबीय-परिवार की विलेपनाको क्षीर बहुन्त पर प्रकार कर	्र सन्य प्रवित्तियमो का विदेशक कीजिए।	
	२२ भारोपीय-परिवार की विदेवनाओं और महत्त्व पर प्रकास	111
शानते हुए उसके विभाजन का भी परिषय दीजिए।	शानते हुए उसके विभाजन का भी परिषय शीवए।	-

प्रदेश

१. मापा-विद्यात की परिभाषा दीक्षिए । बर्काता है चयश विद्यात ?

२. भाषा-विज्ञान घीर बरासरन के सम्बन्ध की सम्बक्त मीमांना मीजिए। भाषा-विज्ञान से स्वाचारा धीर साहित्य के ध्रम्ययन घीर धान्यापन में बर्ख तक महायता मिलती है, स्वयंद्र बीजिए ।

इ. भाषा-विज्ञान के प्रमुख धरों का परिवय दीविए तथा उनकी अपयोगिया का विवेधन की जिए।

४. विद्व बीजिए, भाषा-विज्ञान की परम्परा बहुत प्राचीन बाज से प्रविच्छित्व पत्री मानी है।

थ. भाषुतिक भाषा विज्ञान के अगरस्मिक श्राहास का दिग्दर्शन

कराइये । ६. मापा की उत्पत्ति के विषय में विभिन्त प्रचलित मतो का

उन्तेस करो हए, कारण सहिन ब्याप्या कीजिए कि कौत-मा मत யிய்க் சக்கரச் சி

७. 'एक भाषा-विज्ञानी के लिए साहिषिक भाषा की अपेशा शोलियां मधिक महत्वपूर्ण हैं ।' भालीचना करते हर योली, जिमापा, भाषा भौर राष्ट्रभाषा का मन्तर स्पष्ट कीजिये।

द भाषा परिवर्तनशील क्यो कही जाती है। परिवर्तन के मुख्य-मुख्य कारणो की विवेचना उदाहरण राहित की जिए।

यववा भाषा के बाह्य तथा भाग्यन्तर रूप में विकास भीर परिवर्तन के

षारणों पर प्रकाश डालिए। E. दो भाषामों के परस्पर सम्बन्ध को निर्धारण करने के प्रमन

सत्वों का उत्लेख करते हुए भाषा-विभाजन की पद्धतियो ।ऽ ग्रण-दोषों

का विवेचन कीजिए।

<u>-३</u>१६ - साहिस

१०. मापा ना बाहतिमूनक या सन्द-त्वना की दृष्टि से वर्गीकरण १ भी जिए। उस वर्गीकरण की उपयोगिता पर मी भनारा शनिए

११. मायाधी का पारिवारिक वर्गीकरण किन सिद्धान्तों के प्रापार ४०

पर किया जाता है। प्रत्येक वर्ग का सक्षिप्त परिचय दीजिए।

पर किया जाता है। प्रत्यक यंग का सीशान्त परिचयं शीजिए। १२. भारोपीय (ब्रायं) सनुष्यों के मूल निवास स्थान के सम्बन्ध ४४

ररः भारापाय (भाय) भनुष्या क भूल गणवास स्थान क सन्वन्य मे विभिन्न मनो पर प्रकाश डालिए।

٤0

£¥

€ =

ડ રે

35

3 3

११ रप-परिवर्तन या भाषा के सब्द-समृह मे परिप्रतंत किम प्रकार होता है भीर उस परिवर्तन के मुख्य कारण क्या माने जाते हैं ?

हाता है भार उस पारदेशन के मुख्य कारण गया मान ज १४. बौद्धिक-नियमों ना परिचय दीजिए ।

र के बादक-नियमा वा पारचय दातिए। १५ मर्थपरिदर्तन की दिशामा के सामार का उन्लेख की जिए।

उपयुक्त उदाहरण भी दीजिए।

रेर धटरार्थ में परिवर्तन होने के मुख्य कारण बबा हैं ? उपमुक्त उदाहरण देवर अवने उत्तर की पूष्टि, की जिए।

उदाहरण देवर ६पने उत्तर को पुष्टि, कीजिए। १७ सम्झन ध्वति-समुद्र का वर्तीझन परिचय देवर यह बनाइये

रिश्व सम्हत स्वात-समूह वर्षा बनीहत परिचय देवर यह बनाईय कि हिन्दी स्वति-समझ में उसकी तुलना में बया-बया परिवर्तन हुए हैं ?

ध्यवा हिन्दी ध्वनियो के विकास पर एक लेख निविदे ।

१८ ध्यति-वर्गीकरण वे मुख्य निद्धान्त वशा माने जात है? यह द३ यतलाते हम ध्यादमी का वर्गीकरण यो हम ।

थनभात हुन् ध्व दया का बगाहरण बाग्हर्ग । १६ ध्वनि-तरिबर्तन के रूप (दवाएँ) ग्रीर कारणा भी सोदाहरण ८६ विवेचना कीजिए । छच्छा

'प्वति प्रयन्त-सामव की दशा से पश्चितित होती है। इस क्यन

को स्पट्ट की जिल् । २० ध्यति नियम क्या है ? दिस कृत ध्यति-नियम (Grim's

Law) की सम्पन् सभीका की हिए । क्या क्विति-तियम भी उसी प्रकार प्रकार्य है जैसे प्रस्य केतानिक तियम ? परे, समर्थन सीर करेर के दिस-नियम सरोधन पर दुष्टि कालने १०

रिहै. प्रागरित भीर वर्तर के द्विम-नियम नशोधन पर दृष्टि दालते १०० हुए भ्रम्य प्वति-नियमो का विदेशक बोलिए।

२१. भागेपीय-परिवार की विशेषणाओं कीर कहन्त्र पर प्रशास १११ वालते हुए उत्तरे विभावन का भी परिवार दीवित ।

प्रकृत

१. मापा-विकास की परिभाषा दीक्षिए । यह क्या है प्रदेश विज्ञात ?

२. भाषा-विज्ञान चीर ब्याबरन के सम्बन्ध की सम्बन्ध मीमीना बीजिए। भाषा-विज्ञान से स्वावारण भीर साहित्य के भारत्यन भीर

सप्यापन में नहीं तक महायता मिनती है, स्थाद की जिए । a. भाषा-विकास के प्रसूप धरो का परिषय दीजिए तथा उनकी

जपदीविता का विवेचन की जिए । ४. विद् कीविद, भाषा-विज्ञान की परम्परा बहुत प्राचीन काल

से ध्रविष्ठित यथी माती है। ४. ब्रायुनिक भाषा विज्ञान के आरम्भिक इतिहास का दिग्दर्शन

कराइये । ६. भाषा की उत्पत्ति के विषय में विभिन्त प्रवन्ति मतो का

जल्लेल करने हुए, बारण सहिन ब्याप्या की जिए कि बीन-मा मन प्रधिक तकसमत है ? ७. 'एक भाषा-विज्ञानी के लिए साहियक भाषा की मदेशा

बोलियाँ मधिक महत्वपूर्ण है। भालोचना करते हर बोली, विभाषा, भावा भीर राष्ट्रमाया का मन्तर स्वयं कीजिये। भाषा परिवर्तनशील क्यों कही जाती है। परिवर्तन के मुस्य-

मुख्य कारणों की विवेधना उदाहरण सहित की निए। च्य व व व

भाषा के बाह्य तथा भाग्यन्तर रूप मे विकास भीर परित्रतंत के बारणों पर प्रकाश डालिए।

हे. दो भाषामों के परस्पर सम्बन्ध को तिर्धारण करने के प्रमुख

तस्यो का उत्सेख करते हुए भाषा-विभाजन की पद्धतियों क गुण-दोचो

का विवेचन कीजिए।

१०. भाषा का भाकृतिमूलक या सन्द-रचना को दृष्टि से वर्गीकृरण ० कीजिए। उस वर्गीकरण की उपयोगिता पर भी प्रकास क्षानिए 🛂 🥒 ११. भाषाची का पारिवारिक वर्गीकरण किन सिद्धान्तों के बाधार *=

पर क्या जाता है। प्रत्येक थर्ग का संक्षिप्त परिचय दीजिए। १२ भारोपीय (प्रार्थ) मनुष्यों के मूल निवास स्थान के सम्बन्ध 48

में विभिन्न मतो पर प्रनाश डालिए। १३ रूप-परिवर्तन या भाषा के शब्द-समूह से परिप्रपंत किस प्रकार ٤0

हीता है भीर उस परिदर्शन के मध्य कारण क्या माने जाने है ? १४. बौद्धिक-नियमी का पश्चिय दीजिए।

€ ₹ १४ मध परिवर्तन की दिलाओं के माधार का उल्लेख की जिए । 55

चपयुक्त उदाहरण भी दीजिए। १६ शब्दार्थ मे परिवर्तन होने के मुख्य कारण बया है ? उपयुक्त

52 उदाहरण देशर ६५ने उत्तर की पुष्टि की जिए।

१७ सरहत ध्वति-समृह का बर्शाङ्क परिश्वय देवर यह बताइये 50 कि हिन्दी ध्वति-समूद्र से उसकी तुलना में बया-बदा पश्वितंत हुए है ?

हिन्दी ध्वनियों के विकास पर एक लेख लिखिये।

१८ ध्वति-वर्धी दरेण के सुरूप सिद्धान्त क्या सान जाते हैं? यह c٩ यतलाते हुए ध्व तया का वर्गी र रण वा' हुए ।

१६ ध्यति-परिवर्तन के रूप (दलाएँ) धौर बारणा तो मोशहरून विवेचना की जिए।

'ध्वति प्रयम्ब-लायव भी दशा से बरिदर्तित होती है।' इस वयन को स्पष्ट की जिए ।

२० ध्वनि नियम बना है ? दिस इन ध्वनि-नियम (Gum's εŧ Jaw) की सम्बक्त समीक्षा के जिल्ला क्या स्वति-नियम की उसी प्रकार धनाह्य है जैसे धन्य बेहानिक नियम ?

२१. हागर्यंत घीर बनर के दिम-निवम गरोधन पर दृष्टि हालने हुए धन्य ध्वति-नियम्। का विदेशन की जिए ।

देरे भागोदीय परिवार की विशेषताको कौर महत्त्व पर प्रकाश बानते हुए उसके किमाबन का भी वरिषय दीविए ।

प्रदन

१. भाषा-विज्ञान की परिभाषा दीनिए । यह कला है प्रयय विज्ञान ?

२. भाषा-विज्ञान और श्याकरण के सम्बन्ध की सम्बक्त मीमांस कीजिए। भाषा-विज्ञान से व्याकरण घीर साहित्य के ब्राध्ययन ग्रीर

धारमापन में कहाँ तक सहायता मिलती है, स्वष्ट कीजिए । ३. भाषा-विज्ञान के प्रमुख संगी का परिचय दीजिए तथा उमकी

अपरोगिता का विवेचन की जिए। ४. विद्व की जिए, भाषा-विज्ञान की परम्परा बहुत प्राचीन काल

मे धविच्छिन्न चली धाती है। प्राधुनिक भाषा विज्ञान के प्रारम्भिक इतिहास का दिग्दर्शन

कराइये। ६. भाषा की उत्पत्ति के विषय में विभिन्न प्रवित्ति मतो का

उल्लेख करने हुए, कारण सर्हित व्याप्या कीजिए कि कौन-सा मत द्यधिक वर्कसगत है ?

७. 'एक भाषा-विज्ञानी के लिए साहित्यिक भाषा की अपेक्षा बोलियां ब्रधिक महत्वपूर्ण है । ब्रालीचना करते हुए बोली, विभाषा, भाषा भौर राष्ट्रभाषा का भारतर स्पष्ट की जिये ।

 भाषा परिवर्तनशीन वयो कही जाती है। परिवर्तन के मुख्य-मृह्य कारणो की विवेचना उदाहरण सहित की जिए ।

ग्राव स्था

भाषा के बाह्य तथा भाग्यन्तर रूप मे विकास भीर परिवर्तन के

कारणों पर प्रकाश डालिए। हे सावामों के परस्पर सम्बन्ध को निर्धारण करने के प्रमुख

तत्वों का उत्लेख करते हुए भाषा-विभागन की पद्धनियों रह गुण-दोषों का विवेचन कीजिए।

१०. भाषा का भाइतिमूनक या शब्द-रचना की दृष्टि से वर्गीकृश्ण ० कीजिए । उस वर्गीकरण की उपयोगिना पर भी भक्ताम डानिए ११. भाषामी का पारिवारिक वर्गीकरण किन सिद्धान्तों के माधार पर किया जाता है। प्रत्येक वर्ग का संक्षिप्त परिचय दीजिए। ٧¥

१२. भारोपीय (बार्य) मनुष्यों के मूल निवास स्थान के सम्बन्ध मे विभिन्न भनो पर प्रकाश दातिए।

११ रप-परिवर्तन या भाषा के शब्द-समृह मे परित्रनंन किम प्रकार ٤٥ होता है भीर उस परिवर्तन के मुख्य कारण क्या माने जाने हैं?

१४. बौद्धिक-नियमो का परिचय दीजिए। £ ¥ १४ इपर्य परिवर्तन की दिलाओं के स्वाधार का उल्लेख की जिल्हा

٤ĸ उपयुक्त उदाहरण भी दीजिए। १६ शब्दार्थमे परिवर्तन होने के मुख्य कारण क्या हैं? उपयुक्त

33 खदाहरण देशर भ्रष्ते उत्तर की पृष्टि की जिए। 👣 सम्बन्ध स्वति-समझ बांबर्गीकृत परिचय देवर यह बताइये 55

कि हिन्दी ध्वति-समय से उसकी तलता में बया-बया परिवर्तन हुए है ?

हिन्दी ध्वतियो के विशास पर एक लेख लिखिये।

१६ ध्यनि यशीं इरण के सरूप सिद्धान्त क्या माने जात है? यह E 3 यतलाते हुए ध्व तयो का वर्गी । रण का जिए ।

१६ ६६नि-परिवर्तन के रूप (दगाएँ) घीर कारणा नी मोदाहरण विवेचना की जिए। क्राचंदा

'ध्वनि प्रयन्त-लाघव की दशा से पश्वितित होती है। इस कथन को स्पष्ट कीजिए।

२० ध्वनि नियम वया है ? विस कृत ध्वनि-नियम (Grim's 33 I.aw) की सम्यक् सभीक्षा के जिए । क्या ध्वति-तियम भी उसी प्रकार धरादय है जैसे धन्य बैज्ञानिक नियम है

२१. ग्राममेन भौर बनेट के विम-नियम गरीयन पर दिए हालते रिए धन्य प्रदेश-नियम्। का विदेशन बीजिए ।

रेरे भारोपीय-परिवार की विदेयशामी भीर महत्त्व पर प्रकाश 111 कालते हुए उसके विभावन का भी परिषय दीविए।

प्रकृत

१. भाषा-विकास की परिभाषा बीबिए । यह कहा है यह स

विज्ञान ?

२. भाषा-विज्ञान घोट क्याकरण के सम्बन्ध की सम्बन्ध मीमाता मीजिए। भागा-विज्ञान में स्वानारण और गाहिए के सम्बदन घीट

ध्यम्यापन में नहीं तक महायता मिलती है, स्पट्ट की निए । इ. भाषा-विज्ञान के प्रमुख बयो का परिषय दीजिए तथा उनकी

उपयोगिया का विवेषन की शिए । ४. विद्य की तिर्, भाषा-विज्ञान की परम्परा बहुत प्राचीन काल

से प्रविच्छित पत्री पात्री है। ५. मापुनिक भाषा विज्ञान के आरम्भिक इतिहास का दिण्डान

कराइये ।

६. भाषा की उत्पत्ति के विषय में विभिन्त प्रचलित मतो का जल्तेस करते हए, बारण महिन ब्यास्या कीजिए कि बौत-मा मन क्रिक तर्रमण्य है ?

७. 'एक भाषा-विज्ञानी के लिए साहित्यक भाषा की यपेशा बोलियां मधिक महत्वपूर्ण हैं।' मालोचना फरते हुए योली, विभाषा, भाषा भौर राष्ट्रभाषा का भन्तर रुपछ मीजिये।

८ भाषा परिवर्तनशील वयो कही जाती है। परिवर्तन के मुख्य-मृह्य कारणो की विवेचना उदाहरण सहित की जिए।

भाषा के बाह्य तथा भाग्यन्तर रूप में विकास भीर परिवर्तन के

कारणो पर प्रकाश डालिए। ह. दो भाषामो के परस्पर सम्बन्ध को निर्धारण करने के प्रमन

सुरवो का उत्लेख करते हुए भाषा-विभाजन की पद्धतियों क गूण-दोषो

का विवेचन कीजिए।

इ.स. हिन्दी त्रिया के बालों में संस्कृत बालों के मौत में रूप १७१

द्मबदोष रह गये हैं ? दोनो ना सम्बन्ध स्थापित कीजिये । प्रयवा हिन्दी त्रियाभो की स्युत्पनि बनादये ।

डालिये।

६६ हिन्दी त्रिया की काल-रचना में बृदन्तों के महत्व का विवेचन	8 3 W
दीजिये ।	
३७. सरवावाचक विशेषणी भी ध्युन्पत्ति स्पष्ट कीजिये ।	१८०
३८. हिन्दी भाषा के बुछ प्रमुख सब्दों की ब्युन्पिन बताइये।	१८४
१६. हिन्दी के उपसर्गों का सक्षिप्त परिचय दीजिय ।	₹ = =
४०. स्दराघात का भेदो सहित विवेचन करने हुए हिन्दी मे	329
उसकी विकसित स्थिति पर प्रकाम हालिए।	
४१ हिन्दी-भाषाचीवैज्ञानिक परिभाषा दीजिये तथा उसके	\$35
साहित्यक रूप पर दृष्टि डालते हुए गडी बोली की उत्पनि मीर	
विशास पर एक सम् लेख निधिये।	
४२ देशियनी भाषा के दिकास धौर साहित्य का परिचय देते हुए	e3\$
खडी योली से उसना सम्बन्ध बताइये ।	
४३. देवनागरी के उद्गम भीर विकास पर एक लेख लिलिए नथा	२०१
उसके गुण धौर दीयों का विवेचन करते हुए कुछ सुधारात्मक सुभाव	
प्रस्तुत कीजिये ।	
परिश्चिप्ट	
प्रस्त	দৃশ্ভ
४४. स्पष्ट चीजिए	7.0
(क) भाषा की परिभाषा, (क्ष) भाषा धर्जित सम्पनि है, (ग)	
भाषा समोगावत्या से वियोगावत्या की सीर जाती है, (प) भाषा-कत्र,	
(इ) भाषा की सामान्य प्रवृत्तियाँ (सकेत रूप में)।	
४३. भाषा दिलान से सन्य दियशो का रुग्वन्य न्यादिन कीरिए।	- 8 -
४६. बावयो के प्रवार थीर वावय-गठन में परिवनन ने बारण	288
वीजिये।	

३५, जिल-फिल प्रावशारी हिन्दी गलायों के मूल स्व (Direct of Nominative Ferm) तथा विद्यु कर (OSique Ferm) योजन तथा उन करों की स्वुचित बरात दिन्दा में जिल्हे ११, हिन्दी तथा संस्कृत तथा की कारत-स्थान के मुग विद्याली

में बया धालर हो गया है ? सर्बपूर्ण उत्तर दीजिए।

३४. हिन्दी सर्वनामों के रूप देकर उनको ब्युन्पनि पर प्रशास	१६६
डालिये ।	
: ५. हिन्दी त्रिया के कालों में सस्कृत कालों के कौन से रूप	808
द्मवदोष रह गये हैं ? दोनो का सम्बन्ध स्थापित की त्रिये ।	
भ्रथवा	
हिन्दी त्रियाधो की व्युत्पनि बताइये ।	
६ हिन्दी किया की काल-रचना में कुदन्तों के महत्व का विवेचन	5 3 3
मीजिये ।	
३७. सन्पादाचक विरोपमो भी व्युत्पत्ति स्पष्ट नीत्रिये ।	8=0
३ क. हिन्दी भाषा के बृष्ट प्रमुख बाब्दों की व्युत्पनि बनाइये ।	१८४
३६, हिन्दी के उपनर्गों का मक्षिप्त परिचय दीजिये।	१ ==
४० स्वराधात का भेदी सहित विवेचन करने हुए हिन्दी मे	3=9
उसकी विकसित स्थिति पर प्रकाश डालिए।	•
¥१. हिन्दी-भाषा की वैज्ञानिक परिभाषा दीजिये तथा उसके	18
साहित्यिक रूप पर देव्टि हालते हुए गडी बोली की उत्पन्ति भीर	
विशास पर एक सब सेस निविधे।	

४२. दिन्यनी भाषा के विकास धीर साहित्य का परिचय देने हुए १६ सक्षी क्षोती से उसका सम्बन्ध बनाइये।

४१. देवनावरी वे उद्गम धौर विवास पर एवं सेल लियिए तथा २ उसके गुण धौर दोयों का विवेषन करने हुए कुछ सुधारात्मक सुम्राव प्रस्तुत कीरिये।

परिशिष्ट

443	4.4
४४. स्पष्ट की विष्-	
(व) मापा की परिभाषा, (ख) भाषा भजित सम्पत्ति है, (ग)	
भाषा नयीगावन्या से वियोगावस्था भी स्रोर जाती है, (च) भाषान्यत्र,	

(इ) भाषा की शासान्य प्रकृतियाँ (सकेत कर से) । ४१. भाषा विज्ञान से सन्य विषयों का सम्बन्ध स्थापित कीजिए। परेक

४६. बाबयों के प्रकार घोर बावय-गटन में परिवर्गन के बारण २१४.

Y७. स्पष्ट कीजिये—

(क) ध्यनियन्त्र, (स) भाषण-ध्वनि भीर ध्वनिमात्र का सन्

(ग) निलक (Click) ध्यनियाँ, (ध) संरेत यह । ४८. व्यति-नियमी के विरद्ध साद्द्य का नया ग्रर्थ है ? उसा

प्रमाव भौर विस्तार की उदाहरण सहित व्याख्या की जिए। ¥8. युरोप में सस्रत को स्रोज ने तुलनात्मक भाषा-विज्ञान व

नीव डाली। समीक्षा की जिए।

५०. मूल भारोपीय भाषामी भीर संस्कृत में भपश्रुति (Vow gradation) की स्थिति पर तर्क उपस्थित की जिए।

भपश्रुति या स्वरकम (Ablaut) पर मस्कृत का सन्दर्भ देते हु एक सेस लिखिये । नया पाणिनि की गुण-वृद्धि और सम्प्रसारण भाषा

वेतामों की दिष्ट से उचित है ? ५१. परिचयात्मक टिप्पणियाँ लिखिये---

बान्ट भाषा, द्रविड भाषा, मुँडा भाषाएँ, स्लाव भाषाएँ, पैशाची भ्रवभ्रश, सहँदा, बिहारी भाषा, मध्य-पहाडी, उच्च हिन्दी, रेस्ता, सर विलियम जोन्स, यॉकीव प्रिम, फान्त्स वॉप, रुडल्फ रॉथ, फेंड्रिस

मैक्समूलर, जार्ज प्रवाहम विवसंत, डा॰ सुनीतिकुमार चैटर्जी, शौरसेनी शतम तथा केन्द्रम् समुदाय, हरियानी, छत्तीसगढी, उदू, दनिखनी, हिन्दी, हिन्दबी, हिन्दुस्तानी, बज, भवधी, खड़ी बोली, यास्क, पाणिनि, कात्यायन ।

५२. हिन्दी के राष्ट्र-भाषा, राजभाषा, साहित्यिक भाषा तथा

मातु-भाषा के पहलुमी पर एक सक्षित्त तुलनात्मक टिप्पणी लिलिये। ४३. टिपणी निसिए--

श्रामिश्रुति स्फुटवावय (Articulate speech), मूर्डन्यीकरण (cerebralisation), ब्युत्पत्ति-शास्त्र के नियम, भाषा पर भाषारित प्रागैतिहामिक लोज (Linguistic-Palaentology), वेदो में प्राइत-तत्व, प्रादिम भारोपीय भाषा के स्वर, चित्र-लिपि, ब्राह्मी लिनि, प्रत्यय,

विभक्ति, नाद, स्वांस, तालब्य-नियम, भय-विज्ञान, उच्चारण-भवयव, ध्वनि-ग्राम, स्वर-भन्ति तथा ग्रागम ।

٣٠,,

प्रदार—भाषा-विज्ञानको परिमाधा दीजिए। यह कला है ध्रयवा विज्ञान?

भाषा-विज्ञान

भागा-विज्ञान हो गरंगे में निमित है — माण घोर विज्ञान । भागा समुख्य कर वरस्य (स्वार-विविध्य सा सामन है । मानव धरने किनियम स्वित-वर्ग का मंगोन कर उनने कहे प्रकार को ध्वनियों का उचन रण कर उनने के द्वारा समें प्रवास के ध्वनियों का उचन रण कर उनने के द्वारा समें मांवों तथा विचारों का प्रकार कर के होता है। यह विचार-विवाय धीर माय-प्रमामन प्रायः ध्वन्यासम्क रूप में होता है। विज्ञान का ध्वन्य सार्थाय का प्रमाम करता है। साथ ना वार्य किन्नी वर्तु का सम्भन्न ररीक्षण करता, विद्वान निर्धारित करना तथा कारणों का पूर्ण तथाधान करता है। भाषा का वैद्यान निर्धारित करना तथा कारणों का पूर्ण तथाधान करता है। भाषा का वैद्यान करता है। साथ-प्रकार या माया-प्रवान या माया-प्रवान या माया-प्रवान करता है। साथ सम्भाग जातियां या माया-प्रवान होते हो, विज्ञान या माया-प्रवान उत्त स्वान करता है। हो, विज्ञान या माया-प्रवान उत्त स्वान सम्भाग कर साथ-प्रवान उत्त की माया-स्वान उत्त की माया का माया-प्रवान उत्त है। यह एक धीर प्रायनिहासित काल मी माया का माया-प्रवान करता है। यह एक धीर प्रायनिहासित काल मी साथ कर साध्यन करता है। इस एक धीर प्रायनिहासित काल मी साथ कर साध्यन करता है। इस एक धीर प्रायनिहासित काल माया के साथ करता करता है। यह एक धीर प्रायनिहासित काल मी साथ कर साध्यन करता है। स्वत्व करता है। वह एक धीर प्रायनिहासित काल माया करता काल करता है। स्वत्व विवास साध्यन करता है। स्वत्व विवास साध्यन करता है। स्वत्व विवास साध्यन विवास साध्यन करता है। वह एक धीर प्रायनिहासित काल माया करता काल करता है। स्वत्व विवास साध्यन करता है। स्वत्व विवास साध्यन विवास साध्यन विवास साध्यन विवास साध्यन विवास साध्यन करता है। स्वत्व विवास साध्यन विवास साध्य साध्य साध्य साध

करता है। भाषा-विज्ञान का श्रम्ययन करने की प्राय, सीन प्रणालिया पाई जाती हैं—

- १. यर्गनात्मक या विदरणात्मक प्रणाली ।
 - २. ऐतिहासिक प्रणाली ।
 - ६. मुलनास्मक प्रणासी ।

दिवरणासक प्रणानी में प्राय जीवित भाषाओं काही अध्ययन होता है, प्राचीन भाषा भी इस क्षेत्र में बा सकती है। इस पद्धति के सन्तर्गत किसी निश्चित्र करण में दिशों आपा में कौत-कौत मी स्वित्तरों को है। आइतिक स्वृतिना करा थी, दिन सहर के कों का स्वीत्तर हैरें पर-क्षता नवा बादय नहता की करा परिचारी थी, बादि का नवी चय जानिक दिया जाता है। भाषा-दिशान के विशाद हम स्वत के क्षति, त्या, वादय नका सबहना को ही बायदन करते हैं।

ą

भाषा विज्ञान के सक यन की दूसरी सीति ऐतिहासिक है। कि ऐतिहासिक प्रध्यान करने समय हम विवरणासक प्राणानी की ह हैनना नहीं कर सबते क्योंकि ऐतिहासिक माया किन न एक असार माया के विभिन्त कानी का विवरणात्मक सम्बद्ध का परिमाम है मुमार मामा में परिवर्णने या जिलार होते रहते हैं। इस बिलार है व दसाएँ बचा है ? परिन्धितियों के भाषा परिवर्तन में योग क्या है ? ऐ भाषा-विज्ञान इन सभी प्रश्नों का समाचान उत्तरियन करता है। इसं के पूरे जीवन, उसके इतिहास भीर विकास पर ध्वित, रूप साहि की विचार किया जाता है। पुननात्मक प्रणासी भाषा-मध्ययन का तीसरा मार्ग है। यह प्रत्यन्त्र स्वपूर्ण है। इसके कारण मापा-विज्ञान का धावस गाउ ए नाय स्वाप्त गया है। इस प्रणाली में किसी माया के ऐतिहासिक तथा वर्णनासक दोनी तियों के प्राप्ययन की प्रस्तुन करते हुए सभी देशी एवं सभी दर्शों की आ का परस्वर तुवनात्मक भाष्ययन उपत्थित किया जाता है। उपर्युक्त देनो विमो का समाहार तथा समावय इस तुननातमक पद्धति की विरोधना है। है ऐतिहासिक या पर-रचना की दृष्टि से परस्पर सम्बन्धिक से या प्रश्विक आया का तुनाहनक मध्ययन हिया जाता है। यही नहीं, विभिन्न प्रहात की भागा

-विज्ञान हुये एक साथ धनेक भाषामों की विकसित दशा का भी तुलनारमक परि-

किया जाता है। भाषा-विज्ञान के भ्रष्टयसन के दो रूप हैं—एक तो भाषाग्री का वर्णनात्मक, ग्रात्मक या ऐनिहासिक ग्रष्टयसन ग्रीर दूसरे ग्रध्ययन के भ्राषार पर भाषा

तत्मक या ऐनिहासिक मध्ययन घोर दूसरे मध्ययन के झाथार पर भाषा उत्तीत, उनको प्रारम्भिक प्रथम्या, उसके विकास तथा गठन के सम्बन्ध मे शब्द सिद्धादो का मध्ययन घोर निर्वारण । ये दोनो का एक दूबरे के सहा-क्र-

रभाषा डा॰ द्यामसुम्दरदास — भाषा-विज्ञान भाषा को ज्ञयनि, उसकी बनावट । उसके हास की ब्यास्या करता है।' — भाषा-रहस्य

प्तव पूछा बाद तो बिना नुनना के द्याच्यन बैज्ञानिक हो ही नही सबना, हे तुननारमक भाषा-विज्ञान को हो भाषा-विज्ञान कहने हैं।' —भाषा-विज्ञान साक भोजाताच विज्ञाने —'भाषा-विज्ञान वह विज्ञान है दिनसे भाषा-—

बांक मेशानाथ तिवारी — 'भाषा-विज्ञान वह विज्ञान है जिसमें भाषा— शियद, वहें चौर सामान्य का वर्षनाश्वक, ऐर्वहार्शिक चौर तुनना पक हॉव्ट क्यम्पनन चौर तडिप्यक विद्यातों का निर्योग्ण किया गया हा। ' बार पुणे — 'रिमी विश्वायद परिवार के तुननाश्वक भाषा विज्ञान का ध्येव

करण पुत्र — १९मा त्यायण्ड पार्यस्य क गुलगात्मक नाया प्रयान क स्वय म परिवार को भाषाधी की चारस्यस्कि समानताघी को जात करना तथा उन १ ब्यास्टा करना है ।' प्रधानिकज्ञान विज्ञान है या कला

प्यान्यकाराम् व्यक्तानाम् स्थापाताः - जैसाकि भाषा-विद्यानामासे से विदित्त होताहै - यह भाषा का विद्यान

, कोई ब्यक्ति गहत ही सनुमान कर सकता है कि यह सक्य हो। नियाद कर किसान है। परस्तु निमान से विरोध सान के सनितिक कुछ पत्रा नियेद व में है। गमुबिक कर से विसान का वार्ष किसी बातु का सम्बन्ध परीश्या करना हारयों का पत्रा समाना नमा नुनता नका प्रथम के हारा। निव्द न निविक्त हरना है। ये नियम समानिवार गावसीनक सोर सावकानिक होता है। उन

ारणा वा पदा लगाता तथा तुनता तथा अयग के हारा लेड ने जिन्हांन रहता है। ये नियम तथा निर्दात गावधीलन घोर गावधीलन होने है। उन में विश्वत तथा घषवाद के नित्र लेगावात्र भी प्रधान मही है। एका वस हान गे हर्गरी हो जाती है, चाबिन्धादि नियम गायबन तथा निरिष्ट है। परन्तु



प्राचा-विज्ञ न निरिचन काल में किसी भाषा में कीत-कीत ही ध्वतियों भी (दा है), उनकी

पद-रचना तथा बावय-गठन की बना परिपाटी थी. मादि का समीपालक परि-चय उपस्पित रिया जाता है। भाषा-रिज्ञात के विज्ञान इस प्रनाती में नाया के ध्वति, रूप, यानव स्था सपटना का ही घष्यवन करते हैं। भाषा-विज्ञान के बर-यन की दूनरी रीति ऐतिहासिक है। हिमी भाषा हा ऐतिहासिक धप्ययन करने समय हम विचरणारनक प्रशाली की कवेंदा धर-हेलना नहीं कर सकते बयोरि ऐतिहासिक भाषा विज्ञान एक प्रकार से स्त्री

भाषा के विभिन्न काली का विवरणात्मक मध्यम का परिणाम है। वाना-नुसार भाषा में परिवर्तन या विकार होते रहते हैं। इस विकार के कारण मा

प्राकृतिक प्रवृत्तियां क्या थी, किन प्रधार के कभी का प्रयोग होता था, उनही

ą

दशाएँ बया हैं ? परिस्थितियों के भाषा परिवर्तन में योग क्या है ? ऐतिहासिक भाषा-विज्ञान इन सभी प्रश्नों का समाधान उपस्थित करता है। इसमें भाषा के पूरे जीवन, उसके इतिहास भीर विकास पर ध्वनि, रूप भादि की दृष्टि से विचार किया जाता है। तुलनात्मक प्रणाली भाषा-प्रध्ययन का तीसरा मार्ग है । यह भत्यन्त महन् त्वपूर्ण है। इसके कारण भाषा-विज्ञान का क्षेत्र प्रत्यन्त विस्तृत एवं व्यापक हो गया है। इस प्रणाली में किसी भाषा के ऐतिहासिक तथा वर्णनात्मक दोनो पद-तियों के भध्यपन को पस्तुत करते हुए सभी देशो एव सभी वर्गो की भाषामी का परस्पर तुलनात्मक प्रध्ययन उपस्थित किया जाता है। उपयुक्त दोनी पद-तियो का समाहार तथा समन्वय इस तुननात्मक पद्धति की विशेषता है। इसनें ऐतिहासिक या पद-रचना की दृष्टि से परस्पर सम्बन्धित दो या बधिक भाषामी का तुलात्नक ग्रध्ययन किया जाता है। यही नहीं, विभिन्न प्रकृति की भाषामी की तलना भी इसके अन्तर्गत की जा सकती है। परन्तु प्रधिकाश तलनात्मक पद्धति का प्रयोग एक ही परिवार या वश से सम्बद्ध भाषाओं की ध्वतियो. पद-दखना, शब्द-कोष तथा वाश्य रचना के साम्य भीर वैषम्य के झध्ययन के लिए किया जाता है। यह एक ही भाषा के परवर्ती रूपो के साथ सुलनात्मक दिन्छ

से किया गया हो या घनेक भाषाध्रो के साथ । संस्कृत, प्राकृत तथा ध्रपश्रम या बजभाषा, अवधी खड़ी बोली का तुलनात्मक अध्ययन एक कोटि का होगा, संस्कृत, ग्रीक तथा लेटिन का दूसरी श्रेणी का । ऐतिहासिक अम का ध्यान मे



₹

प्राकृतिक प्रयुक्तियां चर्चा याँ, किस प्रकार के रूशी का प्रयोग होती याँ, उनके पद-रचना तथा याक्य-गठन की बना परिचाटी यी, प्रादि का समीक्षातक परि चय उपस्थित किया जाता है। भाषा-विज्ञान के विद्वान् इस प्रणाली में भाष

भाषा-विज्ञान के अध-यन की दूसरी रीति ऐतिहातिक है। किसी भाषा क

चय उपस्थित किया जाता है। भाषा-विज्ञान के विद्वान् इस प्रण के घ्वनि, रूप, बावय तथा सघटना का ही प्रध्यपन करते हैं।

ऐतिहासिक प्रध्ययन करते समय हम विवरणारनक प्रणालों की हवेंया घव हिलान नहीं कर सकते नयोकि ऐतिहासिक भाषा-विज्ञान एक प्रकार से रिमी भाषा के विभिन्न कालों का विवरणारमक प्रवस्यन का परिणाम है। वाती-मुसार भाषा में परिचलंत या विकार होते रहते हैं। इस विकार के कारण या दसाएँ क्या हैं? परिस्थितियों के भाषा परिचलंत में योग क्या हैं? ऐतिहासिक भाषा-विज्ञान इस सभी प्रश्नों का समाभान उपस्थित करता है। इसमें भाषा के परे जीवन, उसके इतिहास और विकास पर स्वान क्ष्य साहि की विद्या

के पूरे जीवन, उसके इतिहास भीर विकास पर घ्यति, रूप मादि की दृष्टि से विचार किया जाता है। जुलनात्मक प्रणासी भाषा-मध्ययन का तीसरा मार्ग है। यह प्रत्यान मर्द-त्वपूर्ण है। इसके कारण भाषा-विद्यान का श्रेत्र प्रत्यात विस्तृत एव व्यापक ही

पया है। इस अमाली में किसी भाग के ऐतिहासिक तथा वर्णनासक दोनों पन प्राप्त है। इस अमाली में किसी भाग के ऐतिहासिक तथा वर्णनासक दोनों पन तथा है। इस अमाली में किसी भाग के ऐतिहासिक तथा वर्णनासक दोनों पन तथा पर तथा तथा है। इस के परस्पर तथा समन्य इस तुननासक प्रति की सिमया है। इस ऐतिहासिक या पर-एकता की दृष्टि से परस्पर सम्बन्धित हो सम्प्रति है। इस में तुननासक प्रति की सिमया है। इस भागामों का तुनासक प्रदान किया जाता है। यही नहीं, विभन्न प्रहृति की भागामों को तुननास पर एक ही परिवार या वस से सम्बन्ध भागामों की प्रति तथा तथा वाच रचना के सम्बन्ध भागामों की प्रति तथा तथा सम्बन्ध स्वाची के प्रप्ति तथा तथा के सम्बन्ध भागामों के सम्बन्ध ने निए हिस्सा जाता है। यह एक ही भागा में परवर्ती क्यों के साथ नुननासक पूष्ट है स्था गता है। यह एक ही भागा में परवर्ती क्यों के साथ नुननासक दृष्ट है स्था गता है। यह एक ही भागा में परवर्ती क्यों के साथ नुननासक प्रयूप्त है। इस एक ही भागा में स्वस्थात साथ से साथ से उस से स्थान से स्थान से साथ से उस से साथ से स्वस्थात साथ से साथ से उस से साथ से स्वस्थात साथ से साथ से उस तथा होटन का हुएता से में स्वस्थात साथ से उस तथा होटन का हुएता से में स्वस्थात साथ से तथा से तथा से तथा से से तथा से स्वस्थात साथ से से साथ से से साथ से साथ से साथ से से साथ से



क भाषा-विज्ञान विज्ञान कहे जाने पर भी उसमें इस निस्वणाधिका कृति

(दि० वि० (Ext),

ना मभाव है। ये निवस विज्ञान के नियमों हो भीनि सर्वत्र सहार्व वहें हैं। भाषा-विज्ञान के नियमों से एकाधिक सपवाद भी विन्तं हैं। भाषा परिवर्तन शील हैं। यदा करनी-नभी नियम-विष्कृत मेर्च सद्य स्थित प्रति का स्थान के लिया है। विज्ञान के स्थान की स्थान है। भूमों भीर 'कर्में रूप की दृष्टि से समान है, किन्तु एक का विकास 'मरम' के तथा द्वारे का 'प्रताम' के रूप में हुए हो वा सकता। ऐसी परिविधित में हुए विकल्प भीर भनुमान पर माधित है। निर्देश है।
पहता है।
कता का एकसान सहय मनोरंजन तथा सीन्दर्भ की मृद्धि करता है।

मुन्दरता का उनामक घननी जृत्ति के तिये कला को कोड में धासरा लेता है। परन्तु भाषा-बिन्नान का प्रधान कार्य इससे सब्देश भिन्न है। बहु न तो स्वी-रकन का साधन है धीर न मुन्दर कृति ही है। दूनरे कला व्यक्ति को कृति हैं तो भाषा समाज की सम्पत्ति। रोनों में कोई साध्य नहीं। भाषा-विज्ञान किसन के प्रांपिक निकट है। विज्ञान की भाति भाषा-विज्ञान भी विद्वाल धवना नियम

निर्धारण से सम्बन्ध रसता है। जिस प्रकार विज्ञान में किसी बहनु का सम्बन्ध परीक्षण करके उसके सम्बन्ध में निमम निर्धारित किसे जाते है उसी प्रकार माया-विज्ञान में भी भाग के उत्त्वति, रचना, विकास मादि सभी तहने के दिख्येण से सामान्य निमम निरुचन कर विशे जाते है। भागा की सम्बन्ध व्याह्मा प्रस्तुत करना ही भागा-विज्ञान का कार्य है। इस प्रकार भागा-विज्ञान भीविक सासज, गणित, स्वामन साहय की मीति अपवाद-रहित तथा विकर्ष-रहित जान न होते हुए भी कला नहीं कहा जा सकता है, भीवत, स्वामन करना हो

प्रश्न २---नाधा-विज्ञान भीर ध्याकरण के सम्बन्ध की सम्बन्ध सीमामा कीजिए। नाया-विज्ञान से स्याकरण भीर साहित्य के मध्ययन भीर मध्यापक

में कहाँ तक सहायता भिनती है, स्पष्ट कीजिए ।

ही उचित है।



बरता है। भाषा के जोवित तथा प्रथमित रूप में भाषा-विज्ञान का भार सम्बन्ध है। यत भाषा-विधान का धीन धरमधिक स्नापक घोट उस विक्रमित या प्रविक्रमित, प्राचीन या प्रविचीन भाषा का प्रत्येक छन्द समान मध्य स्थात है। भाषा-विभान नर कार्य मामान्य रूप से भाषाम दिख्दांन तथा विवेचन बरना है। 'प्रायंक भाषा विक्रिन होंडी है' इन हि पर भाषा-विशान विश्वाम करता है। इसके ठीक विषरीत व्याकरण पुर बादी पद्धति को भवनाता है। विद्वान् सदय स्वाहरण के प्राचीन विद्व स्वी ही साथु भीर शिष्ट मानते हैं, नय-निमित सब्द उन्हें सटको हैं भीर वे 'मपभ्रष्ट' उपाधि ने विभूषित करते हैं। संस्कृतेतर नव-विक्रतित भाषा । में मधिकतर सम्ब्रुल के तद्भव सन्धे का प्रयोग किया गया था पुशतनवा वैदाकरणों ने ऐसी भाषा को प्राष्ट्रत भाषा सर्वात् जन-माधारण की भाषा नाम दिया । बयोहि उसमें 'धर्म' का 'धम्म' मोर 'कमें' का 'कम्म' नवीन ध रुपों का प्रयोग होने लगा था । धाने चलकर प्राष्ट्रत के साहित्य-गद पर पानी हो जाने पर एक नव विकक्षित भाषा मस्तित्व में माई। उसे भी इन प्राचीन वाकी वैयाकरणों ने भवधारा भाषा प्रचांत् विगड़ी हुई भाषा नाम दिया । मार्ग पाकृत मीर मपभ्रंस के रूपों को भी साधु मानना पडा। माज भाषा-विज्ञान के मन्तर्गं, ध्वनि-विचार में हिन्दी के मधिकतर मकारात सब्द व्यवनात माने जाने लगे हैं, बयोहि झाजवाल हिन्दी-भाषा-भाषियों का उच्चारण 'राम' न होकर 'राम्' है। यदि यह परिवर्तन भाषा में कर दिया जाय तो वैयाकरण कोधिस हो उठेंगे स्रोर सभवत. इसका तिरस्कार भी हो। चाहे मन्त में यह तथ्य उन्हें स्वीकार करना पहुं।

(३) व्याकरण भावा-विज्ञान के पर-किन्हों का सनुवानन करता है। भावा के गेरे विकक्षित रूपों का जात भावा-विज्ञान कराता है और कावानार में व्याकरण उपको विज्ञ करता है। व्याकरण भागा की गुर्जि-मगुजि पर निवार करता है और भावा-विज्ञान वामान्य रूप वे उपका वर्त-सम्बन्ध मध्ययन कर विज्ञात विरूपण करता है। ग्याम का वर्जमान रूप क्या है ? यह नैयाकरण नेतनाता है, उपका भाव क्या है ? साहितिक विकारण है, पर भाषा-वैज्ञानि एक पर मोगे बढ़कर भाव के सामन की भीमासा करता है।"











करता है। भाषा के बीवित तथा प्रयतित है। से भाषा-विज्ञान का पनि सम्बन्ध है। पतः भाषा-विभाव का श्रीत्र भाष्मिक स्वापक भीर उदार है विकृतित या मिकिसित, प्रापीन या मर्वाचीन भागा का प्रत्येक श्रव्य मार समान महत्व रराता है। भाषा-विज्ञान का कार्य सामान्य रूप से भाषाओं व दिग्दर्शन तथा विवेचन करता है। 'प्रत्येक माया विकतिन होती है' इस सिदा पर भाषा-विज्ञान विश्वाम करता है। इसके ठीक विषरीत स्थाकरण पुरात-वादी पद्धति को प्रपनाता है। विज्ञान् गर्दय व्याकरण के प्राचीन सिद्ध स्त्रों क ही साथू और विष्ट मानते हैं, नव-निर्मित धन्द उन्हें खटहा है और वे इन 'मपभव्द' उपाधि से विभूषित करते हैं । सस्टतेतर नव-विक्रसित भाषा जिस में ग्रंथिकतर संस्कृत के तद्भव राज्यों का प्रयोग किया गया था पुरातनवाद वैयाकरणों ने ऐसी भाषा को प्राकृत भाषा सर्थान् जन-साधारण की भाषा क नाम दिया । वयोंकि उसमें 'धर्म' का 'धरम' और 'कर्म' का 'करम' नवीन शह रुपों का प्रयोग होने लगा था। धार्ग चलकर प्राकृत के साहित्य-पद पर धार्तीन हो जाने पर एक नव विकतित भाषा मस्तित्व में माई। उसे भी इन प्राचीन वादी वैयाकरणो ने भपभ्रश भाषा सर्पात् विगड़ी हुई भाषा नाम दिया। भागे प्राकृत भीर भपभंदा के रूपों को भी साधु मानना पड़ा। भाज भाषा-विज्ञात के ब्रान्तर्ग । ध्वनि-विचार में हिन्दी के ब्राधिकतर धकारात शब्द व्याजनात माने जाने लगे हैं, वयोकि भाजकल हिन्दी-भाषा-भाषियों का उच्चारण 'राम' न होकर 'राम' है। यदि यह परिवर्तन भाषा में कर दिया जाय तो वैयाकरण कोधित हो उठेंगे भीर समयतः इसका तिरस्कार भी हो। चाहे धन्त मे यह तथ्य उन्हें स्वीकार करना पड़े। (३) व्याकरण भाषा-विज्ञान के पद-चिन्ही का अनुगमन करता है। भाषा के मंद्रे विकसित रूपों का ज्ञान भाषा-विज्ञान कराता है और कालान्तर में व्याकरण उसको विद्व करता है। व्याकरण भाषा की पुद्ध-प्रशुद्धि पर विचार करता है भीर भाषा-विज्ञान सामान्य रूप से उसका तर्क-सम्मत श्रव्ययन कर सिद्धात निरूपण करता है। 'भाषा का वर्तमान रूप क्या है ? यह वैपाकरण वतलाता है, वसका भाव बया है पक विखाता है, पर भाषा-वैज्ञानिक

सा बारता है।'

एक पग ग्रामे बढ़कर भाव के



भ मापा-विज्ञा करता है। भाषा के जीवित तथा प्रचलित रूग से माषा-विज्ञान का धनिक सन्यग्य है। यहा भाषा-विज्ञान का शोज सविधिक व्यापक स्टेर उदार है विकसित या सविकसित, प्राचीन वा धर्मचीन भाषा का श्रवेक साद धरन समान महत्त्व राजा है। भाषा-विज्ञान का कार्य सायान्य रूप से आपानी क दिग्दर्शन सभा विवेचन करना है। श्रवेक भाषा विकसित होती हैं इस सिदाह

ही साथ भीर शिष्ट मानते हैं, नव-निर्मित शब्द उन्हें खटको हैं भीर वे इन्हें 'मपभुष्ट' उपाधि से विभूपित करते हैं। सस्कृतितर नव-विक्रस्ति भाषा जिस में ग्राधिकतर संस्कृत के सद्भव शब्दों का प्रयोग किया गया था पुरातनवादी वैयाकरणों ने ऐसी भाषा को प्राकृत भाषा भ्रमीत जन-साधारण की भाषा का नाम दिया । नयोकि उसमें 'घमं' का 'घम्म' और 'कमं' का 'कम्म' नवीन शब्द रूपों का प्रयोग होने लगा था। धागे चलकर प्राकृत के साहित्य-पद पर धासीन हो जाने पर एक नव विकसित भाषा मस्तित्व मे माई। उसे भी इन प्राचीन-वादी वैयाकरणों ने धरश्रंस भाषा धर्यात् बिगड़ी हुई भाषा नाम दिया। सामे प्राकृत भीर भपश्चरा के रूपो को भी साधु मानना पडा। ग्राज भाषा-विज्ञान के भन्तर्गे । ध्वनि-विचार में हिन्दी के मधिकतर धकारात शब्द व्यजनात माने जाने लगे है, वयोकि माजकल हिन्दी-भाषा-भाषियो का उच्चारण 'राम' न होकर 'राम्' है। यदि यह परिवर्तन भाषा मे कर दिया जाय तो वैयाकरण कोषित हो उठेंगे धौर सभवतः इसका तिरस्कार भी हो । बाहे अन्त मे यह तच्य उन्हें स्वीकार करना पढ़े। (३) व्याकरण भाषा-विज्ञान के पद-विन्हों का बनुगमन करता है। भाषा के नथे विकसित हपी का ज्ञान भाषा-विज्ञान कराता है भीर कालान्तर में व्याकरण उसको सिद्ध करता है। व्याकरण भाषा की शुद्धि-मधुद्धि पर विजार

करता है भीर भाषा-विज्ञान सामान्य रूप से उसका तक-सम्मत प्रध्ययन कर सिदाल निरूपण करता है। 'भाषा का बढेमान रूप क्या है? यह वैयाकरण बतलाता है, उसका भाव क्या है? शाहिष्यिक क्षितात है, यर भाषा-वैज्ञानिक एक प्राथ्यों बढ़कर आव के सामन की मीमाना करता है।'

पर भाषा-विज्ञान विश्वास करता है। इसके ठीक विपरीत व्याकरण पुरातन वादी पढीत को भाषताता है। विद्वान् सर्वेव व्याकरण के प्राचीन सिद्ध रूपो के



NITE-14:

गरमण है। यन भाषा-विज्ञान का श्रीत मार्थिक व्यापक मीर उहार विश्व नित्र मा प्रवित्र मित्र, प्राचीन या प्रवांचीन भागा का प्रवेद है है। प्र समान मर्'य रम हा है। भाषा-विज्ञान का कार्य महान्य मन से भाषाओं दिग्दर्मन ठथा विवेषन करना है। प्रत्येक माना विक्रतित होती है' इस स्थि पर भाषा-विज्ञान विश्वान करता है। इसके ठीक विष्योत ब्याकरण पुरा: वारी पद्धति को बारवाता है। विद्वान गरीब स्वाकरण के प्राचीन विद्ध स्त्रों ही माप बोर विष्ट मानते हैं, नव-निमित्र सब्द उन्हें सटको है बोर वे व 'मप्रभव्द' उपाधि से बिभूषित करते हैं । संस्कृतिकर नव-विव्यक्तित भाषा वि में क्रियत्तर संस्कृत के ठेड्भव सम्मों का प्रतीम किया गया था पुरात्त्वज्ञ यैपाकरणों ने ऐसी भाषा को प्राप्त भाषा सर्वात अनुन्तापारण की भाषा नाम दिया । वयोहि उसमें 'यमं' का 'धम्म' घोर 'कमं' का 'कम्म' नदीन ध रूपों वा प्रयोग होने लगा था। माने चलकर प्राष्ट्रत के साहित्य-गई पर मार्श हो जाने पर एक नच विकक्षित भाषा मस्तित्व में माई। उसे भी इत प्राची वादी वैवाकरणों ने प्रपन्नश भाषा प्रयात विगड़ी हुई भाषा नाम दिया। म ब्राइत भीर भपभवा के रूपों को भी साथु मानना पढ़ा। भाज भाषा-विज्ञ के भग्तगं । ध्यति-विचार में हिन्दी के भधिकतर भकारात राज्य व्यवनांत मा जाने लगे हैं, बयोकि माजकल हिन्दी-भाषा-भाषियों का उच्चारण 'राम' होकर 'राम्' है। यदि यह परिवर्तन भाषा में कर दिया जाय तो वैसाकर कोधित हो उठेंने भीर सभवतः इसका तिरस्कार भी हो । चाहे सन्त मे य तथ्य उन्हें स्वीकार करना पड़े । (३) ध्याकरण भाषा-विशान के पद-चिन्हों का धनुगमन करता है। भाष के नये विकसित रूपों का ज्ञान भाषा-विज्ञान कराता है भीर कालान्तर व्याकरण उसको सिद्ध करता है। व्याकरण भाषा की गुद्धि-प्रशुद्धि पर विचा करता है भीर भाषा-विज्ञान सामान्य रूप से उसका तर्क-सम्मत सध्ययन क सिद्धात निरूपण करता है। 'भाषा का वर्तमान रूप क्या है ? यह वैयाकरण बतलाता है, उसका भाव क्या है ? साहित्यिक विस्ताता है, पर भाषा-वैज्ञानिः

एक पूर्व प्रापे बद्कर भाव के साधन की मीमासा करता है।

करता है। भाषा के बोदित तथा प्रवृत्ति 📂 में भाषा दिवान का परि

भाषा-वि परता है। भाषा के जीवित तथा प्रचलित हा से भाषा-विज्ञान का प रास्यन्थ है। मतः भाषा-विज्ञान का धोत्र बरुपिक ब्यापक स्तीर उदार

विकतित या मविकतित, प्राचीत वा मर्वाचीन भाषा का प्रत्येक शब्द व समान महत्व रसाता है। भाषा-विज्ञान का कार्य सामान्य रूप से भाषाओं दिग्दर्शन तथा विवेचन करना है। 'प्रत्येक भाषा विकसित होती है' इस सि पर भाषा-विशान विश्वास करता है। इसके ठीक विपरीत स्वाकरण पुरा

٤

वादी पद्धति की भ्रपनाता है। बिद्वान् सर्देव व्याकरण के प्राचीन सिद्ध रूपी ही साथ भीर शिष्ट मानते हैं, नव-निर्मित शब्द उन्हें सटको हैं भीर वे 'मपभ्रष्ट' उपाधि से विभूषित करते हैं। संस्कृतेतर नव-विकक्षित नापा में ध्रिषिकतर संस्कृत के तद्भव शब्दों का प्रयोग किया गया था पुशतनव वैयाकरणी ने ऐसी भाषा को प्राकृत भाषा गर्वात जन-साधारण की भाषा नाम दिया । वयोकि उसमें 'बमें' का 'धम्म' और 'कमें' का 'कम्म' नवीन श रूपों का प्रयोग होने समा था। प्राये चलकर प्रावृत के साहित्य-पद पर मार्स हो जाने पर एक नव विकसित भाषा मस्तित्व में माई। उसे भी इन प्राची वाधी वैवाकरणों ने मनभ्रम भाषा ग्रयति विगड़ी हुई भाषा नाम दिया। म प्राकृत भौर प्रपन्नंश के रूपों को भी साधु मानना पडा। घाज भाषा-विज्ञ कें मन्तर्ग , ध्वनि-विचार में हिन्दी के मधिकतर मकारांत राज्य व्यजनांत म जाने लगे हैं, बयोहि माजकल हिन्दी-भाषा-भाषियो का उच्चारण 'राम' होकर 'राम्' है। यदि यह परिवर्तन भाषा में कर दिया जाय तो वैसाकर कोधित हो उठेंने और सभवत: इसका तिरस्कार भी हो । चाहे बन्त में य तथ्य उन्हें स्वीकार करना पड़े । (३) ध्याकरण भाषा-विज्ञान के पद-विन्हों का अनुगमन करता है। भाष के नये विकसित रूपों का ज्ञान भाषा-विज्ञान कराता है और कालान्तर व्याकरण उसको सिद्ध करता है। व्याकरण भाषा की शुद्धि-मगुद्धि पर विचा करता है भीर भाषा-विज्ञान सामान्य रूप से उसका तर्क-सम्मत भ्रध्यपन का विद्वात निरूपण करता है। 'भाषा का वर्तमान रूप क्या है? यह वैयाकरण

बतलाता है, उसका भाव क्या है ? साहित्यक विद्याता है, पर भाषा-वैज्ञानिक एक पन भागे बढकर भाव के सामन की मीमासा करता है।"



मिलती है। दोनों का पनिष्ठ सम्बन्ध है। जीवित माराधों के छोड़कर भाषा का प्रध्ययन करने के लिए भाषा-विज्ञान सा लेता है। वह साहित्य का चिर-ऋगी है। प्राचीन रूमें के र तुवनात्मक प्रध्ययन के निए समस्त सामग्री साहित्य से जवा जंडिपयक नियमो धौर सिद्धान्तो की रचना करता है। साहित्य ह विविध तथा विकसित का रक्षित रहेते हैं। साहित्य के ग्रा विषयक खोज प्राय. धसम्भव नहीं तो दुरुह भयस्य है। क्योंकिः

के विविध रूपों का ग्रक्षय भण्डार है। भाषा-विज्ञान हिन्दी भाषा के ऐनिहासिक विकार और मूल जानने के लिए घरधरा, प्राकृत, सस्कृत तथा बैदिक माहित्य की घो है। यदि हमारे पात भावा का कम-बद्ध साहित्य उपलब्ध न रहे विज्ञान का कोई कार्य निष्यान न हो। यदि प्राज सस्कृत, प्रवेस्ता साहित्य का प्रस्तिहव न होता तो भाषा-विज्ञान इन भाषात्रय के पा तया पारिकारिक सम्बन्ध न जान पाता । नाहिस्य में प्रयुक्त भाषा के हते विभिन्न गढ़ों धौर रूपों के परिवर्तन का ज्ञान होता है। इसी

बीर बितान साहित्य के प्रध्ययन के फलत्वरूप भाषा-विज्ञान का कार्य। साहित्य घोर भाषा-विज्ञान का घट्ट सम्बन्ध है। गाहित्य के द्वा में भाषा-विज्ञान का महत्वरूणं योग है। भाषा-विज्ञान साहित्व के वि मर्थो एव विवित्र प्रयोगों को स्पष्ट कर देता है। उच्चारण-सम्बाधी ह समस्यात्रो पर तथा ध्वनियाँ पर भाषा-विज्ञान ने मनूर्व प्रकास डाला वन्तार्थ-परिवर्तन मादि के कारणों की स्रोज इसी वाडमय के माधार पर ही रही है। इसी प्रकार दोनों एक दूनरे के सहायक है। भाषा-विज्ञान व है। ९० ९ . नुवनासम्ब प्रणाली ने सुत्वति-सास्य को ध्रुपम देन ही है जिसमे माहिए। वस्त ३—माया-विज्ञान के प्रमुख घर्गों का परिचा दीजिए तथा उतको

स्योगिता का विवेचन कीजिए। (दिः विः १९४८, माः विः १९६२) भावा-विज्ञान में भाषा वे सम्बद्ध सभी विषयों तथा समस्यायों पर विश्वर मिलती है। दोनों का घनिष्ठ सम्बन्ध है। जीवित मायामी के जीवित रूपो छोड़कर भाषा का ग्रध्ययन करने के लिए भाषा-विज्ञान साहित्य की सहा लेता है। वह साहित्य का चिर-ऋणी है। प्राचीन रूसे के ऐतिहासिक

तुलनात्मक प्रध्ययन के लिए समस्त सामग्री साहित्य से उधार लेता है र तद्विपयक नियमो भीर सिद्धान्तों की रचना करता है। साहित्य में ही भाषा विविधातमा विकसित रूप रक्षित रहते हैं। साहित्य के ग्राभाव में भा विषयक खोज प्रायः धसम्भव नहीं तो दुष्ह भवश्य है। क्योंकि सःहित्य भ के विविध रूपो का ग्रक्षय भण्डार है। भाषा-विज्ञान हिन्दी भाषा के ऐतिहासिक विकास और मूल प्रकृति जानने के लिए घरभ्रश, प्राहृत, संस्कृत तथा वैदिक साहित्य की मीर निहार है। यदि हमारे पास भाषा का क्रम-बद्ध साहित्य उपलब्ध न रहे तो भाष विज्ञान का कोई कार्य निष्यन्त न हो। यदि भाज सस्कृत, भवेस्ता तथा ग्री साहित्य का ब्रस्तित्व न होता तो भाषा-विज्ञान इन भाषात्रय के पारस्परिः

तथा पारिवारिक सम्बन्ध न जान पाता । माहिस्य में प्रयुक्त भाषा के द्वारा है हमें विभिन्त सब्दों और रूपो के परिवर्तन का ज्ञान होता है। इसी समुन्तर भौर विद्याल साहित्य के ग्रघ्ययन के फलस्वरूप भाषा-विज्ञान का कार्य भरवस्त समुद्ध भीर सम्पन्न हो चुका है। साहित्य भौर भाषा-विज्ञान का भट्ट सम्बन्ध है। साहित्य के अध्ययन में भाषा-विज्ञान का महत्वरूण योग है। भाषा-विज्ञान साहित्य के क्लिप्ट भ्रवीएन विवित्र प्रयोगो को स्पष्ट कर देता है। उच्चारण-सम्बन्धी भ्रनेक ... समस्यात्रो परतथा घ्वनियो पर भ पा-विज्ञान ने सर्दे प्रकास डासा है। .. गब्दार्थ-परिवर्तन मादि के कारणो की सोज इसी वाडमय के माधार पर ही

हो रही है। इसी प्रकार दोनों एक दूनरे के सहायक हैं। भाषा-विज्ञान की त्त्वनात्मक प्रणाली ने स्पुत्पत्ति-सास्त्र की यनुपम देन दी है जिसमें साहित्य में प्रवत्त सम्दो की व्युत्पत्ति सभव हो सको है। प्रदत ३--- मापा-वितान के प्रमुख प्रयों का परिचा वीजिए तथा उसकी

उपयोगिता का विवेचन कीनिए। (वि० वि० ११५८, प्रा० वि० १६६२) भाषा-विज्ञान में भाषा से सम्बद्ध सनी विषयों तथा समस्यामी पर विवार



4 . 44 . 5 ---

हिरिय को क्टिनिड कह गीवह रहा है। मोटिन के समाय ने मार्ग-दिरुक भार नार प्रवाद नहीं तो दुन्ह सम्दर्भ है। क्योहिन दिन भाग के किय को का यह प्रवाद के हैं। साथ कियान किये भागा के हैं।हाशिक किया और सूत्र नहींने से साने के दिश् परभाग, यह न, माइन तम बेंदिक गोहिन को सोर निहरता है। यह हवारे पान भाग का कम्मक गोहिन उत्तराय ने गहें तो भागा-दिशान का कोई कोई शिमान न हो। यदि साम मार्ग, प्रमेशा तथा भीव गोहिन का सिश्य न होगा तो भागा-विभाग हम भागावन के गास्परिक तथा पारिशरिक गास्प्य न नान पाना। गाहिर्य में पहुल भागा के मार्ग हो। देश विभिन्न गासी और कोई के परिवर्गन का मार्ग होगा है। हमी मानुस्त सोर विभाग गाहिन के सम्पन्न के कारवाकर भागा-विभाग का कार्य सत्यन समुद्र भीर सम्पानिकान का महत्व स्वस्त्र है। साहित्य के सम्पन्न संभाग-विभाग का महत्व स्वस्त्र में। स्वस्त्र के । स्वस्त्र है। साहित्य के सम्पन्न संभाग-विभाग का महत्व स्वस्त्र में। है। भागा-विभाग साहित्य के विनय्द पूर्व ति विभाग होगी के स्वस्त्र कर हो है। उत्स्वार-सम्बन्धी प्रमेक

हितारों है। कोर्च का बांगड़ वान्तव है। क्षीरंच माणकों के नीहा समें से प्रश्निक क्षण का कन्यन्तव कर के दिए आकार्तकात जारित की तर्वा तकी है। वह व्यक्तिक का निरुद्धकों है। क्षणेंच सभी के त्रीहरू विक की दुर्ग तान्य प्रश्निक है। क्षणेंच सानकों जाहित वा ज्यार नेता है वस प्रश्निक विकास क्षरित की रामा के रामा करता है। जाहित के ही सामा के

साराधं-परिवर्तन बारि के बारणों की सीन इसी बाडमय के बाधार पर ही ही रही है। इसी प्रकार रोगों एक दूसरे के सहायक है। भागा-विवान की धुननारमक प्रणाती ने ब्युत्सास-सारक की मतुष्म देन दी है कितने साहित्र ने प्रवृत्त हास्तों की ब्युत्ति समय हो सकी है। यहन २—आधा-विवान के प्रमुख मार्गों का प्रतियंग्न बीजिए तथा उस की अपनीमिता का विशेषन कीलए। (वि० वि० १९५८, व्या० वि० १९६२) भाया-विवान में भाषा से सम्बद्ध सभी विषयों तथा समस्यामों पर विवार

संभरपात्र) पर तथा ध्वनियो पर भाषा-विज्ञान ने प्रतुर्व प्रहास डाला है।



हैं। - हो है र हो ए को कविषय पत्रक के हैं के बिक्क राज्यकों के बेहिन करते. · 医自己 A. M. 电子户, 194年 中山東 安门李昌 A. 野门木 电、 40月 生 电设置 电影设置点 化环霉子 经工工工费的 有致 医性毒素 心医者长结束 医性炎结束症 इत्तानक मात्रक वृद्ध है रहाइच क्षेत्र व्याप्ति है इसके बन है है ल दिववस विवर्त करेल विद्यान की बकार करता है। मार्ग्य करें दे गए। दिर्वतंत्र प्रदा देवतदितं कर रहेत्व रहते हैं हे आदि व से समार व पाण

रिकार मोह कार महाक्ष्य नहीं की दुष्ट मनाव है। क्यांक लहीं, व मार E felau bit unt wire bi भाषा किए व हि हो पात्रा व लॉन्हाबिक विकास मीत सुप पहुरिका abes & fiet utur, b'er, ures bar d'an miger ab uir feiten

है। बहिद्धार प्रत नाम का कर नद गाहित्व प्राताम न वह तो भाग-विज्ञात का कोई कार्ब (१९६०व व हो । यदि ब्राफ मन्तुत, ब्रवेनत प्रथा दीक्ष ⁹⁹⁷हार कर महिलाह जा होता का आधा दिवान हुई भाषापर के पारमारिक वना वारिकारिक सारत्व व जाव पाता । गाहित्य में प्रपुत्त भाषा के द्वारा ही देवे विकास प्रध्ते धीर कृते के परिवर्षत का जात हाता है। इसी नमुन्तत धीर विशेष भागीहरू के धारवयत के फलायक्षा भाषानिकाल का कार्य भाषान वगुद्ध घोर मध्यन्त हो चुका है। वाहित्व घोर भागा-विज्ञान का घट्ट सम्बन्ध है। माहित्व के प्रध्यन में भाषा-विद्यात 🗱 महाबर्श यात है। भाषा-विज्ञात माहित के स्विधः धर्नो एव विक्ति प्रयोगी को स्पन्त कर देश है। उच्चारम-मन्बन्धी प्रवेक समस्यामा पर तथा ध्वतियो पर अप्यानिकात ने महुई प्रकास हाता है। सब्बार्थ-परिवर्तन सादि के कारणों की योज इसी बाइमज के झापार पर ही ही रही है। इसी प्रकार बोना एक दूसरे के महायक हैं। भाषा-विज्ञान की सलनारमक प्रणासी ने स्युत्पत्ति-सास्त्र की सनुषम देन यी है जिनने साहित्य में प्रश्न ३ — भाषा-विक्षान के प्रमुख मर्गों का परिचन बीजिए तथा उतकी

प्रवृक्त दाव्यों की क्युत्पत्ति सभव हो सकी है। उपयोगिता का विवेचन की जिए। (वि० वि० ११४८, घा० वि० १९६२) भाषा-विज्ञान में भाषा से सम्बद्ध सभी विषयों तथा समस्यामों पर विवार



मिलती है। दोनों का पनिष्ठ मम्बन्ध है। योजित मावामों के बीजित हो छोड़कर भाषा का प्रध्यवन करने के लिए भावा-विज्ञान साहित्य की हर लेता है। वह साहित्य का चिर-ऋगी है। प्राचीन स्मों के ऐडिहारिक नुतनात्मक प्रध्यवन के निष् रामस्त सामग्री साहित्य में उपार नेता है तदिषयक नियमो भीर निद्धान्तों की रचना करता है। साहित्य में ही मा विविध तमा निकलित का रजित रही है। साहित्य के धमान में विषयक खोज प्राय. धमनभव नहीं तो दुस्ह भवरत है। बयोकि न हिंध के विविध रूपों का द्यश्च भण्डार है।

भाषा-विज्ञान हिन्दी भाषा के ऐतिहासिक विकार भीर भून प्रहरि जानने के लिए धरध्या, प्राहत, सस्कृत तथा बैदिक नाहित्व की घीर निर्दे है। यदि हमारे पास भाषा का ऋष-बद्ध साहित्य उपलब्ध न रहे तो भ विज्ञान का कोई कार्य निष्यन्त न हो । यदि धात सस्कृत, धवेस्ता तथा साहित्य का प्रस्तित्व न होता तो भाषा-विज्ञान इन भाषात्रय के पारस तथा पारिचारिक सम्बन्ध न जान पाता । साहित्य में प्रयुक्त भाषा के द्वार हमें विभिन्न शब्दों और रूपो के परिवर्तन का शान होता है। इसी समृ धीर विशाल साहित्य के मध्ययन के फलस्वल्य भाषा-विज्ञान का कार्य मर समुद्ध भीर सम्पन्न हो चुका है।

साहित्य और भाषा-विज्ञान का घटूट सम्बन्ध है। साहित्य के श्रध में भाषा-विज्ञात का महत्वरूषं योग है। भाषा-विज्ञात साहित्य के कि ध्रवी एव विवित्र प्रयोगों को स्पष्ट कर देता है। उच्चारण-सम्बन्धी भ्र समस्याप्रों पर तथा ध्वनियों पर भ पा-विकान ने भरून प्रकाश बाला दाब्दार्थ-परिवर्तन भादि के कारणों की खोज इसी वाडमम के माधार पर ही रही है। इसी प्रकार दोनों एक दूसरे के सहायक हैं। भाषा-विज्ञान त्तनात्मक प्रवासी ने व्युलिति-सास्य की घनुषम देन दी है जिनमें साहित प्रपुत्रन शब्दों की ब्युत्पत्ति संभव हो सकी है।

भक्त ३---मापा-विज्ञान के प्रमुख धर्मों का परिचा बीजिए तथा उत उपयोगिता का बियेवन की जिए। (वि० वि० १६५८,

भाषा-विज्ञान में भाषा से सम्बद्ध सभी विवारे



भाषा-विज्ञान

उत्तरा ममुनित्र परिषय प्राप्त किया जा सकता है। प्राप्तिन माया ना विस्ते पण तथा प्रमुशीनन करते महत्व मृत्युतीन सम्प्रता के महत्वपूर्ण करते कार्य विश्व करता के महत्वपूर्ण करते कार्य हो जाते हैं। यह पूर्ण एक नवजात विद्यु के रूप में हैं, परन्तु इसके इत्यास कार्य का निरीक्षण कर हुन भविष्य में इतने इस धीन के प्रमुख्य होत्र के निर्माण कर स्वत्र में क्षा कार्य का निरीक्षण कर हुन भविष्य में स्वत्र हम धीन के स्वाप्त स्वत्र होता के निर्माण करता है।

(प्र) लिपि (Script)—लिपि एक प्रकार से मापा का परिधान है मनुष्य-मात्र की विवासिभ्यक्ति तथा भाव-स्वेतना को साहार करने ने दें का यहा हाथ है। प्रत इसका सम्बन्ध भाषा के लिखित रूप से है। भाषा विवास लिपि का वैशानिक प्रध्यन करता है प्रोर इसके उद्भव प्रीर विवाध की समीक्षा भी करता है। भाषा-विज्ञान ध्वति-विवास की सहायदा से निं संसोधन कर इसको प्रधिक वैज्ञानिक और उपयोगी बनाने के लिए प्रयत्न विज्ञान है।

भाषा-विज्ञान की उपयोगिता

प्रत्येक वस्तु की धरनी उपयोगिता तथा घहुँवा होती है। जो वस्तु जितर्ने हो उपयोगी होगी उससे मानव तथा समाव का उद्या हो कच्याण होगा मानव-जाति तथा संस्कृति की समृद्धि तथा कट्याण करना विज्ञान मात्र क उद्देश्य है। भाषा-विज्ञान का योग भी इस सम्बन्ध मे उपेशणीय नहीं हैं। भाषा-विज्ञान के प्रध्ययन से हमे निम्मोक साम हैं—

(१) मानव विदेक प्रयान प्राणी है। भाषा तथा सब्द विषयक भनेक प्रस्त उत्तके मस्तिष्क मे यूमते रहते हैं। उत्तका इस प्रकार का कीतूहत साईहर तथा ब्याकरण का अध्ययन करते समय प्रथिक वड जाता है। भाषा-विज्ञान इन कीतृहत तथा जिज्ञासा को हुन्त करने की चण्टा करता है भीर साथ ही

भाषा-सम्बन्धी भनेक समस्याभी का समाधान उपस्थित करता है।

(२) भाषा-विज्ञान का क्षेत्र प्रस्थत विद्याल और विस्तृत है। यह किसी भाषा के बत्यन को स्त्रीकार नहीं करता: यरन् यह विद्य के हिसी कीने की भाषा की अपने विदार्द का में शास्त्रसत्त कर लेता है। साथ ही इतका भाषा की अपने विदार्द का में शास्त्रसत्त कर लेता है। साथ ही इतका सम्बन्ध प्रनेक प्रास्त्री तथा विज्ञानी से हैं। इतिहास, मनीविज्ञान, पुरावत्व,



र्ववतात की धवक प्रात्माध्य को प्रताल हुई है। वेव तुलक वह नीति घोर करें दित व । प्रवेड करियों के पर्वे तथा महा का तुवशायक प्रभाव है है वना 3 4

(८) विस्तो प्रविश्व को सिता प्रश्न कान न प्रापानिस्तान के प्रवस्त न नामा होता है। उन्हें श्रीक कर तथा गहर पाझ बनारी ने हुन प्राच 21 317 8 1

(१०) भाषा भीर विशिष्टा अधिक गुज और स्वाटक देशने वे इस्स द्यायवन पावन्त्र उन्दोनी है। भाषानिकान भाषान्त्रकारी सहनदादी हा तुना-थान करता है। दोषा का परिहार तथा पुत्ती की वृद्धि करके नह नाम की मधिक संयुक्तत घोर समूच बनाता है। भाषा, ध्वनि मोर मर्व के परिशंत के कारणों की सोब करता है।

प्रश्न ४ -- सिद्ध कोजिए 'माथा-विज्ञान को परम्परा बरुत प्राचीन कान से प्रविष्यित चनी पाती है।

घयवा मत्य-विज्ञान नया भारतीय भाराधों के येशानिक सध्ययन के सम्बन्ध में तो कार्य भारतीय विदानों के द्वारा दुधा है उसका बालीयनामक परिवर बीजिए।

यह एक तथ्य है कि भारतवर्ष में भाषा-विज्ञान की परम्परा यहत प्राचीन काल से प्रविच्छिन चली प्रा रही है। भाषा-प्रम्बन्धी प्रध्यवन के सकेत हैं भारत में उपलब्ध साहित्य से ही मिलने प्रारम्भ हो जाते हैं। भारत क भारत के नारत क पान परिवास भारत-प्रध्यमन की घारा का उद्गम उसी महान् न्योत से है। वैदिक काल मे स्थान इन्स द्वाद पा कि वाक्य के खण्ड हो सकते हैं जैसा कि कृष्ण-यजुर्वेद सहिता मे भारत के इंटर के उपाख्यान से विदित है जिसमें देवों ने इन्द्र से उनके अध्यक्षेत्र के उपास्यान स व्यास्त्र प्राप्त की थी। ये सकेत उनके भाषा-प्रमुख्य के स्त्र देने के लिए प्रार्थना की थी। ये सकेत उनके भाषा-प्रमुख्य के स

राज स्थाने हैं। व्यवहार रूप में स 18200

ब्राह्मम-प्रन्य तथा प्रातिशास्य

सहिताक्यों के परवात् ब्राह्मण-प्रयोका काल माना जाता है। इन ग्रथी में पदा-कदाध्विति मौर मर्यका उल्लेख किया गया है। धातुमा के मर्यको नमकाने का यह प्रयम प्रयास है। वैदिक सहिताओं का पद-पाठ भाषा विज्ञान के विकास में एक नवीन मध्यान जोड देता है। इसमें मन्धि, समास ग्रीर स्वरावान के बाधार पर सहिताकों को पद रूप में किया गया है। प्रत्येक सहिता का पद-पाठ प्रथक् प्रथक् ऋषि ने किया । साकृत्य ऋषि ऋष्वेदीय पद-पाठ के, गुग्रं मामवेरीय के तथा माध्यस्तित सबुबँदीय के पर-सठकार थे। वेदों नी म्बनि तया उच्चारण की दृष्टि से परम्परागत परिपाटी की प्रश्रुण्य बनाने के निए वेशे की प्रतिसाखा का मध्ययन होने लगा । वे<u>शे के गुढ</u> उच्चारण मीर नियत <u>घ्वनि को रक्षा</u> के लिए विद्वानों ने प्रतिशासानु<u>मार</u> जो सिद्धान्त प्रति-पादित किये उन्हें प्रातिसास्य कहते हैं। यह उपलब्ध प्रानिशास्य पाणि उत्तर काल को रचनाएँ हैं भीर प्राचीन प्रातिसाक्ष्य पर भाषारित हैं के नाम, मास्यात, उपसर्व भीर निपात भेद, ध्यनियों का प्रीड वर्गी ।

स्वराषात, मात्रा-काल घोर उच्चारण विषयक नियमा ना घष्ययन ह

निषण्टु भ्रीर यास्क (८०० ई० पू०) प्रातिशास्त्रों के बाद निष्ण्य की रचना हुई। यान्क ने नि

निषण्टुकी व्यास्या की है। इस समय एक ही निषण्टु प्राप्त है। के क्लिप्ट सब्दों की सूची मात्र है। सास्क ने उसके प्रत्येक स वेदों में उद्धरण देकर व्यूत्पति तथा धर्यं पर दिचार दिया है कें क्षेत्र में यह प्रथम प्रयास है। निरुक्तकार यास्क ने झारटाय भनेक भाषा-पास्त्रियों का उल्लेख किया है तथा उनके मनी यो है। सन्दर्भ की स्वारवा के साथ ही साथ भाषा की उत्पन्ति न का स्पष्टीकरण किया है। इस पर्यवेक्षण से बात होता है कि विकास इस समय तक पर्यान्त हो चुका था। मुनिवय-पाणिनि, कात्यायन धौर पतंत्रित

पाणित के पूर्व वैयादरकों में सापिशति, दाशहसन सोर इन्द्र

है हे हुई के बाद करने के कि उपने कोई के अरावश्य की द्वारत के कि उपने कोई के अरावश्य की दिवार के कि उपने कोई के अरावश्य की देवार के दे विराध के प्रति के अरावश्य की देवार के दे विराध के प्रति की अपूर्ण की दे करावश्य की है कि उपने को प्रति के अरावश्य की प्रति के उपने के दे प्रति के उपने की प्रति की प्रति

वारित्रकार कार्यायन (२००६० पूज) पालित के सक्तारील के बादित के मार्थायन इन्होंने मुत्रायक दोनी में को है भीर उन मुखे हो बाहिक करा बात है। वार्डिक में पालित को पाल्याचानी के देवक पूर्वों को मार्थायन की है। कार्यायन ने पालित के पालियादिक पाली में मी हुए परिश्ति किया है। हमने कुल पार हवार बार्डिक है। एक इन्हार से मह मार्थायायों का सहायक स्वय है।

बागोन रा, प्राप्ता रोच र, रोका तथा दिए तो की है र भाषा दिवान के हो व है बारता कोई भी भीरिक बच्च बस्तार भड़ नहीं किया र महत्त्वा पाविति क

ध्यतिस्य योर भाषा-धेष पर उगका प्रभाव प्रवृतिय है।

वार्जी (१८० है पूर्व) को हाँ मार्गाप्य है। ज्योगे पाणित का प्रा पेकर कार्जायन को धारोप्ता को धार उनके मार्गयों का उत्तर तक होंगे रिति के दिया है। जर्क नियमों को 'दिट' कहा जाता है। जुए नियमों को रखना पाणित के मूर्गों में बातानुवार सुधार करने के लिए भी को यह। पाय बति ने सकी धार्मिस सीने में भाषा का वालित्व विषयन मायता मुक्क दिया है। पार, पर्ध तथा पालि के सक्या का बालित्व मायान 'पहास्मात्र हिया है। पार, पर्ध तथा पालि के सक्या का बालित्व मायान 'पहास्मात्र मार्गित वालिति, नार्वायन बीर पत्रवित के ए' मार्गित का विवृद्धित किया गया है। टीकाकार

पराध्यायों की टोका वामन तथा जयादित (७०० ६०) लेखक उस ने ही। उसे 'शांतिका' के नाम से प्रमिद्धिन किया गया। जिनेन्द्रवृद्धि ने काशिका में दीवा 'काशिता-त्यात' नाम से की। काशिका की टोकामों में हरिदल की 'परमनरो' भी मुनदर बन पढ़ी है। महाभाष्य की टोकामों में भतृंहिर की 'सार-पदीय' पुस्तक प्रमुख है विससे भाषा के दार्शनिक पदा पर विचार किया करा है।

कौमुदीकार

टीसवारों के द्वपान्त की मुरीकारों का समय माता है। प्राप्ताध्यों की प्रियंत दुवीव बनाने के लिए टीवा के पुरातन निर्मोत का त्याग किया गया भीर न्यीक-रादित का उपम्म किया गया और न्यीक-रादित का उपम्म किया गया और न्यीक-रादित का उपम्म किया गया औ की मुदी के नाम के विद्यात हुया। देव नृत्त गोंनी का सर्वप्रयंत प्राप्त वित्त कार स्वाप्त के व्यवस्थित कम ना रस स्वयं में मूचवात रिया गया है। मुटीवी दीवित कुछ 'विद्यान-की मुदी' भाषा-विद्यात में में सहय भाषा की सर्वाधिक महत्व की प्रवा है। इसकी लोकप्रियता ने में पराध्यायों को भी दर्गियत कमा रिया है। सम्ब क्यांतरणा में हेमकर प्राप्ताध्यायों को भी दर्गियत कमा रिया है। सम्ब क्यांतरणा में हेमकर प्राप्ताध्यायों को भी दर्गियत कमा रिया है। सम्ब क्यांतरणा में हेमकर प्राप्ताध्यायों को भी दर्गियत कमा रिया है। सम्ब क्यांतरणा में हेमकर प्राप्ताध्यायों को भी दर्गियत कमा रिया है। सम्ब क्यांतरणा में हेमकर प्राप्ताध्यायों की भी दर्गियत कमा रिया है। सम्ब क्यांतरणा में हेमकर प्राप्ताध्यायों की भी दर्गियत कमा रिया है। सम्ब क्यांतरणा में हमकर प्राप्ताध्याय क्यांतरणा में हमकर प्राप्ताध्यायों के भी दर्गियत कमा रिया है। स्वाप्त क्यांतरणा में हमकर प्राप्ताध्यायों की भी दर्गियत क्यांतरणा स्वाप्त क्यांतरणा स्वाप्त क्यांतरणा स्वाप्त स्वा

पन्द भी प्रनिधा, सक्षणा घोर न्यवना प्रस्तियो का तारिक घोर पिपयक विदेवन ध्वन्यालोक, कान्यप्रकारा, रस-गगापर घारि मितता है। प्राष्ट्रत भगाएँ

्षार्ट्र के परवात् प्राह्त, पानी तथा घरभंग भाषाधी का [
वनता प्रस्मात कर त्याहरणों ने उन्हें भी भाकरण के बटिल [
हिया शानी भाषा में कच्चावन, मोमानात रिवड व्हाहरण वर्ग विश्व है। हेक्कर के पारात्तुवातर के वाटब सम्भाव
पर दिवार दिया गया है। वररिब वा पाहत-प्रवात प्राह्त भाषा का
स्थारपत है। इन स्थायन्यों में प्राह्मों के तुषनातक सम्भावन की प्रमु

भाषा-विकास ۹۵

द्याप्तिक प्रा

नारत ने मत्यानीयान का या जिंक रूप ने बायपन पूर्वप के मार्थ प्राप्त हुवा है। मोराजीर विश्वता न भारतीय भारामा के संस्वता ने हिर्द बार्च दिया है। १६७१ साम्यक्त ने अविक मार्गाया का तुम्मायक साका बात गीम ने भारति सारं करायों वा गुप्तावक स्वकृत्वे त्या हुम ने निर्मात का मुक्तामक स्थानस्य भी रुवा कर प्राप्तु स्थ ज्यासी

इन बेमारिक दृष्टि में शुरू रुवेर का नेमानी कोत नवा शहर हैना हिन्दी भाषा काक्षण प्रदुत्त है। सन्त प्रान्तीय भाषासी से तार हार् भाजपुरी पर विवसंत ने विश्वासी भाषा पर, दून व्यक्ति ने मराठी भा महरापूर्व कार्य दिया है।

बर्तमान पुन में भाषा-विज्ञान सम्बन्धी कार्य करने वांत्रों में स्व० रा गोपाल भव्यस्तर का नाम विस्तरणीय है। उन्होंने सहत्त व्याद परम्सा की साने हुए मोरोपीय विज्ञानों के सिद्धान्तों का गहन मन्त्र हुतवा प्राचीन मध्य तथा घापुषिक सार्य-भाषाची की तीयपूर्व मी।

व प्रशास कर के स्वास कर के तथा आवेंद्र रागी का नाम मूल भारीने हैं। डॉ॰ सुनीतिहमार बटबी तथा आवेंद्र रागी का नाम मूल भारीने क सन्बन्ध म उल्लेखनीय है। घटनी का बगाली भाषा के विकास का प्राप्त दृहित्यो से भाषा-विज्ञान की सम्पत्ति है। डा॰ धीरेन्द्र वर्ग

अपण १ स्विमी (ध्वमी), मोहदीन कादरी (हिन्दु स्तानी ध्वति), उव बाहरण (भोगड़ी), मुश्रद्र मह (भीवती), हरदेव (हिन्दी सर्व-ि ्र_{प्रश्न थ}्रासुनिक भाषा-विज्ञान के प्रारम्भिक इतिहास क प्रशिव भाषा शास्त्री हैं।

दुर्जासवी सतारदी में माधाविज्ञान के प्रारम्भ तथा विका

काराचन स्था विकास को दिया जाता है। इत विद्वारों को प्र किन प्रमुख प्रोपीध विद्वारों को शिक्षा जाता है। इत विद्वारों को प्र कराहर ।

स मा असाम विषयक विवेचन इतना पुरातन नही जिता का भी संसिद्ध परिवर्ध दीजिए।

3 \$

का मुभाव था। यतः भाषा तत्वो का विश्लेषण एवं वैज्ञानिक प्रध्ययन योख्य में भारत की भरेशा प्रधिक देर से हुषा। योख्य के भाषा-सम्बन्धी प्रध्यक्षन के दो भेद किये जा सकते हैं— प्राचीन भीर प्राधुनिक।

शाचीन

सबंद्रयम सीम के प्रसिद्ध दार्शनिक मुकरान ने राज्य भीर सर्थ के सम्बन्ध में दिखाल प्रकट किया। प्लेटों ने भ्रपने गृह सुकरान के भाषा के सकुर को स्पिक पल्लाबित किया। सीक ध्वनियों के पीप झीद मधीय के रूप में वर्गी-करण का यह प्रथम प्रमास था। भाषा विकार के धन्तर का स्पष्टी करण ने नुस्तित वा सकेत जेटों की इनियों में मिनना है। नत्यवेना प्रस्तृत ने भी स्पेटों के कार्य की प्रायं काष्ट्राया। भारतन ने पूरों का विभाजन कर सजा नया

क्या के रूपो नो प्रधिक स्पष्ट करने नो घेटना की है। ये वर्ण को ग्राविभाज्य स्थिनि मानते हैं। प्रस्तू द्वारा दी गई न्यर को परिमाणा (स्वर वह है जिसकी स्थिनि किना जिल्ला मां प्रोप्त के उस्परित हो) बुख प्रतो में बैज़ानिक कही जा नकती है।

सीक

भाक भाग के सर्वप्रथम बंदाकरण प्रेंबम थे। जूरोप में स्वर भीर व्यवनी की उजित परिभाषा मर्वेच पहुंते रहोते ही दी है। कती, क्रिया, काल, निव, पूरव भीर वजन के पारस्तरिक सम्बन्ध की स्वयः भीश्माल इनके व्याकरण वे प्राप्त होती है। इस होते की उपारंचता सब भी कम नही है।

रेटिन

ताटन सीव घोर रोम के सम्बद्ध के फलस्वकर दोनो छस्त्वनियों का मेल हुया। धीक पर्यादि के घानार पर लेटिन का भी सम्बद्ध प्राध्यम होने लगा चौर उख भाषा के घ्याकरण निधने की प्रवृत्ति जायकर हुई। पर्यट्टवी राताब्दी में अधिक विद्यान परित्व का ने प्रयय प्रामाणिक सेटिन स्थावरण निस्सा। वसे घोड़े विद्यान परित्व का स्वाद्यक्त भी जायों में लिए से से से से स्थावरण सेटिन स्थावरण भी जायों में स्थावरण भी

किस्तियन के व्याकरण भी उपयोजिता नी दृष्ट से उत्तम है। ईसाई धर्म के प्रसार के बया रोम तथा चीस में बोस्ड टेस्टामेट्ट के बच्चमन ने नारण घीक. लेक्नि बौर हिंदू भाषायों के मुसनासक विवेषन का धीयवेस ट्रॉने नगा।

AN AND THE RESERVE STEEL AND THE STEEL दल्हें देश कर है के बच्चे वे अहित लहा के तहीं है। इस दें ने हेंद्र दें बारी की उल्लें एक कार्रित रिवास का की है। उन क CRECK STRUKENT INDER BIN EN APPRACE COS MIRTOR अपने को पहेंके प्रिक्ष है। दूधन के की के बाति के के ते , जे ते कि कि gregifice the war groups where he to give a war to बार्थ (ह (१६ की प्रवासी) इत्तेवर्ध वर्ते भवत्रिकाश के संत्वक पर व का पुन बन । मार्थ के बारदरक कोट बनके के अनुस्कृत प्राप्त का मानक नवा गई। _{त्व दे} देव लाग्य । पुरार'य विद्यानी ने संग्रह त का अन्यत्व कर प्राचे व ुंब कोर वेराव से पुत्रसंकर नरीव गध्या का यन्त्रपण विकास है। रत्य राज्यसारक सोनादरी की माधार छिता रखत हुए यह दिनिय के हैं है और नेरिक से साहत का बाध्य ब्यारात कर प्रवृक्त कामा है। क्ष बंधत का प्रतिसंदर्शन्य । इह भाषाया के प्रतिरंदर है तह दौर दानीय धारती भाषा के एक पूर सोह का सम्भाव

पार बरहारता । बोल के दल महात् कार्य का विद्यान कोर्य प्रहार वेद्दार है हिस्स विद्या को कर किया। दल कार्य के परिचार प्रहार के दुर्दार वे सहित का प्रभावन कोर्य होते होने तथा। विद्यार के प्रहार वे प्रवास के प्रयोग दिवान कोर्यन ने जुनन

स्वति क्यानाम के हैं जिने हो बन के के जिन है का नहें के बीज है जाता है जिन का दूर नहीं हुआ है के बाद जाता है जिस का दूर नहीं हुआ है का दूर जाता है जो के कि कि का नहीं है कि का नहीं का नहीं का नहीं है कि का नहीं है क

2+

भाषा-विज्ञान व्याकरण की परम्परा की नीव डाली तथा कुछ ध्वनियों के नियम का मूत्रपात भी

35

नाम भाषा की सर्वाल तथा दीनर्वह की भाषा के विकास पर उपयोगी दान्छ-वोण प्रस्तृत क्या । इनका मत पा कि जिल्लित सामग्री के ग्रामाव म किसी देश के इतिहास का परिचय भाषा ⊣टन एवं सब्द-सर्ट वे साधार पर रिया जा सबता है। इविद्र भाषाओं को मरजूत सा जिल्ल बतलात हुए इन्होंने प्रतेक भाषाची के ध्यावरण की रचना की । १८१६ में याकोब बिम वा देवभाषा ध्याहरण जमन भाषा ने उपर उच्च कोटिना सनटा व्यावरण है। इसी मे विम नियम का बर्णन है। इसमे प्वति नियमो पर एक नव्य दरिर हानी है तथा बार्य पर भी प्रश्नसतीय कार्य किया है । यान्स बाव अध्या रिज्ञान के प्रधान रक्ताने से संप्रहें। धातु प्रविधा'नश्मव इनहीं पृत्रव संग्रीक, नैदिन धदेरता, कमन ठया सरकृत के दिविध शरी की नुलना मक मीमामा की गई है। धनव नापाधी वं सूलनात्मव ध्यायरण वी रचना वे साथ ही संबूत का सम्भीर घष्ट्रयन इन्होन मायाघी के मूल को छोजन के दिए किया। बांव न सम्बन्ध वेचा धीक आयाचा के स्थरायात पर भी एक वैज्ञानिक यव सेवन किया है। बाद का सबस बड़ा सिद्धान बादव यह था कि जाया-बिजान के नियम धरती एक विध्यत परिविषे नीतर ही सबि है। ६म समय गर्क जाया विज्ञान का ठात स्वरूप सामन द्वारे जगा दा । जारा व प्रवीतिक भी प्रवास्त तानदी भी विकास विद्वारी के सन्वयन न सांघड पश्च बना थ्या था । सन्द्रन तथा प्रत्यीन भाषाओं के प्रश्चयन के प्रतिनिक्त भाषाको के बताबरण के विकास पहुनुको सका प्रत्यदा की कादकता पर जी

बौटा । हम्बीन्बट महोदय ने भाषा के ऐतिहासिक और तुलनात्मक दृष्टिकीण के ऊपर बल दिया । इस दिल्डकोण के व्यापकृत के कारण उनकी पुलनात्मक भाषा-विज्ञान का पिता कहा गया है। भाषा-विभाजन के समय चीनी भाषा के पाएंक्य पर विकार एकट किया । इस युग के रैक्स, बिम और बॉद भाषा सास्त्री त्रय प्रमृत है। रैक्स ने

किया । उनका महत्वपूष चन्य 'भारतीय भाषा भीर ज्ञान' है । उन्होंने भाषामी के विभाजन का प्रवास सर्वप्रयम किया । उनके बड़े भाई झड़ोल्फ स्लेगेल ने सस्ट्रत धीर संगोत्रीय भाषाक्री की संगोतात्मक घीर वियोगात्मक दी उपवर्गी मे





28 भाषा-विज्ञा

भारत में संस्कृत की देवभाषा तथा वेदों की धपौरुपेय समभा जाता है । इस प्रकार ईसाई प्राचीन विधान(Old Testament) की भाषा को, बौद्ध पालीक ईरवर की प्रथम भाषा मानते हैं बाधुनिक भाषाओं का उद्भव इन्ही से हुझा है खण्डन

(क) ईश्वर की दी हुई एक ही बोली होनी चाहिए थी। ईश्वर-प्रदत्त भाषा प्रारम्भ से विशिष्ट, सम्पन्न, परिमाजित तथा तके युक्त भौर शुद्ध होनी चाहिए थी। परन्तु हम देखते है कि भाषा का विकास भीरे-धीरे होता है।

(ख) मिस्र के राजा सेमेटिक्स के परीक्षण से जात होता है कि एकान्त में रखे गए दो नवजात शिशुम्रो के मुख से फीजियन शब्द वेकीस' निकला जिसका धर्य है 'रोटी'। यह राज्द रोटी लाने वाले प्रहरी के मुख से धनजान में निकल

ाथा। बादसाह अकबर के इसी प्रकार के प्रयोग से बच्चे गुँगे पाए गये। से यह निष्कर्ष निकला कि कोई भी शिशु भाषा लेकर नहीं झाता। २. पात-सिद्धान्त या दिग-डांगवाद (Ding-Dong Theory)-मेश्स-Iर की यह मापा-थिपयक उदभावना घपूर्व है। उसका मत पा कि प्रस्थेक

त का टकड़ा किसी यस्त से टकराने पर एक विशेष कम्यनमय ध्वति करता । वह ध्वनि मन्य ध्वनियो से भिन्न होती है। सृष्टि के बारम्भ में इसी तर की एक विभावना शक्ति मनुष्य में थी। जब वह विसी बस्तु के मध्यकें माता उसके मुख से उस बस्तु के लिए एक प्वति प्रकट हो जाती थी। यह ह नैसर्गिक सक्तियों जो माया का विकास होने पर लुप्त हो गई। विकिन्त लगी के सम्बन्ध में वे ध्वत्यात्मक समिध्यक्तियां 'धातु' थी । सारम्भ से ात्रप्रों की सहया बहुत बड़ी भी। भीरे-भीरे ये ध्वति-रूप मुख्त हो गए. केवल (ac-too बानु तर रहे। उन्हों से भारा की उत्पत्ति हुई। यह सब दर्शन तीर पर्ने में एक रहस्त्रम्य सम्बन्ध मानजा था।

में सम्बद्धार की भाषा के दर्बन की यह भारता किसी ठोम प्रमाण के खण्डन

भागकार पर का अपना पर ही प्राथारित है। मतुष्य के घटर उद्गाविश ग्रान्ति प्रमाव में केवल करतना पर ही प्राथारित है। मतुष्य के घटर उद्गाविश ग्रान्ति मनाव म कवल कराण राज्य जातीय उद्या संस्थित परिवारी से ही पातुची की का कोई प्राचार नहीं है। सांग्लीय उद्या संस्थित परिवारी से ही पातुची की का कार आधार गरा थ। भारती के सनु देती कोई बन्दु नहीं है। सावा के लिए स्थिति है मन्द्र सामानीरमारों के सनु देती कोई बन्दु नहीं है। सावा के लिए



₹. भाषा-विश्वान मोमासा

(१) इस प्रशार के शक्तो का प्रमृतात बहुत बीडा है, प्रमशीना की मेरेजबी के दिनारे तो इत्रा निजन्त बनाय है।

(१' मनुष्य धारनी ध्यन्माश्मर शक्ति के होने हुए पशु-पक्षियों पर मन-सम्बित प्रयोगरहा ?

प्रापुनिक विज्ञान् इस मन को सबैदा त्याम्य नहीं मानते, क्योंकि भाषा में मनेक सम्द भनुकरण के द्वारा उत्पन्न होते हैं।

४. मनोनावानिस्पत्रकतावाद-द्रमे मनोभावाभिव्यक्तिवाद, मनःप्रेरणा-

बाद तथा पूर-पूर-वाद (Pool-Pool) मादि समामो से संबोधित किया जाता है। इस मत के मनुसार मानव से बन्च प्रावियों की भाँति भावायेन के बवतर

पर सुष, दुस, मास्त्रवं, पूना मादि को हा, हाय, मोह, पूह, महह, विक्, धत्, फाई, छि. घादि जैसे राज्य सहज ही निकल जाया करते हैं। ये ध्वनियाँ

मनोवेगी को प्रकट करती हैं। धीरे-धीरे इन्हीं गन्दों से भाषा विकतिङ हई ।

समीक्षा वे शब्द न्यून तथा परिमित सस्वा मे हैं। इन विस्मयादि-बोधक शब्दों का प्रस्तित्व बानव से पृथक् है तथा सभी भाषाची मे एक समान नहीं है। देश,

काल भीर परिस्थित के मनुनार वे निन्त-मिन्त हैं, जैसे छि छि. भीर फाई-फाई। बाबुविक गब्द स्वामाविक व होकर साकेतिक हैं।

६. थो-हे-हो बार--इवे धम-पिहरण-मूलकतावाद कहते हैं। इसके जन्म-वाता न्याइर (Noite) का मत या कि बारीरिक श्रम का कार्य करते समय इवास-प्रश्वास की तीत्र गति से स्वर-विश्वाम एक प्रकार का जन्मन होने सगता है। उस समय बुछ ध्वतियाँ उच्चरित हं कर मानव के क्षम-परिहार मे

सहायक होती है। प्राय: देखा जाता है कि घोत्री बस्त्र घोते हुए 'हिया' या एहा १९ १ कहते हैं। मत्त्वाह धकान के तिए 'यो है हो' कहते हैं। भाषा में इनहीं पहियों कहते हैं। मत्त्वाह सस्या प्रत्यत्व है, घर्ष की दृष्टि से भी कोई महत्व नहीं है।

७, टा-रा-मिद्धान्व समा संगीतवाद (Sing-Song Theory)-टा-टा-जार के प्रमुक्तर मानक काम करते समय प्रनवाने वाले उक्तरण प्रवचनों से



मीगामा

हुई । समीक्षा

सम्बन नया रहा ?

धाएनिक विद्वान् इस मन को सबैदा स्याज्य नहीं मानते, बयोकि

धनेक शब्द धनुकरण के द्वारा उत्कन होते हैं।

५. मनोभावाभिव्यज्ञकतावाद-इमे ्मनोभावाभिव्यक्तिवाद, मन

वाद तथा पूरु-पूरु-वाद (Pooli-Pooli) मादि सजाम्रो से सबोधित कि

फाई। ग्राधुनिक शब्द स्थाभाविक न होकर साकेतिक है।

है। इस मन के मनुसार मानव से धन्य प्राणियों की मौति भावावेग के

पर गुप, दुप, धादवर्ष, पृणा पादि को हा, हाय, घोह, पूह, महह

घत्, फाई, छि: मादि जैसे शब्द सहज ही निकल जाया करते हैं। ये

मनोवेगो को प्रकट करती हैं। धीरे-धीरे इन्हीं शब्दों से भाषा ि

ये गब्द न्यून तथा परिमित सहया मे हैं। इन विस्मयादि-बोधक शब् म्रस्तिस्व वास्य से पृथक् है तथा सभी भाषामी मे एक समान नहीं है

काल और परिस्थित के मनुनार वे भिन्त-भिन्त हैं; जैसे छि.-छि: भीर

६. यो-हे-हो बाद---इते श्रम-परिहरण-मूलकतावाद कहते है । इसके दाता न्वाइर (Noire) का मत था कि बारीरिक श्रम का कार्य करते

इवास-प्रकास की तीत्र गति से स्पर-तित्यवीं में एक प्रकार का कन्यन सगता है। उस समय कुछ ध्वनियाँ उच्वरित होकर मानव के थम-परिह

सहायक होती है। प्राय: देखा जाता है कि घोबी वस्त्र घोते हुए 'हिय

'छियो' कहते हैं। मत्लाह थकान के लिए 'यो हे-हो' कहते है। भाषा में सख्या शत्यत्व है, धर्य की दृष्टि से भी कोई महत्व नहीं है। ७. टा-डा-सिद्धान्द तथा संगीतवाद (Sing-Song Theory)—टा --- रावे मामा ग्रनुशाने वाले उच्चारण मध्यव

(१) इस प्रकार के शब्दों का बनुवात पट्टत योज़ है, बमरीना की के किनारे तो इतरा निपाल ग्रमाय है।

(१' मनुष्य परनी ध्वन्यात्मक सक्ति के होते हुए पशु-पक्षियो प



व्यक्त-ध्यति-सवेशों का जो व्यवहार होता है उसे भाषा नहते हैं। व्यक्त और श्रीता रोगों के विष्यरों की श्रीत्व्यवित ना सापन है। दौर इससे लागानिवत होते हैं। भाषा समाज-गायेश वस्तु है। समाज में श्र कार्य-गायालन के लिए दासका प्रयोग किया जाता है। व्यवहार स्पाम सार्यक च्यति-गवेशों का मसाहार है। व्यावक प्रयोग आव-शिता को साध-गति-दारित वा सदेन, स्वर-विकार, भाव-भीमान, वस और प्रवास माधा हो कहा जायेगा परन्तु अधिकात रूप में समाज द्वारा स्वीहत व्यवह्त च्यतियों के लिए हो भाषा का प्रयोग किया जाता है। वपु-गवी में भो भाषा सिनक प्रयोग के पास को प्रयोग कहा स्वीतों को भी मं कहते हैं, त्रीय गूने के पास भाषा नहीं है। स्वसाय प्रयोग सामाय सामाय की हो । वे साम स्वीत हो । ससार को प्रयोक भाषा व्यवहत्त होता है। सामान्य स्वास सामाय मही है। हसका प्रयोग सामान्य सामा की हो । वे

30

भाषाधों को कुछ परिवारों में विभाजित कर दिया गया है। प्रत्येक परिवा दे भाषा-की हैं। प्रत्येक वर्ग में कुछ सजातीय भाषाएँ है। प्रत्येक भाषा-दुन्तर्गत घनेक विभाषाएँ हैं धीर तदनकर बोलियां स खाः भाषा, विभाय तेर बोलियां ही भाषा-विधान के प्रस्ययन का प्रमुख विषय हैं। दिशी सबसे प्रथम हम बोलों को लेते हैं। बोलियों के एक प्रकार से समुचित वकात का नाम ही विभाषा तथा भाषा है। बुलरे एक में हसे पह बोली भी

के मर्थ में भी भाषा प्रयुक्त होती हैं; जैसे उसकी भाषा बुन्देली है। भाष विज्ञान के पाठकों के लिए भाषा का महत्व कम नहीं है। संसार की समस्

ोशी
सबसे प्रथम हम बोलों को लेते हैं। बोलियों के एक प्रकार से समुचिव
बहात का नाम ही विभाषा तथा भाषा है। बोलियां में प्रकुत्त होने बातें
भाषा के स्थानीय रूप को बोली बहुते हैं। दूसरे रूप में इसे परू बोली भी
हिते हुँ बयोंकि यह पर मा समाज में भाजों के माशन-प्रशास के काम माली
है। युं की मासों में यह साहित्यक नहीं कही जा सजतों। दस्ता क्षेत्र
होता है। उठ भोलानाय दिवारी ने बोली की परिभास रूप प्रभार से
होता है। उठ भोलानाय दिवारी ने बोली की परिभास रूप प्रभार से
होता हैती है। अपना के एक ऐसे सीनित संत्रीम रूप को बहुते हैं, जो
है—बोली दिशी भाषा के एक ऐसे सीनित संत्रीम रूप को बहुते हैं, जो
है—बोली दिशी भाषा के एक ऐसे सीनित संत्रीम रूप को बहुते हैं, जो
है—बोली दिशी भाषा के एक ऐसे सीनित संत्रीम रूप होती है, किल्तु
उद्ध साथा के सीनितिद्या समा स्वार्थ संत्रीय स्था से मिल्ल होती है, किल्तु



भाषा-विज्ञ 32

लुप्त हो जाने के कारण महत्वपूण समकी जाती हैं ती भाषा कहलाती हैं, या 'बाहर्द' तथा 'मुण्डा' भाषा । साहित्य की श्रीष्ठता के कारण बोलियां महत्वपूर्ण हो जाती हैं। यथ

वगला । ३. धार्मिक श्रेष्ठता से भी बोली का महत्व वढ जाता है। 'राम' भौ

'कृष्ण' की भक्ति के प्रभाव से सबधी भीर ब्रज को भ्रधिक महत्त्व मिला तमा सदियो तक साहित्यिक भाषाएँ रही । ४. विक्रमित समाज तथा बोलने वालो के कारण बोली महत्वपूर्ण वन

जाती है। यथा धर्म भी धान एक मन्तर्राप्टीय भाषा है। राजनीति वोली के प्रमुख एवं मतुःबपूर्ण होने का विदेश कारण है। राजनीति के केन्द्र की बोली विकसित तथा समृद्ध होकर भाषा का रूप प्रहुण

कर लेती है। दिल्ली-मेरठ के समीप की खड़ी बोली ने भवधी, बज जैसी विक्रांतित भाषाची की दशकर राष्ट्र-भाषा का पर प्राप्त किया है। मन्य

उदाहरण वेरिम की योच तथा लग्दन की ग्रंपी जी बोलियाँ हैं। भाषा-दास्त्री के निष् योनी का अपेक्षायुक्त अधिक महत्व है। साहित्यिक

मापा से भाषावेता के लिए बोली का धाधक महत्व है। इसका स्पष्ट कारण यह है कि बोनी की स्थिति स्वश्भाविक तथा शाइतिक होती है और उपका

विकास भी स्थानाविक होता है । साहित्यिक भाषा सदैव स्थाकरण के नियम तथा उपनियमों में बंध जाती है घोर जनकी नैगणिक गति घोर रतामादिक

विक्राम रक बाता है। साहित्यक भाषा बन्धन में बंध कर धानी गति यह कर देती है। स्वाकरण के दुई बयन के कारण भाषा का प्रशाह एक नाता है और इस पहार से भाषा की पहारि मर जाती है। परिवर्तन बहुति का स्थित है।

पही दरिवर्तन देश भारा का नहीं पन्त हुया । गमान परिवर्तनवी र है धनः एक बार्चार्नवर्द्द मी परिवर्तनचीत मनाब की त्यानाविष्ठ बाला का सामान पर । बसाय हो है, बिनने नह भागा के नैगांड का का मध्यान कर भागा की

करण र तर्ग प्रस्त दिवाल इं सम्बन्ध न शांतिक हा जाव घीट घाड -me # faitt \$7.561

प्रश्न द-भाषा परिवर्तनशील क्यों कही जाती है परिवर्तन के मुख्य-पुरुष कारणों को विवेचना उदाहरण सहित कीजिए।

धयवा

भाषा के बाह्य तथा झाम्मन्तर रूपों में विकास झौर परिवर्तन के कारणों पर प्रकास डालिए।

ससार के कण-वण में प्रतिपत्त पश्चितंत हो रहा है। प्रत्रेक वस्तु ही क्या मानव सरकृति, सम्यता तथा दर्शन में भी धनै -शनै परिवर्तन दृष्टियत होता है। विसी बस्तू के परिवर्तन का हमे भामास मिल जाता है क्योकि वह परिवर्तन प्रति सी घ्रहोता है परन्तु कभी-कभी इसका परिवर्तन कालान्तर मे दृष्टिगत होता है। किमी भवस्या पर हम उसके भाभास का दर्शन कर पाते हैं। परिदर्शन के इस दााद्यत चक्र में भाषा भी घन्तहित है। घतएव भाषा में परिवर्तन ही उसका विकास है। परिवर्तनशीलता की प्रभविष्णुता श्रवुक सीर ग्रमीय है। यह विकास भाषा के समस्त रूपों में होता है। ध्वनि, पद, रूप, षयं ब्रीर वाक्य भी भाषा के परिवर्तन-चक्र के बरे (Spokes) है। इतमे भी पक की गति के साथ परिवर्तन होता रहता है। भाषा परम्परागत वस्तु है। उसनी धारा प्रवाहित तथा परिवर्तनशीय होने पर भी स्वाबी घीर नित्य है। वह भरने एक उड्नम स्यान से मृष्टि के भादिकाल से लेकर भव तक एकता के भाषार पर भविद्धिन रूप से बह रही है। कालान्तर में यह भाषा भपने मादि स्वरूप से इतनी परिवर्तित हो गई है कि उसके प्राचीन घीर मर्वाचीन रूप में जनीन-भासमान का भन्तर दिसाई देता है। कहा वैदिक संस्कृत भीर **ब**ही बाज की हिन्दी !

भाषा के रहा परिवर्तन को ही विकास कहते हैं। वैवाकरण इने ह्रास्त्र स्वर्तात तथा सप्त्रप्रट या स्थि हुए इन के अस ने दुकारते हैं। परन्तु भाषा-विज्ञानवश्या सपती खार दृष्टि के बारण विकास ने क्षा में निस्तृतित करें। विवास वा पर्स भाषा को जन्म जा परिस्तृतित स्वरद्दानही है, परन्तृनवैतिस का विशास मात्र है। दिन द्वार मानव को प्रदश्यों को परिसक्ता का विशास होता है एसी प्रकार भाषा को दक्षामी का निकास होता है।

भाषा-विज 3 6

धराहरमार्थं उपाप्याय का 'मर्र' रह जाना पत्रनति न होहर भाषा-पास्त्र र यध्य से विसाम मान ही है। भाषा में परिवर्णन बधिरावेदात पुरस्त्रासा तथा जन-मनर्थ की विभिन्त

फे बारण होता है। भाषा की बिका मानव तथा समाब के मंदर्ग से निवत है। समय-राम से यह परिवर्शन भीरे-भीरे होता है। एक भारतीय विसु मर्बें महिला के सपने के कारण भवें की ही बोतेगा। सनवें तथा सम्बर्ध की पर भाषा साहित्यक न होकर नर्ब-नाधारण की भाषा होती है किने बांती की संता दी जाती है। प्राचीन नवंशाधारण की भाषा में हो हिन्दी भाषा की उत्पत्ति हुई है। काल-भेद्र नया धन्य गरकृतियों के नगर से से उसके मूल स्र में बन्तर भवरय था जाता है। यह एक वर्तनान तथा है। भाषा नित्य है तया

निरम्तर परिवर्तित होती रहती है। भाषा के विकास या परिवर्तन के कारण

भ पा-पास्त्रज्ञो ने भाषा-सम्बन्धी इस विकास के कारणों के छोजने ना प्रयाम किया है। प्रवत्ति तथा भाषा के भाषार पर इन को दो बगों से विभक्त किया गया है। एक बान्यन्तर वर्ग तथा इसरा बाह्य वर्ग।

(क) धाम्यन्तर वर्ग

शास्यन्तर वर्ग के भन्तर्गत भाषा की स्वामादिक गति नया प्रयोक्ता की हारीरिक तथा मानसिक योग्यता से सम्बन्धित कारण बाते हैं। वे कारण

祖言:--(१) प्रयोग से विस जाना—प्रधिक प्रयोग के फलस्वरून ग्रन्दों में जो वरिवर्तन होते हैं उन्हें 'स्वयभू' कहा जाता है। इसमे सबद स्वयमेन तथा स्वय संचितित इति के द्वारा विकसित होकर छोटे तथा सरल होते हैं। यह परि-वर्तन स्वानाविक होता है। यथा-स्वया का तू, क्तो (Know) का 'नो'

'मास्टर सहव' का 'मास्साव' मादि । (२) बसाधात-जिस ध्वनि या सर्प पर मधिक वल दिया जाता है वह भूत प्रतियो सा सर्घों को सातो निर्वत बना देता है या नष्ट कर देना है।

अपन अपन पर पर देश है। इससे वर्ण सभी सुन्त वा श्रीसहीत हो जाता है। इस कारण भी भाषा-विकतित

भाषा-विज्ञान 34

होती है। जैने भाम्यान्तर में न्यं पर बस है यतः भारम्य का 'श्रं समान्त होकर 'भीतर' यन गया। बाजार में बजार तथा उपाध्याय से 'भा' इस प्रकार के रूप है। सस्कृत के भांडार तथा भड़ार दो रूप बलायात के ही फतस्वरूप हैं,

(१) प्रयत्न लादव या मुख-सुख-यह कारण ग्रत्य-त महत्त्वपूर्ण है वयो-कि भाषा में ६० प्रतिशत परिवर्तन इसी के बाधार पर हाते हैं। यह मानव की सहज प्रदृति है कि बहु योड़ें से प्रयत्न से घांचक कार्य की मिद्धि करना चाहता है। इसी प्रवत्न लापव (कम प्रवान) के प्रधोत के द्वारा व्यक्ति सरनता के लिए गन्द को लघु या सहज उच्चरित बना डायने है। इस तरह शब्दों का दीर्घाशास रुगसक्षिप्त धौर सरल रूप में परिवर्तित हो जाता है। उच्चारण यी दिप्ट में सब्दों को सहज भीर म रूर बना देना ही 'मूल-सूल' है। इस प्रकार प्राय व्यक्तिवाचक सञ्जाये, सर्वनाम तथा प्रतिवादन के धव्य विकसित होकर लघ रप धारण कर लेते हैं।

धान (व्यजन-तोप), स्राउट से दुरुहाउट, कुता से किरिया (स्वरागम), प्रस्थि से हुई। (ब्यवनायम), बाराणसी ने बनारम (बर्ण-विषयव), शक्रंरा से शहकर, बलश्टर से कलदूर (ममीकरण), काक से काम (विषमीकरण), उट्टू से ऊँट, स्वास से सौत (धरारण धनुनासिकता) धादि ।

उदाहरणार्व-धनाज से नाज एशादश ने स्वारह (स्वर लोग), स्थान से

(४) भः वादिरेक — यह भी प्रयत्न लाइव का एक प्रकार से भेद है। भाव के फाधिक्य तथा स्लेहानिमूर्ति से धर्मन का रूप बिहुत हो। जाता है। इसमे

स्तिश्च तथा दामस्य प्रेम का धिषक प्रयोग हाता है, 'इंग्ल का करहैया' या 'कान्हा', 'पवि' का 'पदयो', बाँह का 'पहियां' मादि । () मानकि हतर - भाष, प्रयोक्ता के माननिक स्तर से परिवर्तन होते

से विचारों में परिवर्तन हो जाता है । दिबारों की धर्मिन्जबना भाषा के माध्यम से होती है। धन भाषा में भी परिवर्तन हो जाता है। किसी जाति मयवा देश की मान्धिक मबस्या की उपवता नया निम्नता की बल्पना से भाषा में बन्तर हो जाता है। यथा-अर्मन विद्वान् अर्मनी को बच्चेजी से बचिक मोप्टब-समुक्त तथा विति-सील मानते हैं। बगाली भाषा समृत्य व्यवनी की

हीनता के शरण मधुर तथा स्त्रीत्व से मुन्दर है। यह मार्नासक प्रवस्था का

१६ मारा-शियान

पानक है कि महाभी कटिन ने कटिन स्वयन को सीहाता ने महानट कीच भारत है।

(६) मनुकरण की मनुषेता—भारत एक वाग्यस तथा स्विता समित है। मुक्रसण के क्रास मनुष्य भारत को गीराता है। कास्त्र तथा सुद्ध सनु-कर मुक्त किस्तार में भारत में रहुनाव परिवर्षन होता है वरन्य सहस्य की मनुष्या में उपभारत में सन्या सा सात है और करायक्षत स्वति में परिदर्शन ही सात है। यह मनुष्ये तथा सनुद्ध स्वतुष्ट की बृद्धान का साहद स्वति मन्द्र

बाठ-दम पोनी के मनन्त्रर होता है। इसमें एक भागा विश्वात में एक वरें प्रत में विक्रमित या पश्चिमित हो जाती है।

धनुकरण की धपूर्णना निष्म कारणों में होनी है--(क) प्रारोरिक विभिन्नता--जन्तरण धन तथा धास्य-प्रदानों के समान

प्रस्तार माया में परियतन हो जाता है। एक ब्यांत का सारीर प्रस्त व्यक्ति के छारेर से गठन तथा सस्यान को बृष्टि से मुचह होता है। वस्तुमार मस्तिक के मुझाब प्रधा उच्चारण यंग की मिलता से 'व्यक्ति-उच्चारण' में भी क्वार या बाता है। कुछ प्रमु ने ने देवका घड़न भी क्वा भीर कहा कि भारतीय उत्तान मूरीश ने पुत्र भयें में बोतते हैं। परन्तु भाषा के बठन प्राप्त में कोई भिरत हो पेदा होता। यह निष्यत्त है कि चीड़ी दर चोड़ी भाषा में मिलता प्रदास मा बातो है।

(स) प्राप्त की कमी—यह प्यान की कमी धाताय तथा प्रमास्वत होती

न होने के कारण से मनुकरण पूर्ण तथा युद्ध नहीं हो पाना मौर नुख कान के

है। उदित ध्यान न देने से उच्चारण के धनुकरण में भिन्तता था जाती है जो शतान्तर से भागा-मीरवर्तन का कारण वन जाती है। (त) श्रीशंशा तथा सतान—इन दोनों के कारण से भी धनुकरण उचित हम से पूर्व नहीं हो पाना है। इसके सत्वर्तन देशी-विदेशी दोनों ही पान्य सन्तर्

हन से पूर्ण नहीं हो पाना है। इसके सन्तमन देशा-नवदार वाना है। यद सा आते हैं। उदाहरनार्थ—देश से देश (ग्र>स), तृष्णा का तिवना (प्र>स) नुष दां मुन, कर्ण का दान (प्र>न), शिक्षा का विस्ता, शनिय का शर्था, शुंग दां मुन, करी तन, ऋषि का शिक्ष (क्ष का रि) सादि के साथ ही साथ सजान तथा सरिशा के कारण भी हो जा? मापा-विज्ञान રેછ

हरण इजन, रायवरेली (लाइब्रेरी), रपट (रिपोर्ट),(लाई) लाट, टेम (टाइम) सिंगल (बिंगन्ल) मादि हैं।

(ख) वाह्यवर्ग

द्वालनी है।

बाह्य वर्ग मे बाहर से भाषा पर प्रभाव डालने वाले तत्व झाने हैं। (७) मीतिक बातावरच - एक परिवार मे धनेक भाषाएँ भीर एक भाषा

- में मनेक बोरियाँ बनने का प्रभावशील कारण भौतिक तथा प्राकृतिक वातावरण है। शीत तथा उप्णता की न्युनता तथा ग्राधिक्य से जीविका, स्वभाव, रहन-सहत. प्राचरण प्रादि पर प्रभाव पहला है और भाषा इन सभी वस्तुत्रो पर आधारित है। मैदान मे घ बागमन सरल होने के कारण तथा सम्पत्रं के कारण भाषा में एक रूपता रहती है जबकि पहाडी भागों में ग्राबागमन की सुविधा त्त्या सहज सम्प्रकं के धभाव में धनेक भाषा तथा बोलियों का विकास पृथक-प्रथक रूप से होता है। बन पर्वतीय प्रदेश में घोड़ी दर पर ही भाषा में अन्तर पढ जाता है। उरबाऊ भूमि में बाम करन वालों की भाषा प्रधिक उन्नत तथा समृद्ध होगी धौर उसने एक प्रकार की दार्शनिकता, गम्भीरता, तथा व्यजना रहेंगी, क्वोंकि खाद्य सामग्री क ब्राधिक्य स लोगों को उन्तति करने का समय मिलेगा। जैसे भारत भीर यूनान में भाषा की गूडना का दर्शन होता है। इनके विध्य पर्वतीय या बगली लोगों की भाषा में इस प्रकार का विकास नहीं होता। यत भौतिक परिस्थितिया भी भाषा के विकास पर प्रभाव
 - (६) सांस्ट्रतिक सम्मितन तथा प्रमाव-सम्द्रति समाज का प्राण है। भव इसके प्रभाव से नी भाषा में परिवर्तन था जाता है।
 - (क) किंं। सप्ट की सास्त्रतिक सस्यामी से प्राचीन सब्दो का पूनरा-
 - यमन हो जाता है। धन परिणामन जिवार नथा सनिव्यक्ति-रौती मे परि-वर्तन हो जाता है। यह ररण्ड है कि १६वी प्रताब्दी से नेवर आधुनिक काल पर्यन्त हिन्दी भाषा में घार्च-प्रस्कृति के विशास के बारण धनेक सरहत राष्ट्री ने धाना धनिट स्थान बना निया है।
 - (ख) ध्यविद्यों के महानू व्यक्तित्व के द्रभाव से भाषा में परिवर्तन हो याता है। कर्ब, तेखरू, नेता तथा बिहान् पुरुषों के द्वारा प्रयुक्त प्रनेक पहर

মাণা-বিস

दास के बाध्य ने उत्तरी भारत को भाषा, सनाज तबा पर्स पर भनिट अभा शना तथा उनकी हो से का बाहरण बनेक परवरी रहियों ने दिया ह (म) सोस्ट्रेडिड सस्मित्रव – क्योन्क्यों दी विक्रित महर्शायी का मे म्बासर, पर्वत्रपार, सत्रनीतिक हारयो से हा आधा रे मीर उनका मापा उप श्रमी पर पर्याप्त प्रमान पर्वत है। भारत में ही सार्ग्यत-प्रमित्र, प्रीति-मार्ग षार्व-यवन, भारतीय-मुगनवान तथा भारत-पूरोप के मारहाहरू मस्मितन हिन्दी भाषा को मनिकान एक में परिवर्तिक कर दिया है। एशहरदार्थ हिन्दी में गम (मान्द्रिक) नीर (इविद्र), दान (ववन), हमोत्र वाबार, (तुई) मार्गि

(१) शामाजिक व्यवस्था-भाषा को पश्चितित बरने का एक प्रमुख बारण सामाजिक तथा सबनैतिक परिस्थितिया भी हैं। बनाति तथा एउ के समय में भाषा में इताति से परिवर्तन होता है। सामाजिक पार्ति दा परि-यर्वन प्रत्येक देशवाधी के विचार तथा संस्कृति में पश्चितन ला देता है। भाषा गत रूड़ियाँ नुष्त होकर बुख नवीन सन्दरस्वना का धीवनेश करती हैं। समय भी न्याता हुमें भाषा के सक्षिप्त रूप की भीर माइप्ट करती है पनेहरों, सीटी, नेपा प्रादि इसी प्रकार के रूप हैं। समाज नवा राष्ट्र की शांति के समय भाषा में स्थिरता नानित्य तथा एक प्रकार की कतात्मकता या समावेश रहता

(१०) भाषा भाषियों की उन्नति-राष्ट्र या देश के जन-बीवन के उन्नन न्तर के बारण भाषा में विकास हो जाता है। आधुनिक युग में वैज्ञानिक तथा भीतिक उन्नति के कारण से नई उन्नति के धनुरूप नई मिशव्यजना प्रणा ते का विकास हो जाता है और प्राचीन राज्यों में भी नवीन सर्थ का समावेश हो जाता है। दूबरे मधीन, रहत-सहन के साधन तथा मन्य वस्तुमा के निर्माण के कारत नये यहरो का निर्माण हो जाता है। भारतीय भाषाएँ भी वैज्ञानिक जनति के फतस्वस्य मधिक व्यापक भीर जनत हो रही हैं।

(११) साहस्य - शद्भ भाषा के मान्यतर तथा व स दोनों ही नारणों (१६) भारत है। मापा परिवर्तन में साबूद्य का पर्वाप्त महत्व है। मानव में रहा वा सुनता है। मापा परिवर्तन में साबूद्य का पर्वाप्त महत्व है। मानव

₹1

भाषा को र्रानी भीर वास्पन्यत्व पर भावना अभाव आतते हैं। वीस्तामी गुनन

न सस्य मा गर्ने हैं।

1 0

स्वभावतः सरक्षता ना भ्रंभी होता है। उसना यह स्वभाव भाषा में भी नार्यं करता है। यह एक शब्द को किसी धन्य स्टब्ट की सद्द्वना यह रूप समानता के मुक्त दास नेता है भीर इस प्रकार सब्द के मून सन में परिवतन है। जाना है। सामे यह पर्रम्वनित कर प्रचित्त हो जाना है। जैस सन्द्रन में द्वारमों के ब्रह्म पर प्रदेश में प्रचारण जमा निता है। सेनीम और संनातीम की महुनातिक्ता पेनीम भीर पैनालीम के सद्द्या पर ही साक्षार्य है। प्राचारण के साद्द्रय पर पोवाल पत्र निता निता में माद्द्य पर मुंग हो गया है। माद्द्य समृति के सास्द्र पर सन्द कहार में भ्रमन नाय करना है।

उपयुक्त दृष्टि-शिर्दुधा के झाबार पर ही भाषा का विकास होता है। विकास का प्रभाव छ न होकर परिवनन साथ ही है। भाषा-गारती विकास का पर्य संप्या की सदिस सबस्या सनुस्त निन करते है।

प्रदर्ग १ — दो भागामों के परस्वर मदाय को निर्धारण करने के प्रमुख हार्थों का उन्तेख करहे हुए भाषा-विकासन की विभिन्न पञ्च नयी के गुण-दोयों का जिल्लेस क्रीहर्म ।

यह यसार परवानक नाया तथा बीतिया का सानर है। पारी भी ही ही पर भाषा में पिकटन दूषिणात हाता है। कावन भारत का मान से पारी बीत से परि बार का को पारी बार के पहुंच परि जा राजा में सामार्थियों ने समार में पारी बार का पार्थ के पार्थ को सामार्थ की है सामार्थ के पार्थ को सामार्थ की सामार्थ के पार्थ को पार्थ को सामार्थ की सामार्थ

सस्यर में भाषा-विभावत की अनुस पुळिल्या की प्रणाय कर है। प्रभूत भर से प्रमुख प्रापास प्रथा जिल्ला है—

(१) महाजीव के बाधार पर जी बनेक विद्वारण जान करें जान का त निया है—बैंस एडियाई भाषाते जुशबंद भाषा १००० पर नि

स्मावित दिया व ना १-वेड





- -



सस्य का योग रहता है। इसमें बाब्दों का स्वतन्त्र अस्तित्व नहीं है। वे प्रत्यय, विभक्ति पादि से सनूबन होकर बाबव ने प्रयुक्त होते हैं। मनार की प्रधिकाश भाषाएँ योगात्मक है, योग के प्रकृति के प्रमुवार इन भाषायाँ के तीन विभाग किये जा सकते हूँ -प्रश्निष्ट, श्लिष्ट घोर प्रश्निष्ट ।

(क) प्रश्लिष्ट-योगात्मक (Incorporating)

इस विभाग की भाषामीं में सम्बन्ध-तरब तथा धर्य-तरब को मलग नहीं किया जा सकता । जैने मस्कृत 'ऋजु' से 'मार्तर' या 'शिजु' से श्रीवन मे मर्थ-तस्य तथा सम्बन्धन्तस्य का भभेद योग हो गया है। इनको समास-प्रधान भाषाएँ

भी कहते हैं बबोकि इनमें अनेक अर्थ-तत्वों का समाज को प्रक्रिया से योग हो सकता है जैसे राज पुत्र गण विजयः । इनके भी दो भेद किये गए हैं-पूर्ण प्रदिलप्ट भीर भाषिक प्रश्लिष्ट ।

सम्यन्ध-तस्त तथा धर्य-तस्त्र का मीग इतना पूर्ण रहता है कि शब्दों के संयोग से बना हुमा एक लम्बा-सा घन्द ही पूरा चान्य वन जाता है। ग्रीनलैण्ड तथा

पूर्ण प्रश्तिष्ट योगात्मक भाषायो (Completely Incorporative) मे

दक्षिणी समेरिका की चेरो की भाषा इसी प्रकार की है। चेरो की भाषा मे-नातेन - लाम्रो, म्रमोखांल - नाव, निन - हम के सयोग से 'नाधीलिनिन' दाब्द बन गया जिसका अर्थ 'हमारे पास नाव साधो' है। इस प्रकार ग्रीनलेण्ड की भाषा में 'ब्रजिलसरिब्रतोंरसु ब्रपोंक' (वह मछली सारने के लिए जल्दी जाता है) धर्जलसर (मछली मारना), पेवर्जोर (किसी काम मे लगना),

विन्तममर्थोक (वह शीघ्रता करता है) से मिलकर बना है। रात्रनाम तथा किया के मेल में किया लुप्त होकर सर्वनाम का पूरक बन जाती

ग्राधिक प्रश्लिष्ट योगात्मक भाषाची (Partly Incorporative) मे 31

बास्क भाषा में ---दकार कि स्रोत ≃में इसे उनके पास ले जाता ह । नकारम् = तू मुक्ते ले जाता है। हकारत=मैं तुम्हें से जाता हूं।

भारतीय नायाओं में भी जबाहरण दृष्टका है— गुजराती मे—'मे कहा जे' का 'मकु जे' (मेने वह कहा)।

(ख) दिलप्ट-योगारमक (Inflecting)

विभवित प्रधान, संस्कार प्रधान, विकिश प्रधान (Inflevional) भी द गी के नाम है। इन भाराधार्थ में सम्बन्ध-नन्त के योग में धर्म नन्त कुछ किन न हो जाता है किए भी सम्बन्ध-नन्त्र की अन्तक खनग हो मानूम पर्यों है। विषे संस्कृत में बेद, नीर्म, इनिहान नदा पूर्ण न में 'इन' प्रयान विद्यू नीर्मन, ऐतिहानिक धोर भौगोतिन धारि। यन्त्रव में परिणामन वेद धारि र में भी विदार धा गया है। इसमें कारन, बचन धारि ना मन्द्रव विभवित हारा होजात है। इस वर्ष की भारामा नमार म सर्वीनन है। मानी, हामा धोर भारीपोय परिवार दुनी विदास चात है।

दिलस्ट भाषाक्षी के भी दो उप विभाग है—(१) ब्रन्तमृती तथा (२)बह्मंसी।

सन्तर्भुदी दिवार (Internal Inflectural) नायामा संवारं हुं। भाग सर्पनाय के बीच से पूम्मिल वर गहन है। अग्बी भागा सकार-पर्यापन होता है जो स्थानी संभाग पुन्न सिक्य गहन है। हुं तुन्न (तिन्तर) सल्तमु पी दिभावित्री स्थापन के बिताय, बांग्य (निजन यथा) हुं ने पर्यापनी प्राप्त के बिताय), स्वार्य साम्य बना है। इसी प्रशास व ला (साम्य) पर्यापनी है। एही (मून) बाजिन (साम्य यथा), कि द्रारा व स्थापना संघ्य पर्यापनी के प्रशास व

यसाह । धाले इस घन्तमुँ की के बो ओड है

(१) संधोगासक (Seatherse) । धरना धर्मार समारत सामाय का प्राचीत कर गणामानक पा। द्यारा व धन्ना त एकृपय संस्थे घर ४ रणात की धावस्थान संगी।

(०) विद्याल मक (finalters) — यह मध्याल वह आदान ०० वर विद्योग्त भव हो उद्दा है। शहुबह राष्ट्रा का १०४५ का १९३० ४ १४० ब्रावस्थ्य संस्कृत है। हिंदू भारत संबद्ध कर व्यवस्था दशहूँ हुए। ह

करियुं को समाद (Internal Internal)—भाषाओं न विकास का

भाषा-विज्ञान तत्व का योग रहता है। इसमे शब्दों का स्वतन्त्र धस्तित्व नही है। वे प्रत्यय,

विभवित ग्रादि से संयुक्त होकर वाक्य में प्रयुक्त होते हैं। ससार की ग्राधिकाश

भाषाएँ योगात्मक है, योग के प्रकृति के ब्रनुसार इन भाषाब्रो के तीन विभाग किये जा सकते हैं -- प्रश्लिष्ट, श्लिष्ट ग्रीर ग्रश्लिष्ट । (क) प्रश्लिष्ट-योगात्मक (Incorporating)

इस विभाग की भाषात्री में सम्बन्ध-तत्व तथा अर्थ-तत्व को अलग नहीं किया जा सकता । जैसे सहकृत 'ऋजू' से 'झार्तव' या 'शिजू' से श्रीशव मे अर्थ-तत्व तथा सम्बन्ध-तत्व का सभेद योग हो गया है । इनको समास-प्रधान भाषाएँ भी कहते है बनोकि इनमे अनेक अर्थ-तत्वों का समाज की प्रक्रिया से योग हो

सकता है जैसे राज पुत्र गण विजय:। इनके भी दो भेद किये गए है--पूर्ण प्रश्लिप्ट ग्रीर भाशिक प्रश्लिष्ट ।

पूर्ण प्रश्तिष्ट योगात्मक भाषाम्रो (Completely Incorporative) मे सम्बन्ध-तत्व तथा धर्थ-तत्व का योग इतना पूर्ण रहता है कि दाब्दों के संयोग से बना हुमा एक लम्बा-सा शब्द ही पूरा वाक्य बन जाता है। ग्रीनलैण्ड तथा दक्षिणी समेरिका की चेरो की भाषा इसी प्रकार की है। चेरी की भाषा मे-नातेन = लाम्रो, अमोद्योल = नाव, निन = हम के सयोग से 'नाधीलिनिन' दाब्द बन गया जिसका अर्थ 'हमारे पास नाव लाखो' है। इस प्रकार ग्रीनलेण्ड

की भाषा में 'ग्रजनिसरिक्रतोंरसु अर्थोक्' (वह मछनी मारने के लिए जल्दी जाता है) अउलिसर (मछनी मारना), पेप्रवॉर (किसी काम मे लगना). पिन्तम्पर्पोक् (यह शीझता करता है) से मिलकर बना है। श्वादिक प्रश्लिष्ट योगात्मक भाषाची (Partly Incorpor ti सर्वनाम तथा किया के मेल में किया लुप्त होकर सर्वनाम का पूरक हूं

1 & बास्क भाषा में---दकार कि ग्रोत=मैं इसे उनके पास ले जाता है।

नकारमु = तू मुक्ते ले जाता है। हकारत=में तुमें ले जाता है।

माया-विज्ञान

सेव इनमेह - धपते की प्यार वरना ।

(ग) चस्त धोगासक या परप्रायय प्रधान (Suffix Arglat 101) -इन भाषण्यों में प्रत्यय का यंग चात में रहता है । प्रराल गण्या जिस कुल की भाषाएँ इसी श्रेगी ती हैं। प्राटण = तुरी रे =गा = गा।

ग्राचीर - प्रहिच्छा एवर्जेज रहा मेरे छर। बन्दर में स्रदेश राय नारे प्रवरत र मिन्दे हैं।

(प) पुर्वान्त सोशाक्ष्य – प्रश्व क्षेत्रप्रकारण जिल्हा प्रस

भी हें या है — येवा च्यतिना की स्वर्णमाप्त में — स्वक स्वारा

जस्तक मेरारा ।

ज-मनक-त मैं तरी द्वात सरता "ः।

(5) Çun yazı germ (Pertulle Argin neel- and min

भोगात्मकत्वा ध्राप्रोगात्मकक्षा स्थापी स्थापी है। राजाक जानी स्प्रको नेपद एक बढाई बीच की जाया गाएकी कर की है। गांध्य जाना गांध

योगात्मक तथा संबद्ध-प्रय प्रधान है। इस यथीं करण की उपयोगिया - प्राथित कार में गर्म गर्म र एक

में प्रशिष्ट स्वत्रस्थात ता ज्ञात रह स्वत्र है । इत्या का नाम यम है। ध्यादहरिक द्वान का गाम कि न न न । । । । हो सरी है। भाषा का उत्तर राज स्थला धीरा 🕠 🗉 🥏 गहायमा मिल संदर्श है। परन्तु, या चंड ६० ३ - ३ - ३ भावतर गुण पश्चितन-११७०० है। बहा प्रस्ता क

मेपरिवर्तन हम रहे हैं। एक हा अध्यास अन्त २००० । १ ०० वन मिलने हैं र परिवासस्य स्याद सन्त नाय लेलन कर स भा पाई पारस्पृतिह राज्ञाम नहा है। विच क प्रथ न वर 💎 🕫 ६ - ६-

में क्षेत्र प्रकार अपाएँ सग्रात है। देश दक्षि धीर १००१ र १००१ वर भाषामा में एतिहारिक सारव न होते हुए भी इनका कर न कर के मा पर गढ दी वर्ष में रखा है जो बेझानिक नहीं हैं। परन्तु इनना निरंबंद है कि क्षा किन्नु नक

वर्गीकरण भाषा के विकास-कम को समक्षत्रे में सहायक है। माया जसकी नित के बोधार्च इवका योग महान् है। संयोग से वियोग म योग सम्बन्धी विकास का ज्ञान इन वर्गी करण से यथेप्ट मिल जाडा वात सम्बन्धा (बहान वा सात केर व्याक्तरण च ववट १००० ज मनान समरीको योजियाँ म्रादिस मानव की भागा की छोतक हैं। ^{५६त} ११—भाषाभी का पास्वारिक वर्गोकस्य किन सिद्धालों : पर किया जाता है ? त्रत्येक वर्ग का मेशिय्त परिचय दीजिए। जिस प्रकार बाकृतिपूलक या रचन स्मक वर्गीकरण में भाषावेत्ता भा

माइति, एउ मोर रचना पर ही माना च्यान केन्द्रित करता है तथा सा वर्षों की विविधता तथा उनके प्रयोग की विवेचना कर कार्निकरण के तिउ का निर्धारण करता है, उसी प्रकार पारिवास्कि वर्गीकरण में वह उस्यु तित्वों के मितिरिवत मर्प-तरब का विवेचन कर शब्द तया भाषा के इतिहा उद्भव भीर विकास का निरीक्षण कर उनके साम्य की भावना से सिजाली क प्रतिनादन करता है। मत पारिवास्कि विभाजन को ऐतिहासिक, उत्पतिमूतक

तया बरामुक्रमिक नाम हे भी पुकारा जाता है। मानव बंध-परम्परा मे पीडी-दर-भीड़ी व्यक्ति का घकण होता है घोर तब्बुसार परिवार की स्थापना की जाती है। इसी तरह एक वस या परिवार में केवल वे भागाएँ स्वान पाती हैं जिनमें हम-रचना है बितिरिक्त सहसाय और ध्विन की दुर्गट से भी साम्य होता है। प्रायः एक ही प्रकार की भाषा में (१) सन्दन्तमूह (सन्द घीर पर्थ) (२) ध्याकरत या रचना (बम्दन्य-बस्त्र) घोर (३) ध्वनि की समानना ही मक्ती है। सब्दन्समूह मोर ध्वनि की दृष्टि से व्याकरण की मरोसा मधिक दुनगति ६। प्राप्त १८ व्याहरण की दृष्टि से समया रखने नाते पटन किया और वितास है, बवोहि प्रस्य मापा में सता या विदायण भी प्रपेशा उनको उस ही प्यानिया बाता है। महर-नाम्य में बान्तों के तेळून रूप पर ही महिक दियार हि रहता बाज है। त्याप्तरण की समानता में तीन बाने जिक्का है — (१) पान के ा जात है। दत्तीन की तमानना, (४) मून सहद न पुक्ता (Prefix) मध्यनम (mre) बन्तरमं (Suffix) के योग से मन्य प्रवेद की रचना सकता



है। कभी-कभी स्वर-भेद से मर्च विवसीत ही जाता है घर्ष बौधना है परन्तु होकिनोन्ता का पर्व फोलना है। पुण कोमनना, माधुर्य नया काव्यत्मकता है। दक्षिणी पू ध्यनियां भी प्राप्त होती है। पूडान परिवार की भागायों का प्रवत्तन भूमध्य-रेट

हैमेटिक परिवार के वक्षिण में हैं। कुछ भाषाएँ विविध्य साम्य रक्ती हैं। चीनी भाषा की भांति ये अवेगारमक तथ परिवार भी भाषाए ध्वन्यात्मक हैं तथा मुर तमा तान के जाता है। विभवितयों का नितान ग्रभाव है। हेमेटिक परिवार का विस्तार सम्पूर्ण घण्डीकी प्रदेश में हैं की कतिषय भाषाची में पानिक माहित्य तथा प्राचीन तिजानेर

हैं। इस परिवार की भावाएँ दिलस्ट योगातमक हैं। पद-रचना फ्र सर्व दोनो का प्रयोग होता है तथा स्वर-गिवर्नन से घर्ष बदल ज रुक्ति का प्रयोग बल देने के लिए होना है, जैसे गोइ (काटना) से : बार काटना) बनता है। सैमेटिक परिचार की भाषान्त्री का प्रयोग मोरकही से स्वेज होता है। इसका प्रधान धाँ न एशिया है। सेनेटिक भीर हेरेटिक मे हार पूर्व पर्याप्त साम्य है। इनमें पातु माय तीन व्यंवनों की होते स्वर तथा प्रत्यव ते सन्धानिमांत्र होता है, जैसे कृत-रूसे हितिन क्ष्यत व्यक्तिवायक सनामों में मिलता है। त' स्वोतिंग का बिन्ह है म 'य' या 'हु' हो गया है जेते मन्त्र (राजा) वे मलकह (राजी)। हा व चरवी मापा, पर्मे, ज्योतिय, गणित, दर्शन, साहित्य घोर रंगायन की दृति

यरेशिया खड

नूरेतिया खण्ड समार भर में मानव-बम्चना घीर सहहति का योत ह करत रहा है। पता इन भीन की माहित्य-निधि निर्दान भीर मुख्यविस



ममृद्धि की दृष्टि से प्रसिद्ध है। एकाक्षर परिवार—चीनी भाषा की प्रमुखता के कारण इतनो चीनी परिवार भी कहते हैं। इसका क्षेत्र चीन, स्वाम, तिब्बत और वर्ग तक सिट्टा

है। भारोपीय परिवार के पश्चात् भाषा-भाषियों की दृष्टि से सबसे काई। चीनो-भाषा में विस्व का सर्वेप्रचीन साहित्य प्राप्त होता है । चीनी भाषा में इतनी क्षमता है कि नूक्ष्मातिमुक्ष्म विचारों को सरसता से ग्रमिन्यदित हर सकती है। इस समुदाय की भाषाएँ अयोगात्मक तथा स्थान प्रधान हैं। प्रतेष्ट सन्द एकाक्षरात्मक तथा प्रव्यय के रूप में किसी भी स्थान पर प्रयोग हिंग जा सकता है। इन सब्दों की सब्या पाँच तो से एक बहस के मध्य है। प्रीकृ तया अनेक अबं के प्रकट करने के लिए सुर या तान का उपयोग होता है। स्पाटता के लिए द्वित्व का प्रयोग किया जाता है, जैसे ताम्रोन्तू के एक सर्व प्रयोग से धनेकाथों में सड़क का मर्च ले लिया गया है। एक ही शब्द स्वार भोर भावश्यकतानुसार सना, क्रिया, विशेषण भादि वन जाता है। वहीं मर्नुः नाधिका ध्वनियों का स्मिष्कतर प्रयोग होता है। 'ड' धौर 'डा' के उन्हारण का बाहुस्य इस चीनी भाषा में मिसता है। प्रनामी प्रौर स्वामी पर चीनी स तथा तिब्बती मोर वर्मों पर भारतीय प्रभाव मधिक पड़ा है। बौड धर्म सम्बन्धी साहित्य इन भाषामी में सुरक्षित है। इविड् परिवार—यह वर्ग नमंदा, गोदावरी के दक्षिण दिशा में समस्त भारत में फूंना हुमा है। इनहों तामिल परिवार भी रुहते हैं। यह बारण प्रोर स्वर को दृष्टि से प्ररात-प्रत्टाई परिवार के मनुक्त्व है। वे भाषाएं प्रस्तिष्ट यागात्मक हैं। मत्त्रय घीर गमास का प्राथान्य है। इस परिचार की विशेषजाएँ

मुर्धन्व व्यतियाँ (हवनं) हैं। इन भाषाधां में दो बबन घोर बीन लिय होते हैं। त: वह सन्द प्राय: एक्ववन होते हैं। मलयम, बलाइ, तामिल तथा तेनप्र ्यु परिवार की बिक्रमित भाषार् हैं। बार्च-भाषाची में सांतह पर बाधारित (सर छटोड, रखन-माना) मात्र तथा मूर्यन्य ध्वनियो तथा पनि, नीर, भोत, मटवी, कडिन, बोन मादि किमी परिवार की देन है।

६. ब्राग्नेव परिवार- इनको पाल्ट्रिक परिवार भी करा वना है। यह प्रधान्त-नावर के दीनों, स्ताब, क्यों के क्यापों में, नीकीबार, धारान की



दन परिवारों को प्रास्त्रोनीययन परिवार वा मनन पाविनीयन परिवार के नाम से प्रमिद्धित किया जाता है। प्रथम तीन परिवारों को नवस्त्रिति-विध्यन परिवार भी कह दिया जाता है। इन परिवारों का एक लोत होने के कारण से बहुत भी जातों में समानता है। प्रायः इन सह की भाषाएँ प्रतिवर्ध भोगासमक है। प्रायः पातुएँ दो प्रधारों की होती हैं। हवरायांत बतालह है। पर-एकता के लिए प्रादि, मध्य तथा धन्त मे सन्त्रों का बोग कर दिया बता है। ये सभी भाषाएँ सनी-सान विधोगासमक हो रही हैं।

श्रमरीका सङ

इस संड के मत्यमंत उत्तरों तथा दक्षिणी ममरोना की भाषाएँ माते हैं। इस तड की चार की भाषाओं को तीस वर्गों में विभाजित किया वा सकते हैं। ये सभी भाषाएँ प्रस्तिष्ट योगात्मक हैं। वास्त्र-रचना के लिए क्षस्त्रों ने प्रभात । वास्त्रों के वास्त्र एक लम्मे चार कर में बन जाता है। वेरो भाषा का नामोलिजिन (हमारे पास नाम लामो) इसना एक उदाहरण है। मय माति कुछ भाषाओं में लिपि मोर साहित्य दोनों ही उत्तर्वय होते हैं। इस्त्र मात्र-प्रस्ता के सामग्री का सम्बन्ध मध्ययन न होने के कारण इतका वैज्ञारिक विभाजन या वर्गीकरण सम्भव नहीं हो सकत है। मध्ययन की सामग्री का भी इस लड़

प्रस्त १२ — नारोबीय (बार्य) मनुष्यों के मूल निवास-स्थान के सम्बन्ध में विभिन्न मतों पर काशा दानियें। (यन विव १६४३, विव विव १६४४) मारोबीय भाषाधों का यो न सर्वाधिक उन्तत है और उन्नहीं सम्मन्ध संस्कृति विश्व भर से वर्षश्रेष्ठ समभी बाती रही है। मनर विज्ञान के पर्यवेशा के साबार पर समस्त भारोबीय भाषाधों का मूल एक न्मीत है तो यह भी निश्चित है कि सर्वेश्यम भारोबीय सोधों का निवास-स्थान एक ही रहा होगा। वह संभव हो सकता है कि परिवार की युद्धि होने से उनका विश्व के अन्य प्रस्ती की सोर निष्मक हो गया हो। ये भारोबीय मनुष्म साथ हो प्रमु इस्त प्रस्ती की सोर निष्मक हो गया हो। ये भारोबीय मनुष्म साथ हो प्रमु इस्ते मिकाय विज्ञान एक्सव हैं। इस्ते मांक्शिय विज्ञान स्वाप्त हो है। इस्ते मांक्शिय विज्ञान प्राप्त प्रसान भाराविद्यान, अवीत्य, उत्तवन, मानव-विज्ञान, माना-विज्ञान, प्राप्तीन प्रयोग प्राप्त साहित्य, उत्तिन, मानव-विज्ञान, माना-विज्ञान, प्राप्तीन प्रयोग प्राप्ति साहित्य, उत्तिन, मानव-विज्ञान, माना-विज्ञान, प्राप्तीन प्रयोग प्राप्ति साहित्य, उत्तिन, मानव-विज्ञान, माना-विज्ञान, प्राप्तीन प्रयोग प्राप्ती स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वप्त स्वप्त स्वप्ती स्वप्त स्वप्त



५६ भाषा-विज्ञा

मतों की कल्पना वेद-पुराण भ्रादि प्राचीन साहित्य के भ्रावार पर की गई है भारतीय साहित्य में कही पर भी स्पष्ट रूप से प्रायों के बग्हर से भाने ह उल्लेख नहीं मिलता है।

जिल्ला नहीं मिलता है।

खण्डन-भारत में आयों की आदि भूमि होने की संभावना के दिखें
विद्यानों द्वारा निम्न प्रस्त उठाये गये हैं—(१) इस परिवार (भारोपीय) हो
अधिकारा भाषायुँ यूरोप भीर एखिया के तांसस्यल पर या यूरोप में हैं, भारत के
आसपात नहीं हैं। ऐसी स्थित में भारत से निष्क्रमण की सभावना क्याहै।

यह सभावना संचिक है कि उधर से एक शाखा माई सौर उसी के मोग भारत के उत्तरी भाग में यस ध्ये, दोप लोग वहीं प्रांतवास रह गये। २. यदि भारत साथों का मूल-स्थान रहता तो समूर्ण भारत में एक

परिवार मिलता। उत्तर में बाहुई तथा दक्षिण में तामिल-तेलुलू का नितर्ग इसके विरक्ष में पडता है। इ.स. मोहल-प्रो-दडों का काल फ्रायेट के पूर्व का है। यदि उतकी भाग

संस्कृत से निवनी-जुनती होती तो यह मान्य हो सकता था कि मूनस्पान भारत में था। परन्तु बढ़ी की भाषा द्रवित परिवार की मानी जाती है, मंद्र यह सभावना है कि वहा के मादिवानी द्रविद थे। मार्च परिवार या परिवारी सार से यहाँ पार्च। ४. नुननात्मक भाषा-विकाल के साधार पर दिल्ली का जिल्लासिक

 तुननारमक माया-विज्ञान के प्राधार पर हिंछो या निचुमानिक भाषाएँ मूल भाषा से संस्कृत की प्रांथा प्रिकृतिकट हैं। यतः पूल-स्थान की सम्भावना हिंशी के प्रामनात है।

४. जानीय मानय-विज्ञान, जनवानु-विज्ञान, प्राचीन पूर्वान नवा नुनवा-दक माया-ग्रास्त के घापार पर न केवन पूर्वामीय घाँवतु विवक्त भीर गर देवाई जैसे भारतीय विज्ञानों ने भी पूल स्थान की बहतना भारत के बाहर ही की है।

का है।

(य) मुसस्वात की भारत में बहुर दिवति—भारतीय दिवारधारा के
युनुसर मातवन्त्रीय का वारान विशिष्टा (तिम्बर) वाला में हुया थोर
दुरी को बाद गोर्से का मुजनवात थांसा बात है। कहा बाता है कि बातों
के दिस्तार का मोत बही स्वात है। वैदिक गोंद्रायों को वालीत कतावा व

भारा-विज्ञान ५७

'सप्पत्निपु' का मनेक स्थानों पर उल्लेख मिलता है तथा प्रवीचीन ऋचामी में पूर्व बरेगी की भीर सकेत भी मिलता है। इसी माधार पर कुछ मत भी दिये गये हैं—

(१) प्रविनाशवन्द्रदासः 'सप्तसिन्धु' प्रदेश को ष्रार्थो का मूलस्थान ग्वे हैं।

भानते हैं। (२) तर देमाई ने प्रार्थों का पादि-म्दोत रूत में बास्कृत भील के समीर

(४) वर दनाइ न भाषा का भाषि-न्यात रूस म बारका निर्माण का नामा भाना है। उनके कथनानुसार भाज भी उक्त प्रदेश मे 'सप्तसिन्धु' नामक प्रान्त है।

(३) लोकसान्य बाल गताधर तिलक ने बरती पुस्तक 'धार्कटिक होय रूप रो देशव' में इस विषय में एक गदेपनात्मक लेख ब्रस्तुत किया है जिसमें सारों के पूत्र निवास-स्थान को उन्होंने उत्तरी प्रत्य के निकट माना है। उनका स्थन है कि हिस प्रदेश से सार्थों का निष्क्रमण प्रत्यित 'हिम्युग' के स्थत होगा था। प्रसाल से उन्होंने प्रत्येद को ख्वासी तथा क्षेत्र के हिम्युग उद्यानों सा सहारा निया है।

'क्यंत्रेटिक रिक्टवा' नामक पुरस्क से दान ने रिवक के रम मन का गरपन किया है घीर यह निग्र करने का प्रयत्न दिया है दि पायों का निजम-रूपन सरस्की नदी का दिसायन सम्बद्धनी उद्देश्य दशात था। मनुमूर्ग धारि प्राचीर क्याचे में 'क्यावर्ग के महत्त्व घीर गुण्य का वर्षन होने दृष्टि से दिया गया है। कृत जाता है कि दव स्थान से घाय क्षोत दीर से वर्ष ।

(४) पांटन राहुन साहाशायन का मन है कि यो ता के सामयान एक यनसमूह था बिमके दो बने हो यथे। एक सक जो पांचम की मुद्द गया. दुनगा बने पूर्व सो भारत साथा।

(x) पूरोरीय बिडानी से गहराई सोर बैजानिकता की दृष्टि ने दत प्रवस्य स प्रवस नाम प्रायः सेक्शनुबद्धा किया जाता है। दनके प्रदुत्तर पूर्व क्यांक नामीर का परो तथा उसके पास सम्बद्धाया से सबके था।

(६) डा॰ नेवय सं स्वयद्यांबदक आदादा का प्रमुख द्यार सामहरू द्याची का मुक्तवान गुराव संभागा स्वष्ट भी स्वयदन बना के पास ना राष्ट्रान नानिविधान के प्रात्मन के प्रमुखार हमी निष्कर्ष पर प (७) हरीनेयन मनव जास्त्रनेता मेर्जे ने एपिया प्रन स्थान का प्रमुखान समाया है। हिनो भाग के प्रस्थि (८)

(६) ज्ञान गाइन्य ने 'कॅमिक हिन्दों भी के इंग्डिया, विजन पर्वत के भागाम भारोगिय मुनस्यान माना है। (६) नेहरित (Nehring) ने निद्धी के बतंत्रों के भवते दिश्ली कम मुनस्थान माना है। एक कांनी को मुनस्थान माना है। (१०) इतिहास-पूर्व प्रमानक के प्रभार पर मच तथा कुछ । विद्यानि-कॉस्टिक तट को मुनस्थान कहा है। (११) हट ने भारि सोत पोतेन्य में विश्वता नदी के तट व

हैत मत के पहुंचार उनके पहिन्दी कर पर केंद्र में गांच का पर भागा भागों जन रहते थे। यह मत 'तीवारी' नाम केंद्र में या कि मत 'तीवारी' नाम केंद्र में या केंद्र में दिल्ला कि मत में तीवार के जिस्हर में या केंद्र में विद्या केंद्र में या केंद्र में विद्या केंद्र में या केंद्र मा केंद्र में या केंद्र मा केंद

मीर प्रसान पर्वत-माला के दक्षिण में स्थित प्रदेश को मूल-स्थान हिंचा है।

(१९) उपर्युक्त मतों के प्रतिस्कि निव्यानिया, बाल्टिक वायर के दक्षित हिंच, मेंसीपीटामिया या बनता-कारत व्यक्तिमाले के तट पर, प्रतिप्राम्भ में तट वह पर, प्रतिप्राम्भ में तट पर, प्रतिप्राम्भ में तट पर, प्रतिप्राम में त्रिक्त में भी मन महत्व किये पए हैं। पास्त्र, भी पर तथा में स्था के मूल स्वतिष्ठ मीर प्रमिन्न माने गए के पर वह प्रतिस्तान प्रतिस्तान के स्वत्य स्वतिष्ठ मीर प्रमिन्न माने गए के प्रतिस्तान (December 1987)



वरब भागा-भाविती के पूर्वेब रहे द्वार । हार्वनी बोट स्वितंत वेची स्वी गरनावरा राज की है। इस बहार बायुनिक सरिवास दिशान् गृनिया सासर को तो पायों के पादिन प्रवान की हातना करते हैं। तथ्य मंत्री पास्ति के नर्भे में निदित है। पासा है पाले वसीन सोच-हार्यों ने इन परवासा ग्री

मदेवा । प्रा ११ - छा-परिवर्षन या भाषा के त्रायनामुक्ष में परिवर्षन कित बहार होता है चोर इस परिवर्षन के युवर कारण बदा माने बाते हैं ?

वा तानुवार पान्न या पूर्व हा हम ज वा तानुवार पान्न या पूर्व हो यह विराहित की दूरवार्ड व होता है तथा कभी धोर-धोरे। इस परिवर्त वे माया के हम प्रमाण कमी धोर-धोरे। इस परिवर्त वे माया के हम प्रमाण कमी धोर-धोरे। इस कह सस्ते है कि माया-पार्ट्त तथा हम-एका के घर-वी रवर्त करें हैं। विराहत के इस-विराहत करें हम कर कमा कि का प्रमाण के सामा कि हो होते हैं। विराहत के इस-विराहत के

ब्याकरिक रूपों में बिकार संद्रा, सर्वनाम, किरा, विरोपण, तिय, वचन, कारक सम्बन्धी प्रत्यक्षे के द्वारा होता है। सरहत की सजा, सर्वनाव फ्रियाकों का स्त स्वीवात्मक वा तथा कामक विकास के सन्तर हिन्दी में यह वियो-का स्त स्वीवात्मक वा तथा कामक विकास के सन्तर दिन्दी में यह वियो-गात्मक हो गया। यान्ति है एक सरद था, दिन्दी में यह वेचे-पहुनदे 'जाता है' भारतक हो गया। यान्ति है एक स्वाचित्र के तकार, पुरुष, स्वन सोर वो सारों के सा से दिन्दीन हो गया। सरहत के तकार, पुरुष, स्वन सोर



रूप परिवर्तन के कारण

(१) सरस्ता — नैसा कि जरर कहा गया है भाषा तथा शब्द के भाषाद रूपों से मस्तिष्क पर अनुचित वोभ पडता है। इन अपवादों को नियमानुस्तर आसने के लिए भनुष्य को सरस्ता के लिए नये स्त्रों की रवना करनी वहती है। उदाहरण स्वरूप सहरून की अपेशा हिन्दी के किया घीर कारक के सों में एक्स्पाना आ गई है। इस्ति-परिवर्तन में अयदर-न वब का जो स्थान है। रूप-परिवर्तन में सरस्ता का बदी स्थान है। सोग उच्चारण तथा स्पर्य की सरस्ता के लिए अन्य प्रयोजन कर के सावृद्ध पर नवीन स्वा को निर्योग कर लेते हैं। जैसे परवास्य के बनन पर नवे शब्द पर नवीन स्वा को निर्योग कर

प्रकार के बनेक विकार रही मे परिवतन कर देते हैं।

(२) प्रवासता—नवीन रूर-रपता में ब्रहानता भी व्यवना कार्य करती है। यहानता-वान कर करता में ब्रहानता भी व्यवना कार्य करती है। यहानता-वान नव करता है क्यारे प्रवासत हो जाते है। नवा में सहा, पराना से परा की मीति करता हो क्यारे कर पुत्र है पर प्रवासनवर देता से दिया और लेना से लिया के सद्दान करना हो किया कर प्रवासन हो गया जो अगकरण की हॉट से ब्रह्म होंने हुए भी व्यापक रूप से सकता प्रयोग किया जाता है। इस प्रकार व्यावस्थ के प्रवास कर हो रहा है। इस प्रकार व्यावस्थ के प्रवास करना हो रहा है। सरहत के रावद का सद्दान रूप, तत्वरणना, मीत्रवीन तथा साद्दश्वता पादि उस-हुएस स्रोजने पर निव सहते हैं। सोक-भाषामें में कुटिलताई, मिनताई, मुषर- साई ब्रादि अगम में प्रवास है। साद्दाय के प्राधार पर इन प्रवासना के कारण माहित्यक भाषा में भी मनकर्षण, प्रवासित हम रावदिक तथा उपरोक्त के स्था अपने इस प्रवास हम हो यह है।

(1) नवीन पानी अपूर्ति — इपर हिन्दी नाहित्य से नवीन तासी के निर्माय की प्रवृत्ति चन पत्नी है। नूनन सक्तिमानित के निष् विश्वय कर से नुन्दां की प्रवृत्ति चन प्रयोग किया जाता है। मुद्दा के निष् पादेन, निरिच के निष् विनिध्त, प्रवृत्ता के निष् प्रापने सादि सन्द इस प्रपृत्ति के सोतक

हैं। (४) हरधता-धरधी भाषा में एक्ष्यपन तथा बहुदयन के राष्ट्र करने



धनिष्ट, गरिष्ट) दो प्रकार के सर्वाधिक सूचक प्रत्यय थे। बाद मे ईयह बीर इष्टका अधिक प्रयोगहोने लगा। तर्भौर तम्का 'म' प्रत्यय हमे प्रदम, पचम, सप्तम ग्रादि संस्थावाचक रूपों में दृष्टियत होता है। ईयस् के हर दितीय, नृतीय तथा 'इस्ट' का रूप चतुर्थ तथा थे प्ठ मे देसा सकता है। इन प्रकार धीरे-धीरे एक प्रत्यय ने एक सख्या के बोध कराने में तथा दूसरे ने मन्य रूप के ज्ञान के लिए विदोपता प्राप्त कर ली। पुनः हिन्दी भाषामें ये प्र^{त्य} युक्त हो जाते जा रहे हैं तथा तुलनात्मक भाव के लिये 'मधिक,' मौर', 'मपेशा' भादि राव्दो का प्रयोग हाता है। यह स्थिति भाग प्रान्तीय भाषाभी की है। इनी विरोध भाव के नियम के मन्तर्गत विभक्ति से के स्थान पर कारक-विर्ही या परमर्गो का प्रयोग माना जाता है। तथा--'रामस्य' के स्पान पर 'राम का हिन्दी में हो गया। इस प्रकार राज्य मपना मूल भये छोड़कर केव^त एक विजेष ब्याकरणिक धर्य देने लगी हैं। हिन्दी कारको की सहित में धर्म हित प्रवस्था है। यह नियम शन्दों के कुछ समात्र-गृहीत स्तो पर कार्य करता 2 1 (२) प्रचौद्योतन का नियम (Law of irradiation)-इम नियम के द्यालयेत धरद में वरस्वरा से पूबक् एक नवीन संघें का सामास भिन्न जाता है है उद्योगन रा मर्थ है 'चमह' । इसने परशयं में नई चमह था जा है है । मर्बे में बन्दारें, बुराई या बन्द भाव को प्रहड़ कर देती है। बर्बाबोल के विकास के दे प्रवृश्यि दर्शनीय है-(इ) दिनी चन्पर न पश्चे धवे हा सहे पिन बाता है। (म) हमी बहु प्रत्यव शिरोत या प्रयुक्तर प्रयंका प्रवट कर दता

के तुलनासूचक तथा तमप् (लयुत्तम, महत्तम, कुशलतम) भौर इष्टन् (परिट,



जिए तया सामान्य रूप से वैठिये शब्द का प्रयोग किया जाता है। जो समाज

जितना ही घिषिक सम्य तथा मुसस्कृत होगा अर्थ-भेद की मात्रा उतनी ही भाषा में सिलेगी।

(४) भ्रम या मिच्या प्रतीति का नियम(Law of False Perception)-

किसी शब्द के रूप को देखकर हमें कभी-कभी भ्रमवश उस शब्द के प्रत्य धर्य का भाव होने लगता है और झागे चलकर वही भ्रामक ग्रर्थ प्रचलित हो जाता

है। फलत भ्रथं में विकार पैदा हो जाता है। यही मिथ्या प्रतीति का नियम है। स्वराघात तथा बलाघात से इस प्रकार के रूपो का सर्वप्रथम निर्माण हुमा श्रीर बाद में वही ग्राह्म होकर व्याकरण का ग्रश बन गये। व्याकरणिक उद्यौ-

तन से शब्दों में प्रकृति प्रत्यय का ज्ञान न होने से उनका रूप भ्रमवश सामान्य तथा स्वाभाविक समभ लिया गया। यथा थेप्ठ (=सबसे ग्रन्छा) का निर्माण प्रसस्य 🕂 इप्टन् से हुधा है । इप्टन् प्रत्यय की प्रकृति का स्वरूप स्पष्ट न होने री इसे मूल सब्द समक्ता जाने लगा । इसके भी प्रत्ययान्त रूप श्रेट, श्रेटतर,

भाषा-विज्ञान ŧù इन नुष्त विभिन्तियों के मस्तित्व को बनाए रखने की मनोवृत्ति कभी कभी भाषा मे दिखाई पड जाती है, जैसे हठात्, दैवान् दैववशात् आदि । नूश्म दृष्टि ने मर्थ परिवर्तन का मूत्र भी ऐसे रूपों में दृष्टिगत होता है, यथा कृपया का

मर्थ 'कृपा से' न होकर 'कृपा करके' लिया जाता है। इसी प्रकार परिणामत ना धर्ष 'परिणाम से' (पत्रमी प्रत्यय का रूप) न लेकर 'परिणाम स्वरूप' के मर्थ में लिया जाता है। भोजपुरी रूप 'घरे', 'दुवारे' में सप्तमी--'ए' का मूल

रूप भव भी मुरक्षित है। (६) नवे साम के नियम-भाषा में जब एक घोर कुछ प्रत्यव, विभक्तियां

का लोप होता है तो इसरी और कए रूपों और धर्यों का विकास होता है।

प्रमिद्ध भाषाविष्ठ बोन ने, कर्मवाच्य, त्रिया-विशेषण, प्रव्यय तथा क्रदन्त को

ह्माम के परिणामध्यमय नवीन रूपी में लिया है। उसके मन में ह्माम हुए मधी

जिए तथा सामान्य का से बंदियं गारा का प्रयोग किया जाता है। वो सा जितना ही प्रिथिक सम्य तथा मुनहृत्त होगा प्रयंभेर की मात्रा अर्थ भाषा में मिसेयो। (४) ध्रम या निष्या प्रतीति का नियम(Law of False Perception किसी गारा के रूप को देखकर हमें कभी-कभी ध्रमक्या उस गारा के मन्य का भाव होने समता है धीर पाने चलकर वही आवक्क प्रयं प्रचित्त हो ज है। फलत प्रयं में विकार परा हो जाता है। यही निष्या प्रतीत तही ज है। करताथात तथा बलायात से स्था प्रकार के क्यों का मक्ष्य म

भार वाद म बहा थाड़ होकर ब्याकरण का मेरा बन गया। ब्याकरण कर तन से प्रश्नों में प्रश्नित प्रत्यव का जान न होने से उनहां कर अमवया सामा तथा स्वामाचिक ममफ तिया गया। यदा थेय्द (=सबसे मन्छा) का निर्म प्रदास्य + इंटल् से हुमा है। इंप्टन् प्रत्यव की प्रश्नित का स्कल्स स्मय्त न हैं से इसे मूल सब्द समभा जाने लगा। इसके भी प्रत्यवान्त रूप थेय्द, श्रेष्टन श्रेष्टनम का में प्रयुक्त होने हैं। ज्येय्द भी इसी प्रकार का रूप है।

श्रेंप्ठतम हा में प्रमुक्त होंगे हैं। ज्येंप्ठ भी इसी प्रकार का रूप है।
सबर हो की इस मिच्या-प्रतिति से सर्व के उरक्षं सौर अस्वस्व का भा
भी हो जाता है। साबीन साहित्य में समुर का सर्व 'देवता' या जिनसे रवन समु≔प्राच दादर से हुई परन्तु सब दक्तका प्रपक्षं स ∔नुर≕रासन के सर्व ' हो गया है। साहनी का पूर्व सर्व 'डाक्न्' या परन्तु उरक्ष्व होक दक्तक प्रयोख सदस्य उत्साह के लिए होने लगा। अमुवस्य कभी-कभी इहरे प्रयोग चल वां

हो नवा है। सहियों का पूर्व अर्थ 'डाकू' या परम्य उत्कर्ध होकर हता प्रयोग खदस्य उत्साह के लिए होने लगा। अनवार कभी-कभी दुहरे प्रयोग व्यव्य वर्गे हैं। जैसे परम्य किर भी (एक प्रयोग उचित है), गुन रोगन (=चैन) को ते, मुनसेहरी का फ्र (युल = फ्रून), हिमाप्त पर्धत मनवागिरि(= पर्वत) पर्वेत, कांबुत बाला के स्थान पर कांबुलीयला आदि सब्दों के द्वित्व करों का प्रयोग प्रयोशित है। (प्र) विभवितयों के भग्नायशिय का निवम (Law of Survival संगाति को भाषा सयोगावस्था से पियोगावस्था की तो ध्वति तोष के कारण विभक्तियों का सोष हो जाता है कारक-विद्व या परसर्गी का प्रयोग होने नगता है। विद्वती का तोर होकर परस्मी युक्कर विभक्तियों - भाषा-विशान ६७

इत भुक्त विमित्तयों के मिलात को बनाए रखने की मनीवृत्ति कभी कभी भाषा में दिखाई पढ जानी है, जैसे हुआत, देवान देववतात् मादि । मूटम दृष्टि में मध्ये परिवर्तन का मूच भी ऐमें रूपो में दृष्टियान होता है, यथा हुपया का मर्थ 'क्ष्या में न होकर 'डिपा करके' लिखा जाता है। इसी प्रकार परिणाम का मर्थ परिणाम को (पत्रमी प्रत्यय का रूप) न नेकर परिणाम क्वरूप' के सर्थ में तिया जाता है। मीजपुरी रूप पर्य मा रूप भी स्वाप परिणाम क्वरूप' के सर्थ में तिया जाता है। मीजपुरी रूप पर्य, 'दुवारे' में मालमी—-'ए' वा मूल रूप मत्र भी मुर्शक्त है।

- (६) को साथ के जियस—भाग में जब एक घोर कुछ प्रत्यण, विश्वक्रियों का लोग होना है तो दूसरी धौर नए हथा धौर धयों का विकास होना है। प्रसिद्ध भागाविद् के ल ने, कर्मवाच्य, क्रिया-विधेषण, घळ्यत तथा कुदन को ब्रह्म के परिणास-बक्त नवीन हथों में निया है। उसके मन में हान हुए क्यों की धानिहान नवीन हथों के भागा में धाने में हो जानी है। जिला हथों में ध्याय कुदन्त नवा किया विधेषण वा घोन्तन घवांचीन तथा प्रापुनिक छवत्था वी चीन है। के कं मनतुमार जब सजा या विधेषण का कोई विशिष्ट कर विभानियों का त्याव कर घट्य कर में दिवन हो जाना है तब उसका वह हथ जिला-विशेषण वन जाना है। उदाहरणार्थ-विन्य धानप्य' (दें ने प्राया हुया) में विरम् की दिशीया विभक्ति वा हो घरपुक्त होइस घट्य कर में प्राप्त वभा विध्या विशेषण को किया-विशेषण के कर में उहुण दिया जाने नाग। क्रमातु में घटनमान् द्यों प्रवार के रूप है।
 - (७) उपमान का नियम—प्रचलित ताद के प्रमुक्त पर नवीन राध्यं में गृदि भागा में होनी रहते हैं। मानत भाव तथा कर-मान्य के प्राप्त र नव्य स्थान महत्य स्थान महत्य स्थान महत्य के प्राप्त र नव्य स्थान महत्य स्थान महत्य के तिय के तिय होने हैं। इह उपमान वा विस्त महत्य तथा नमान कर वी किया है से हुए करने तथा भाव नया कर में पर्याप्त को नियम महत्य भाव नया कर में पर्याप्त को नवि होने हैं। इस करने तथा भाव नया कर में पर्याप्त नाने के किए होने हैं। किया प्रवृत्त को मानता करने के स्थान से पर्याप्त की किया महत्य स्थान महत्त्व से प्रमुख्य के प्रमुख्य की प्राप्त के क्षा के स्थान के स्थान के प्रमुख्य किया मान के स्थान में पर्याप्त के प्रमुख्य के प

्रद्

निष् तथा सामान्य रूप से बैठिये पाद का प्रयोग किया जाता है। वो समान जितना हो प्रतिक सन्य तथा मुमस्तृत होना प्रयंभेद की मात्रा उतनी हो भाषा में मिलती।

(४) भ्रम या निस्पा प्रतीति का नियम(Law of False Perception)—
किसी राज्य के रूप को देशकर हमें कभी-कभी भ्रमवस उन राज्य के प्रव मर्थ का भाव होने नगता है पौर माने पतकर वही भ्रामक स्पं प्रचलित हो गता है। कता प्रयं में विकार पैदा हो जाता है। वही निष्पा प्रतीति का निवम है। करात सर्थ में विकार पैदा हो जाता है। वही निष्पा प्रतीति का निवम है। स्वरापात तेया बनापान ते इस प्रकार के रूपों का संवेशका निर्माण होरा स्वीर मंदी शाहा होकर व्याक्तरण का संग्र वन गये। व्याक्तरणिक उद्यो-तन से राज्यों में प्रकृति प्रत्य का जान न होने से उनका रूप भ्रमवया सामान्य तथा स्वाभाविक तमानिया निर्माण प्रसान में स्टब्त संवधा का निर्माण प्रसान में स्वयन सम्बा जाने नगा। इसके भी प्रत्यान रूप सेव्ह, सेव्हन, सेव्हन,

से इसे मूल दाबर समका जाने लगा। इसके भी प्रत्यवान्त रूप थेएठ, थेएठतर, अरटतरम रूप में प्रमुक्त होते हैं। व्यंट्स भी इसी प्रधार का रूप है। प्रश्न रूप से में है से स्थिया-प्रतीति में अर्थ के उत्कर्ष और अपकर्ष का भाव भी हो जाता है। शाबीन साहित्य में अर्थ के उत्कर्ष और अपकर्ष का भाव भी हो जाता है। शाबीन साहित्य में अर्थ के प्रता के प्रता कर में हुई परन्तु अर्थ इसका अपकर्ष अ मृत्र — राक्षस के अर्थ में हो गया है। साहित्य का पूर्व सर्थ 'डाक्ट्र' या परन्तु उत्कर्ष होकर इसका प्रयोग अदम्य उत्साह के लिए होने लगा। अपनदा कभी-कभी दुदूर प्रयोग चल जाते हैं। जैसे परन्तु किर भी (एक प्रयोग उत्तित है), युत्त रोगन (—तेल) का तन, मुत्रमेहरी का एवं (पुत्र —कून), हिमाजन पर्यंत मत्यवागिर (—वर्वत) परंत, सहुत बाला के स्वान पर का बुत्नीवाला आदि शब्दों के द्वित्व रूपो का प्रयोग प्रवासत है।

प्रभागन प्र (४) किसिहतमों के सम्बादकोय का नियम (Law of Survival of Inflec-श्री किसिहतमों के साथा समीजावरण से वियोगावरण की खोर छदगर होती है तो छ्वति लोग के नगरण विभक्तियों का लोग हो जाता है तमा उनके स्थान पर कारक-चित्र या परसर्गों का प्रयोग होने नाता है। हिन्दी में सहस्र विभ-कारक-चित्र या परसर्गों का प्रयोग होने नाता है। हिन्दी में सहस्र विभ-कारक-चित्र या परसर्गों का प्रयोग चुहकर विभक्तियों का भाव प्रस्ट करने संगं। दित्रयों का सीर हो कर परस्य चुहकर विभक्तियों का भाव प्रस्ट करने संगं। इन मुख विभक्तियों के मिलात को बनाए रखने की मनोबृति कभी कभी
भाषा में दिलाई पढ़ जाती है, जैसे हुआ, देवानू देववधात् मादि। मूस्भ दृष्टि
से मं पंपिततंत का मूत्र भी ऐसे क्यों में दृष्टिमत होता है, यथा कुरवा का
मर्थ 'क्या से न होकर 'क्या करके' निया जाता है। इसी प्रकार परिणामत का मर्थ 'परिणाम ते' (पत्रमी प्रत्य का क्य) म तेकर 'परिणाम स्वरूप' के
मर्थ में निया जाता है। भीजपुरी क्य 'परें', 'दुवारे' में सप्तमी—'ए' का मूल क्य मत्र भी मुस्सित है।

- (६) बसे तम के नियम—साया में जब एक घोर बुछ प्रत्यन, विश्वतियों वा तोष होना है तो दूसरी धौर नए हमो घोर धर्मों का विकान होना है। प्रमिद्ध भाषाविद्ध बेंस ते, वर्मवाच्य, विश्वा-विधेषण, धरूपन तथा हुस्तन को ह्या के परिणामस्वहण नवीन हमो में निया है। उनके मन मे हाम हुए हमो को शिनुष्ठित नवीन रूपों के भाषा ने धाने ने हो बाती है। हिया हमो से धरूपन हरून नवा त्रिया विशेषण का धिन्तत्व धर्मानीन तथा धाधुनिक धरूपन की भीन है। जै के मनगुमार जब सजा या विशेषण का भोई विशिष्ट कर्मा विभानिकों का स्थान कर धरूपन का में नियन हो जाना है तब उनका बहु हम्म दिमानिकोंच कर बाता कर धरूपन का में नियन हो जाना है तब उनका बहु हम्म दिमानिकोंच कर बाता है। उदाहरणार्थ विद्यान धानर्थ (देर से साया हुथा) में विराम की दिनीया विभिक्त का हम धरूपन धानर्थ (देर से साया हुथा) स्वराम विशेषण कर काला है। उदाहरणार्थ विद्यान धान्य । तथा विभान विशेषण को किया-विशेषण के हम में धरूण किया जाने नगा। वर्षान् वे धरुमान् रसी प्रवार हर रहे। (७) उपयान का नियस—प्रवानित संद के धरूपनरण पर नवीन सार्थ
 - नी मुर्टि भाषा ने होनी रहनो है। मानव भाव नयाँ हर-मान्य के धाधार "र नए गरायों का प्रयोग मरानता नया मुख्या के निल करनो है। यह उपमार नियम नरक तथा नमान हर की रचना में महायक होना है। इन नियम उपयोग भाव-महायान ची चटिनाई को हुए करने तथा भाव नया हर में पटना माने के निए होता है। किसी विषय धवना माद्दर वो यानियानी साने में निया प्राचीन धीर नवीन नियमों में नए हर वी सानि बैठाने से त्यान प्रयन हाथ है। धतुमान किया बाता है कि भारोगिय चाल में पास्थी वनेक प्रयम्न नथा हमें परन्तु मुक्यानुनार उपमान के महारे बैटिक सुगीन

सालव ने एक रूप को नवीनता के साथ ग्रहण किया हो प्रवेस्ता तथा ग्रीक वाल ने उसी या दूसरे रूप को नए स्वरूप के साथ ग्रहण किया। उत्तन पुरण वर्ते मान के दो प्रत्यप थे 'मि' और प्रत्यु उपनान से उनमें ने प्रिस्त प्रत्यु प्रस्ता से उनमें ने प्रत्यु प्रस्ति संस्त्र में 'मि' की, तो श्रीक में 'प्रते' को घपनाया गया। सस्त्रत के 'प्रसिम' ग्रीर प्रवेस्ता के 'प्राह्मि' से मिला जुला रूप 'एह्मि' ग्रीक में मिलता है।

(६) अनुषयोगी रूपो का विनाश—जब एक भाषा में एक वर्ष वाची अनेक राज्यों का अचलन होता है तो अयोगानुसार उनमें से कुछ विशिष्ट गब्द जीवित रहते हैं तथा पेप सब्दों को प्रमुख्योगी, समफ्रकर उनका प्रयोग कम हो जाता है। फतत ने नष्ट तथा नुष्त हो जाते हैं। बेदिक सस्कृत में शब्द तथा धानुओं के एक ही अर्थवाची अनेक रूप प्रयुक्त किए नए हैं प्रस्तु नोकिक सरकृत तक आते-आते उनके कुछ निश्चित रूप ही प्रवास्ट रहे। येप रूप

अनुष्योगिता के कारण व्यवहृत न हो पाये। यही स्थिति लीकिक सस्हृत भीर प्राह्मत प्रयक्ष प्रयक्ष य तक रही भीर यही प्रवृत्ति ब्राधृतिक हिन्दी मारि भाषामा में भी दिखाई देती है। उदाहरण रूप में वैदिक सस्हृत में देवने के प्रयं में दो चातुष थी—स्पृत् मीर दृश् पर उत्तरवृत में 'परम' को एक ही धातुष 'द्या' का मारेदा मान तिया गमा। इसी प्रकार हिन्दी में संस्कृत के दिव्यवन का लीप हो गया। अनेक-रूप शब्दों का लोप प्रधिकता से दिलाई देता है जब हि एक रूप चाले पर भाषा में प्राय. स्थिर रहे। इन रूपों का मार्थ पर भी अप्रत्यक्ष प्रभाव पड़ा है।

उपयुक्त उबाहरण भी दोजिए। दाइद भ्रोर धर्म का प्रभिन्न सम्बन्ध है। दाइद भ्रोर धर्म का योग ही भाषा

को मार्थक भीर मानगर्य बनाता है। बाहतन में सर्थ ही ताथ का प्राण है। दिना प्रयोगित के माद का महितान व्यर्थ तथा निष्कत है। भाषा धनिनतीन से पाद और पर्य रोनों में ही दिकार पैदा हो आगा है। धर्मनेतर के पित्रक महितान की प्रतिक मननाएँ हैं। क्यो पाद के प्रभी न विनाग होतर दुनता श्री क मादक हो जाता है पत्रा तिमान निष्य में पित के मार्थ कता श्री क मादक हो जाता है पत्रा तिमान निष्य में पित के मार्थ मा होतक सा पर प्रमास सुनी के तिसे के निष्ट दुनता अपोन होता है। भाषा-विज्ञान ६६

कभी मर्प में सकोच हो जाता है। इस पकार मर्प-परिवर्तन या विकास की एक दिशा नही मपितु विभिन्न दिशाएँ हैं।

ध्यं परिवतन की दिश एँ ध्यं-विज्ञान के जाता बील के धनुसार धर्थ-विकास की प्रमुखत तीन

दिशाएँ हैं— प्रवं-विस्तार, २ मर्थ-सकोब मीर ३ मर्थादेश । कुछ प्रन्य दिशाएँ भी हैं किन पर माने प्रकार डालना मनिवाय है । १. मर्थ-विस्तार (Expansion of meaning)—मर्थ-विस्तार में राज्दो

१. धप-विस्तार (Expansion of meaning)—धप-विस्तार (Expansion of meaning)—धप-विस्तार (काता है। यार्च का विस्तृत होक न्यापक हो जाना हो धप-विस्तार है। येट्न पर्य-विस्तार भाषा में बम मात्रा में होता है। कारण स्पष्ट है कि भाषा के घरिक उन्तेन, समुद्र धीर विकास हो जाने पर उसमें मूचम से गूमम प्रीर सीमित से सीमित मायवापों वो धिम्बर्धित करने की यक्ति धा जाती है। घत स्वामानिक रूप से घर्म मामान्य हो विद्याय की बिरोध की धीर विकास हो जाता है। धर्म मक्कीप का वाहुत्य हो आता है।

उदाहरणार्थ — 'गवेषणा' तब्द बादि में गांव कोजने में प्रयुक्त होता था पर साज प्रत्येक तीप-तार्थ तथा तोज के लिए इनका प्रयोग होता है। बाराम्य कराने रत को स्वाही बहुते में परन्तु नीजी, ताल रोतार्य के लिए भी यह महान प्रयोग कर के जबहुन होता है। पूर्वकाल में पुत्र करने बात तो 'गियुण', कुमा ताने में चतुर की 'कुमत' तथा बीचा बजाने में सिद्धहरूत की 'प्रवीण' चहुते में परन्तु पत्र वीजी ताल्यों ना प्रयोग सामान्य रूप से तब काम में पूर्ण पहित या बतुर बर्ध में होता है। 'प्रोहार' तो के हरण पर की गई पुकार की चहुते में पर पद सब महा पर्योग पा, किन्तु प्रवामी साम मिज्यों है। मत्ती साम सिज्यों साम सिज्यों साम सिज्यों है। मत्ती साम सिज्यों सिज्यों साम सिज्यों साम सिज्यों सिज्

म करि वालिदास के समान विदानों वा पर्य है। २. प्रयं-सक्षेत्र (Contraction of meaning)—प्रयं वा सिकुइना या

मानव ने एक रूप को नवीनता के साथ ग्रहण किया तो श्रवेस्ता तथा ग्रीक वाली ने उसी या दूसरे रूप को नए स्वरूप के साथ ग्रहण किया। उत्तम पुरुप बर्त-मान के दो प्रत्यय थे 'मि' ग्रीर भी' परन्तु उपमान से उनम भेद मिट गर्मा। सरवृत में 'मि' को, तो श्रीक में 'स्रो' को स्वपनाया गया। संस्कृत के 'सरिम' भीर भवेस्ता के 'माह्मि' से मिला जुला रूप 'एह्मि' ग्रीक में मिलता है। (=) भनुषयोगी रूपो का विनाध--जब एक भाषा में एक धर्म वादी मनेक सब्दों का अचलन होता है तो प्रयोगानुसार उतमें से कुछ विशिष्ट सब्द जीवित रहते हैं तथा दीप सन्दों को मनुषयोगी समक्षकर उनका प्रयोग कम हो जाना है। फनत ये नष्ट तया सुख हो जाते हैं। यैदिक सस्कृत में सम्ब तया धातुमों के एक ही मर्थवाची भनेक रूप प्रयुक्त किए गए हैं परन्तु सीकिक सस्तृत तक मार्त-मार्त उनके कुछ निश्चित रूप ही अवशिष्ट रहे। शेंग सा भन्पयोगिता के बारण व्यवद्वत न हो पाये। यही स्थिति लीकिक सस्कृत भीर प्राप्त भवना भवश्रय तक रही भीर यही प्रमृति भाष्ट्रिक हिन्दी भारि भाषायों में भी दिखाई देती है। उदाहरण रूप में वैदिक सहस्ता में देशने के

मर्थ में दो धानुए घी—स्पृत् भीर दृश् पर उत्तरसूत में पस्य' को एक ही धानु 'दुर्य' ना बादित मान निया गया । देशी अहार हिन्दी में सरहत के हिन वचन का लोग हो गया । प्रवेत-क्ष्य सन्दर्भ का लोग प्रधिकता है। दिलाई देता है जब कि एक रच बाने पर भाषा में प्राप स्पिर रहे। इन क्रों या बर्ष पर भी पत्रसभ प्रभाव पड़ा है। प्रत १६-- पर्य-परिवान की शिवाधों के बाधार का उन्हें प्रमुख्त प्रशहरण भी बीबिए। शहर और वर्ष रा मनिल सम्बन्ध है। यहरे भीर मर्थ र

को गावंड बोर भारत्य बताता है। बारार में परे ही हा विना प्रदेशभीति क्याद सा प्रदेशन व्यवंतरा निष्टत ने गुद भीर भरे दोना ने ही रिसार पैस हा आता है या दिसान औ प्रदेश बंशताएँ हैं। क्सी गता र प्रमा भेद सारह हो अला हेवश देवता

เนเนลสเก

गपाकाबाढी (स॰ वाटिका) घर का छोतक हो गया है। प्रयं-परिवर्तन की निम्न दिशाएँ भी हो सकती हैं--V. प्रवीकर्ष-पर्य-विकास में कभी-कभी प्रयं पहले से प्रधिक उन्तत घच्छे भाष को ग्रहण कर नेते हैं। इसी को धर्योत्वयं बहते हैं। परिवर्तन

े उदासता ग्रंब उत्कर्ष या उत्थान हो जाता है। यह ग्रंबोल्क्य के उदा-में कम ही मिलने हैं । जैसे, सम्बन में 'माइम' घटर व्हें प्रार्थ (व्यव-्भादि) में प्रयुक्त होता या पर ग्रब उच्च तथा सराहनीय कार्य के

म्हत होता है। यथा-मनुष्य मारण स्तेय परदाराभिमर्पणम । पारप्यमनन चैव माहस प्रचया स्मृतम ॥ हन में 'मुख का मर्च 'मूद्र' होता था। सब 'मोहित' या 'प्रगन्न' वा बोध

कराता है। मस्हत में 'कर्षट' पानी 'कष्पट' जीर्ण बस्त्र के लिए प्रयुक्त होता था, मद मच्छे मुन्दर वस्त्र के लिए प्रयुक्त होता है। ऐसे ही इण्डियन, बन्दी म्।दि सब्दो काभी मर्योल एंहो गया है। ४ ग्रयोपहर्ष-यह ग्रयोत्वर्ष का विलोम है। जब ग्रयं-परिवर्तन में शब्द के प्रयंमे निरायट था जानी है या निम्न कोटि के भाव को प्रकट करने लगता है तो वहाँ सर्वापक्ष होता है। ये निम्त तथा बुरे एवं ही प्रधान हो जाते है। तथा—कबीर ने 'हरिजन' शब्द का प्रयोग भक्त के ग्रर्थ मे

दिया है, ग्रब ग्रन्थतों का भाव उसमें समा गया है। संस्कृत का 'जुगुप्सा' गब्द 'गुप्' धातु में बना है जिसका ग्रथं पालना या छिपाना है पर इसका प्रयोग भव 'पूणा' बर्थ में विया जाता है। पहले सत् और असत् वा अर्थ विद्यमान भीर प्रविद्यमान होता या, परन्तु ग्रंब भला-बुग या भूठ-मच हो गया है। नाम-गान्त्र में प्रयुक्त होने के कारण सस्हत के सहवान, प्रमण, समायम, भीय मादि शहर मकी मंबन गए हैं भीर उनके धर्य में धरलीलना के कारण धपवपं हो गया है। सभी-दभी तत्सम शब्द टीक अर्थ में प्रयुक्त होता है पर उससे

निमृत तद्भव गब्द का प्रयोपवर्ष हो जाता है, यथा 'गाभिन', 'यन' सम्वत गब्द 'गर्निणी' मीर 'स्तन' से निवले है पर इनवा प्रयोग मानव के लिए न होकर परुषों के लिए होता है। जैन माधुमों के लिए 'नम्न', 'लु वित' तथा ,पायण्डी वा प्रयोग धादर के लिए होता था, पर उनका तद्भव रूप नगा,

भाषा में लक्षित होने लगा। प्रथं विज्ञान के मनीवी औल का कथन है---'राष्ट्र या जाति जितनी हो अधिक विकसित होगी उसरी भाषा में अर्थ-सकीच के उग्रहरण उतने ही प्रधिक मिलेंगे । उदाहरण के लिए-सरहत के 'मृग' प्रव्य ना प्रयोग पर्या जानवर मात्र के लिए होता था पर प्रव उसका प्रयोग हरिण के लिए सीमित हो गया है। भागों का धर्य-अनस्ता भरण पोपण िया जाय' अब यह पत्नी के लिए रूड़ हो गया है। गो (गम् धानु से) का धर्थ 'गमन करने वाला' है परन्तु माज गाय के लिए व्यवहुत होता है। 'मुगें' का फारमी भाषा में अर्थ पक्षी मात्र है जैसे कि शुतुरमुगं और मुगांबी (जल-पक्षी) से स्पष्ट है। पर उद्गें, हिन्दी में पश्ची विशेष का बोध होता है। श्रद्धा से किया जाने वाला प्रत्येक कार्य 'श्राद्ध' कहा जाता है पर धव मृत्य के बाद के कार्य विदोप का ज्ञान कराता है। दुँदने पर प्रत्येक भाषा मे अर्थ-सकीच के धनेकानेक उदाहरण मिल सकते हैं। ३. भर्यादेश (Transfernence of meaning)—विचार-माहचयं या भाव-शवलता के कारण एक शब्द के प्रधान तथा गौण अर्थ चलने लगते है किन्तु कालान्तर में प्रधान बर्ध का धीरे-धीरे लोप हो जाता है भीर उस सन्द का गीण भयं ही प्रवलित हो जाता है। इस प्रकार प्रमुख धर्य के स्थान पर नवीन अयं के आ जाने को भगांदेश कहते हैं। इसमे प्रधान अयं का बोध होकर गौण क्रमं का तत्स्थान ब्रादेश हो जाता है। उदाहरणार्थ-'भैवार' का बर्थ पहले गांव का रहने वाला' था । ग्रामवासी अधिकतर ग्रसम्य थीर ग्रसस्कृत होते है । त्सी के भाधार पर भाजकल उसका प्रचलित भर्व 'मतस्य' या 'मतस्कृत' है। 'बर' का अर्थ श्रेष्ठ या अब 'दुलहे' का बोध कराता है। सम्राट् अशोक 'देवाना भर भाग । प्राप्त वाद में उसका अर्थ मूर्ख हो गया। प्रारम्भिक ऋग्-्राप्त पर प्रमाण में प्रभुत देववाची सन्द कुछ समय बाद राक्षसवाची बन गया ।

दृहित का मर्थ दहने वाली था, प्रव गीण

सीमित हो जाना हो धर्थ-महोच है। भाषा का विहास धर्थ-महोच की दिशा मधिक होता है मत इसका महत्व भवरिमित है। प्रारम्भिक वृग से भाषा में शर सामान्य या विस्तृत मधं के चौतक रहे परन्तु मन्यता के विकास के माथ उनने रिशिष्ट मर्थ प्रतिपादन की भावना मानी गई घौर ग्रंथ-सकोच का माथिक

19 0

भाषा विज्ञान ७१

बगता का बाढ़ी (म॰ बाटिका) घर का दोत्तव हो गया है। क्यां-पश्चित्त को निम्म दिवाणी भी हो मकती हैं

प्रधानमध्ये प्रधानमध्ये स्थानभ्ये एव प्रशास एवित जनन प्रीराधना भाग प्रधानमध्य न है। हुई न एवित करने हैं। प्रधानन से प्रधान हुए से अपने का जनकार हो जाने हैं। पर एंडिंग न जार हुए भागा भानभा है। भागन है। प्रधान सम्बद्ध का स्थान प्रशास एंडिंग (प्रवास न प्रमाण) प्रधान है। भागन है। प्रधान सम्बद्ध का प्रधान प्रधान प्रधान स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स

सनस्य सारणं स्तयं वरदानाध्ययन्तः। वास्त्यत्रतः चैत्रं साहस्य प्रतारास्यम् ॥

सन्दर्भ संभाग वासव मुद्द हाता था। स्वद साहित प्राप्तान वासीय सनाता है। स्थान संवद्भ पार्थ क्याप्त होता प्राप्त के दिन प्रमाण होता था पद सम्प्रे मुद्दर बरूव के दिन प्रमुक्त होता है। तम हो दिल्यन, बादी सादि सप्ता वाभी स्वदेशिय हो गया है। ५ स्वदेश्वर्थ --सह स्वपोत्तम वाहितास है। जब स्वप्तित्वतन सहस्व के स्वयं से सिनावट सा जाती है सातिसन वाहि के आला दा प्रवट करने

पं सर्थ में तिरावट सा जानी है या तिमन कार्ट के भाव दा प्रदेश है "पे समान हो जो बनी स्वार्थ प्रवार हो है या तिमन नथा दूर " हो है प्रधान हो जोते हैं। तथा — नवीर ने "हिन्दान देवड का प्रधान भान है स्वार्थ में दिया है पर अपने में भाव जाने में मान वा दी है। स्वार्थ में पार पूर्ण चार्त ने बता है जिसता स्वयं पानना सा दियाना है पर हमता प्रधान स्वयं प्रधान के पर प्रधान का जाने है। यहने मन सीर बात का स्वार्थ पर प्रधान स्वयं विद्यान स्वार्थ पर प्रधान स्वयं प्रधान स्वयं विद्यान स्वयं विद्यान स्वयं विद्यान स्वयं प्रधान स्वयं स्वयं प्रधान स्वयं प्रधान स्वयं प्रधान स्वयं प्रधान स्वयं प्रधान स्वयं स्वयं प्रधान स्वयं स्वयं प्रधान स्वयं स्वयं प्रधान स्वयं स्वयं स्वयं प्रधान स्वयं स्वयं

निग्न नदुव राज्य का प्रकार कर कि स्वी न ने हुन निग्न नदुव राज्य का प्रकारक है जाता है, यदा जाभिन , जा सम्ब्रन राज्य पर्मियों भीर पठन में निक्त है पर इनका प्रयोग सानव के निष् न हीकर प्रमुखें के लिए होता है। जैन सामुखें के सिष् पनन, जुनित जया ,पायक्षी ना प्रयोग साहर के निष् होता बा, पर उनना तद्भव रूप नगा,

सीमित हो जाना हो अर्थ-संकोच है। भाषा का विकास अर्थ-संनोच की दिशा में प्रथिक होता है गत: इसका महत्व अपरिमित है । प्रारम्भिक युग में भाषा में शब्द सामान्य या विस्तृत अर्थ के द्योतक रहे परन्तु सम्प्रता के विकास के साथ उनमे विशिष्ट मर्थ प्रतिपादन की भावना आती गई गौर गर्थ-सकीच का साधिस्य भाषा में लक्षित होने लगा। अर्थ विज्ञान के मनीपी बील का कथन है---'राष्ट्र द्या जाति जितनो ही घ्रधिक विकसित होगी उसकी भाषा मे अर्थ-संवीच के उदाहरण उतने ही प्रधिक मिलेंगे । उदाहरण के लिए-सस्कृत के 'मृग' शब्द का प्रयोग पद्म या जानवर मात्र के लिए होताथा पर श्रव उनका प्रयोग हरिए के लिए सीमित हो गया है। भार्या का अर्थ-'जिसका भरण पीपण िहमा जाय' अब यह पत्नी के लिए रूड ही गया है। गी (यम थातु से) का धर्ष 'गमन करने वाला' है परन्तु ग्राज गाम के लिए व्यवहृत होता है । 'मुर्गे' का फारसी भाषा में अर्थ पक्षी मात्र है जैसे कि शुक्रमुर्ग और मुर्गाबी (जन-पक्षी) से स्पष्ट है। पर उर्दू, हिन्दी में पक्षी विशेष का बोध होता है। धड़ा से किया जाने वाला प्रत्येक कार्य 'श्राद्ध' कहा जाता है पर श्रव मृत्यु के बाद के कार्य विशेष का ज्ञान कराता है। दूँढने पर प्रत्येक भाषा में सर्व-सक्तेव के भूनेकानेक उदाहरण मिल सकते है ।

भाषा विज्ञान ७१

क्याता का बाढी (मंश्र वाहिका) घर का छोत्रक हो गया है। प्रथ-परिवर्तन की निम्न दिशार भी हो सकती हैं -

¥ स्वीक्षं - स्व जिन्म सं क्यों क्यों स्व प्रत्य में स्विज जनत स्वी स्व प्राप्त को स्व कर के हैं। इसी को स्वाध्य करते हैं। प्रिक्त से स्व मंत्रास्त स्व इस्त स्व जिस्स के जन्म है। उह स्वीव्य के इसे हरेंग भागा संबंध है स्वित है। हैमें सहतुत्त संगयत दूर दूर स्व प्राप्त स्वा हरा साहि। संग्रुल हाता स्व स्व करते तथा सर्वाचित क्या के नित स्वदुत होता है। स्वा सन्य साल नित प्रतिस्वासन

संस्त से प्रमाण का सर्व पहुँ हाला था। सब स्वति या प्रमाण का बोध करमा है। सरत से क्षर पत्नी क्षण जीन कर के लिए समूत्र होता स्था सब सब्दे मुक्त बत्त के लिए प्रमुख हाला है। एस ही ट्रियन, बती स्वति सभी सब्दे मुक्त बता के लिए होने साहि सभी

 के लिए किया जाता है।

लुच्चा, पाखण्डी' का प्रयोग नीच, कपटी तथा पाखण्डी के ग्रर्थ मे प्रयुक्त होत है। इसी प्रकार, बाबूगीरी, बारी, दोस्ती, महाराज, महाजन का स्रर्थापक हुआ है।

६. प्रथापरेश-यह ग्रयादेश के विपरीत है। इसमें ग्रप्रिय तथा ग्रमंगत सूचक बातों को श्रिय तथा मुन्दर ढम से कह दिया जाता है। जिससे उनका दीए कम हो जाता है तथा ग्रशोभन में शोभन तथा भयानकता में सुन्दरता दिखा देती है। चेचक रोग के लिए माता, देवी का प्रयोग इसी का उदाहरण है विधवा होने के स्थान पर-मिन्दूर पुँछ गया, चूड़ी टूटना, सिन्दूर लुटना ग्रादि घच्दो का शोभनता के लिए व्यवहार किया जाता है। स्वगंवास होना, परनीक सिघारना तथा दिवगत होना शब्दो का प्रयोग किसी व्यक्ति की मृत्यू पर भ्रादर

७. ग्रर्थ भेद--- जब किसी शब्द का अर्थ परिवर्तित होकर ग्रन्य भाषा मे भिन्नता धारण कर लेता है वहा अर्थ-भेद होता है। यह अर्थ मे भेद की प्रक्रिया अनायास ही विना कारण के प्रयोग द्वारा हो जाती है। उदाहरण के लिए-सस्कृत शब्द 'धर्म्य' हिन्दी भाषा मे 'धाम' बन गया जिसका ग्रर्थ धूप है पर बगला भाषा मे पहुचने पर इस शब्द का ग्रर्थ 'पीनना'

हो गया । हिन्दी सहन ==वर्दाश्त तथा घरवी मे ग्रांगन, मस्कृत मे कुल ==परिवार ् तया ग्रद्शी कुल = समस्त के ग्रर्थ में घाता है।

द. श्रयं का मूर्तिकरण तथा धभूतिकरण-मूर्त भाव कभी-कभी ग्रमुर्त या सुदम तथा भाव रूप में परिवर्तित हो जाता है जिसके कारण धर्य में विरार हो जाता है। 'स्वाभिमान की रक्षा के लिए गज भर क्लेंज की प्रावस्वनता है', इस बाक्य में कलेजे का अर्थ हुदय न होकर 'साहस' है। इसने स्थल अर्थ में मुहमता का समावेदा हो गया है। इसके विपरीत कभी शब्द का धमून भूतं मूर्त हो जाता है। वह सर्व भाव, किया, गुण को स्वाग कर तिभी पदार्व या द्रव्य का बोध कराने लगता है। मीटा और नमकीन भाववायक होकर कभी-या प्रण मार्थ के हर में प्रमुक्त होकर मूर्त रूप धारण कर लेते हैं। रोशी मूर्त क्सी मिठाई के हर में प्रमुक्त होकर होते हुए भी जीविका वा मर्थ देती है।

६. इनक-इनमें नामा का मालकारिक प्रयोग माता है। स्पक-

भषाविज्ञान ७० वाग्रसिकाशन प्रयोग किया जानाहै। जैमे—बहपजाब-देशगेहै, बहनो

कीरण के भाव में भी होता है यथा रोग की जब भगड़ की जब। भोट— चया परिवतन को छाने दशनक को दिशार्थ भाग पूर्वदिशाधी के भन्तर्यन ही सा जाती है। स्थट बान के लिए यदादनसाद पेयेल कर दिसायना है।

प्रश्न १६ — सन्दार्थमे परिवर्तन होते के मुख्य कारण त्या हैं? उपयुक्त उदाहरण देवर प्रपत्ने उत्तर की पुष्टि कोजिए ।

्वत का सश्वरच-किसी सम्द क उच्चारण में जब एक विशिष्ट म्बनि

७४ भाषा-विज्ञान

पर बल दिया जाता है तो उस शब्द की अग्न ध्वनिया शोशित होकर निवंस हो जाती हैं तथा धीरे-धीरे लोग होने लगती है यथा उपाध्याय के 'भा' ध्वनि का रूप इसी बलापनरण का फल है। इसी प्रकार किसी सध्दे के प्रभे के प्रधान पक्ष से हट कर बल अग्न एक पर पड़ जाता है तो धीरे-धीरे बही अर्थ प्रभुख हो जाता है और प्रधान अर्थ हट जाता है।

उदाहरणार्थ--गोरवामी का अर्थ 'मायो का स्वामी' था। गायो के स्वा-मित्व तथा सेवा की भावना से धर्म के सम्मिश्रण से इसका उत्तर अर्थ 'माननीय भामिक व्यक्ति' हो गया और मन्तों के लिए इसका प्रयोग हुआ। अरबी शब्द 'गुलाम' तथा अर्थ की का 'गेद' (knave) का प्रयं लडका था परम्नु दास-प्रमृ पर बल अपसरण के कारण इनका अर्थ सेवक तथा धाराती हो गया। 'खुगुफा' को पालन करने से पृणा करन के अर्थ में इसी कारण से आया।

२. पोड़ी-परिवर्तन—मानव कभी भी पूर्ण तथा गुड रूप मे अनुकरण करने में अमनर्थ रहा है। दाव्य की ध्वीन या धर्भ में कुछ न कुछ अत्तर प्रवस्य पड जाता है। नई पोड़ी के लोग पुरानो पोड़ी के दावशर्थों का अमुकरण करते तमस अनेक मुद्रिया कर वैटेते हैं। हमारे पूर्वज पहले पर्ता पर लिखते थे। वाद वाली सन्तति ने लिखित सामग्री को पत्र समक्त लिया और भोजवृश की छाल पर दिखते के कारण उनको भोजम के नाम में पुकारा। धान भी मुक्प और रखत पत्र होते हैं। धोरे-धोर पत्र पत्रलेपन का मुक्त वन गया। तेन और कुदाल (कुगा लाने में चतुर) के प्रवं का इसी नरह का इनिहास है।

१. याताबरण में परिवर्तन—वातावरण में परिवर्तन ने सर्व-विकार हो जाना है। भौगोतिक बातावरण के परिवर्तन से सर्वा भी करत जाते हैं। जैंगे मंत्रीजी तकद Com मामाज वर से मन्त्र के लिए प्रवृत्त्व होना है परन्तु सप-प्रोत्ता में यह कना ना वाचन है। प्रापीन वैदित क्यापी में 'एन्ट्र' ना प्रयोग राजनी वेत' के लिए होना या परन्तु बाद में ऊट के निए होने लगा।

'खनाव। या क कर दान का कारण मानाजिक वातावरण भी है। गिरजा-प्राध्याप में परिवर्धन का कारण मानाजिक वातावरण भी है। गिरजा-पर से उपरेशिका के लिए Mother और सम्पताल में नमें के निए Sister का आपे माना और बहिन से जिन्न होता है। ब्यास्थान-राता के लिए आई, जीवन का सुन्त ही फर्म गूरीन है। सोहिक प्रयाए तथा रीति-रिवाज में परि-



413134314

है। मानव-पूर्ति सन्दा की सिन्सम्ता ने स्थिक सावित्व हो बानी है।
पासाना आने भी—सहर काला, सीच काना तथा दिया बाना धौर निवृत्त होना सादि करा जाना है। सिन्दी होने को—"बीच आरी होना' तथा पेसाव नी 'सापक्स' तथा न्यूयवा' कहा जाता है। पर्देशा सा भवन्या की हिसाने का भी मानव प्रवत्न करना है। उधाहरवार्य—पेशक को देवी सा माना नवा हैजा में कै-दल होने वी 'मुह सीद पेट पनना' कहा जाना है 'येवक' से मर्भी स्थिक होने की 'सीन्दर्स' पहीं जाता है। कभी कभी नद्द सा छोटे कार्यी वो मी मनुद्द सब्दों के

कभी-कभी धर हैत है। विपाल के लिए परने गर्म्स का स्परहार किया जाता

रहा जाता है। भीतन को महनरानी तथा रमोइए तो महाराज भी ठाड़ुर पहा जाता है। इस प्रशास की भावना में ग्राहों के भावों में परिवर्तन ही जाता है। ७. द्याव~स्थांच के कारण ग्राह्मार्थ में विकार भ्रविदेश के भ्रत्वमंत होता है भीर भागे उन दाव्हों का नथीन भर्थ ही प्रवर्धित हो जाता है। मूर्ल के भ्रामी मंपूरे पण्डिन', पूरे देवता', 'दिमाग का पूरा', 'सकल का स्वाना'

द्वारा द्विय यना दिया जाना है। भवी को जमादार या मेहनर (महत्तर) नया पाएतना माफ करने हो 'कमाना' वहा जाना है। पत्राची में नाई को राजा

होता है घोर प्राप्ते उन सब्देश ना नयीन धर्य ही प्रविनत हो जाता है। मूर्य के प्रर्म में 'पूरे पिड़न', 'पूरे देवता', दिमान का पूरा', 'प्रकल का स्वताना' धादि राज्य चल पडे हैं। 'पूरे हरिस्वन्द्र के धवनार' धमत्यवारी तथा 'लक्ष्मी' के पूर्ति 'दीन व्यक्ति के लिए व्यथ्यका में प्रयोग किया जाता है।

इ. इर्रास्तत योग्यता—सन्द का यर्थ भावना पर भी यथिकासतः टिका रहता है। एक व्यक्ति यमनी व्यक्तिनत सामय्यो तथा भावना के यनुसार भागा का प्रश्नी निमान के विष्णुक्त प्रश्नी व्यक्तिनत सामय्यो तथा भावना के यनुसार भागा का प्रश्नी निमान के विष्णुक्त योग एक गणिवाज के विष्णुक्त योग तथा एक गणिवाज के विष्णुक्त योग तथा एक गणिवाज के विष्णुक्त योग हो होगा । सन्दी में प्रश्नी का प्रमित्तय होने पर हो एक सन्द का भिन्न-भिन्न पर्ध निया जाता है। कांत्रण के व्यर्थ को एक निष्वत सीमा न होने सम्बन्ध में भी भी भेद हो जाता है। इसी प्रकार के सन्द पाप, पुष्ण, यमें प्रीर कर्म हैं।

भाषाविश—भाव-शवतता या श्राधिक्य से शब्दों के ग्रर्थ में एक

भाषा-विज्ञान 1919

विदोपता भ्राजाती है भीर भर्ग में परिवर्तन भाजाता है। त्रोध के भावेश में माकर शब्दी का विभिन्न मर्थी में प्रयोग होने लगता है। कोध में उच्चरिन शब्द 'बच्च' बच्चा का बाचक शब्द न होकर तुच्छनाका प्रतीक बन जाता है। उसी प्रकार 'राक्षस' मौर पाजी में एवं प्रकार की हीनता का भाव रहता है।

स्नेहातिराय में भी कठोर दाब्द में प्रेम तथा स्नेह वा भाव पल्लविन हो जाता है। पिताना प्रेम के आबेदा में पुत्र को 'पाजी' गदहा, दुष्ट पगता तथा 'दौतान' कहना बुरे ब्रथ्में में प्रयुक्त न होकर पुत्र की चपलना ब्रादि गुणो का धोतक होता है।

है तो उसके भाव या ग्रर्थ में थोडा-बहुत ग्रन्तर ग्रवस्य ग्रा जाना है। जैसे---फारसी में मूर्णका द्वर्ष 'पक्षी' है पर हिन्दी में एक पक्षी विशेष का नाम है। पहां ग्रर्थ-सर्वोच हो गया है। फारभी का नदी बाचक 'दरिया' बद्द गुजराती समुद्र का घर्ध देने लगा। संस्कृत का 'नील' घड़द गुजराती में 'नीली' अनकर

१० भाषान्तर—जब एक पन्द एक भाषा में भ्रन्य भाषा में प्रविष्ट होता

हरें रग का छोतक हो गया। हिन्दी की बाटिका (बगीचा) बगाली में बाडी (घर) बन गया। . ११. भावों की स्पष्टता के लिए झलकार-प्रयोग--- प्रशंगान्त्र के मनीपी

कील कर बलाय है कि बारकारों के जारण धर्मातरियक्त गढ़ क्षण में है। जाना

भाषा विभान

प्रधान होता । 'तमन' पाद्य माती को पत्य पर्ध तथा विद्यार्थी को 'तमनो' ता पर्ध देता है। मही पत्रस्या योजी बी है। १२. प्रधर्में का समित्र प्रशेत—पर्ध-तिरकृत में भी 'प्रवत्त-तायव काम करता है। तम याची में प्रधिक पर्ध की स्वतना हो जानी है। एक दो सस्ट

करता है। वस भारती अवाय-स्थानस्थान सभी "बहलनायव काम करता है। वस भारती में स्थानक साथी के स्थानना हो जाती है। एक दो सब्द प्रयोग में पुरु जाते हैं। यथा रेतगाही से 'रेल' रेलब स्टेशन में 'स्टेशन' तथा माहित्त रिक्ता में 'रिक्ता' हो गया।

१४. वृतरायृति—कभी-कभी वारों के दुहुरा प्रयोग बनने से पर्ययारि वर्तन हो जाता है। प्रव 'मनवातिरि पर्यत' द्विड भाषा में मनव पर्यन को महते हैं, महत्रन में विरि ना पर्याभी पर्यन है। पन दुसरे द्वित प्रयोग से मनवातिरि एक पर्यन ना नाम समभग्र गया। इसी प्रकार का प्रयोग विष्यावत

द्वोर दिमाचल पर्यन के प्रयोग में भी है।

१५ किसी साब में विशेषता का प्रापास्य—कम्बुनिस्ट लाल भण्या की
विशेषता है 'लाल भण्या' नाम ने पुकारे जाते हैं। लाल-पण्यो घोर तापी
होती का पूर्व विषयही तथा कार्यसी व्यक्ति के लिए बहुत पहुँत से चल रहा

है। इन प्रतर घनेर कान्यों से घर्य-विकार हो जाता है। प्रदन १७—सहकृत ध्यति-समृह का बर्गीकृत परिचय देकर यह बताइए कि क्रिजी-ध्यति-समृह से उसकी सुसना में क्या मुख्य परिचल हुए हैं?

घयवा

हिन्दी व्यक्तियों के विकास पर एक लेख लिखिए।

हिन्दी ब्वनियों का विकास पर एक तहा लावार । हिन्दी ब्वनियों का विकास-प्रम वेदिक मुत से ही हमें उपलब्ध होता है। यत: दिन्दी ब्वनियोह का मुताधार प्राचीनतम वेदिक ब्वनि-समूह हो है। यह पेदिक ब्वनि-समूह हो वाली, प्रास्त एवं घराग्र में के ब्वनि-समूह में प्रका हित होता हुमा देवत परिवर्तन के साथ ग्राय हिन्दी ब्वनि-समूह के कम में विकासित हो हमा है।

 भाषा-विज्ञान ७।

स्वर—मूल स्वर ६ है—म, मा, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, स्, न्। सपुनत स्वर ४ हैं—ए(प्रइ), मो(ब्रउ), हे (माह), मो(ब्राउ)।

ब्यजन—स्पर्वे व्यजन २४ हैं—कठ्यं—कृख्यु प्रुः।



तानव्य—च्छ्ज्भ्ज्। मूर्थन्य—ट्ठ्ड्ड्ण्।

दन्त्य--त्थ्द्ध्न्।

भ्रोप्ट्—पृज्वभृग्।

मन्तस्य ६ है—म् (इ्), र्,त्व्,ळ,ळहा घोष ऊरम ६ है—स्युम्।

सघोष उत्म **१ है**—ह एक गुद्ध धनुस्वार— (⁻)

मात्र प्राचीत नाम भी बहुत भी ध्वनियों के उच्चारण में विधानता हो गई है। उन्हें मोनेक परिवर्तन नया विचार हो गई है। चहुन भी ध्वनियों तो पुत्र हो गई है। उदाह पण के नित्र खरानियालय में गई कि उचाहरण के नित्र खरानियालय में गई कि उचाहरण के नित्र खराने के में भी उन्हेंत कि गया है प्राचीत गया है प्राचीत में में भी उन्हेंत कि गया है प्राचीत गया है प्राचीत में हैं के महुतार लें (बैंग ब्युव्ध में) चा उच्चों के महुतार लें (बेंग ब्युव्ध में) चा उच्चों के महुतार बंदी के महुतार के प्राचीत है। दिश्ल का में से प्राचीत है। इस मात्र के प्राचीत है। इस स्वचीत है। इस स्वची

147	
रिन्त सर्वेश सर्वेश स्त्र वर्ष	दिशास इ.इ.न
यद- इ.ई प्रा. पर प्रा	۔۔۔ ا
वान समा । ७,०० पर, पर । मा	
द्यांष्ट्र यस्यं पूर्वत्य नातस्य कर्य	स्तर स उन्मे
रार्त धनप्राण प्रयो तद टड बज क्य रार्त महायाण फ भ प्रयो ठड छ भ स्य स्तुर्गाणिक म् य प्रजे ड पार्दिक फ्रायाण स्व महायाण व व ह उत्पाद द प्रयोगीय स्व	
मर्दस्वर उ(व) इ(य) मूर्लीय	: ₹
वाली तथा प्राष्ट्रत की स्वतियां — कुछ वंदिक स्वतियों का लीप । गया है, पेप स्वतियों का प्रयोग ययानत होता है। छ, छ, मृ, ऐ, प्रयोग है, जिल्लामुलीय तथा उपस्पातीय दन दब स्वतियों का प्रयोग होता है। साथ ही हरूव 'ए' धोर हरूव 'धो' यो नयोन स्वतियों के पानी में हो तथा है। इसमें नेजल सकार का प्रयाग दिया जाता है विसां हा भी प्रयोग नहीं होता है। पूर्ती तथा प्राहृत भाषायें स्वतियों को दृष्टि से प्रायः समान है।	मी, श्प् गपाली है गमागमन है। इसमे
पाता तथा प्रारुप नायान ज्यानमा का पुण्ड स प्राय: समान ह	1 41441

के मृतिरिक्त मृत्य प्राहतों भे युधीर मुना प्रयोग नहीं होता है। मागधी

क प्राप्त पर भी 'द्र' का प्रयोग मिलता है। अशोरु के पश्चिमोत्तरीय में 'सुंक स्थान पर भी 'द्र्' का प्रयोग मिलता है। अशोरु के पश्चिमोत्तरीय

वित्तिलेखी प्राहृत में 'प्' भी मिलता है। लिया नाइय हिन्दी ध्वनिसमृहे—हिन्दी अनि-समृह की प्रथिकास ध्वनिया परम्परागन क्षित्र स्थाप परम्परागत क्षित्र स्थाप परम्परागते क्षित्र स्थाप से साई है। बुछ व्यक्तियों का विकास हव से



اننا کے

दणबारण के के एक के दर्गर है हर है अरहत एवं बार प्रदेश प्रदेश पूर्वा है eteint trennietes

हिन्दी स्थानती का बरीक्रमाच्या हाईन्ड न्तांदर्श कांट्रीस हिंदी है it erege mit & er gean ale er enten at einer felbeief में बोर टाम है। इर दहार मन्द्र कर में माहित्वह दारोब रिपी में

ध्वविद्धा को द्वित से १६६ देश हम वर्ष काम किया बादी है-(!) htere a and (a) m (A) mi (D 28 (1) 18

(2) (b) (F)

मु राजती ज धनुरुविक १वर सन्छ रूड भी पान भार है। (२) मार्ग —हत्ववा, १६५६ पृष्द्भु रृष्ट्भु

(३) धर्त संपत्री - पंत्र क्रम्म

(४) धनुनानिश्च - ~ (२१) म् न् स्टब्ट्स्स्ट ।

(१) पार्रिक ल्(१) ।

1 (22) 7- 12077 (2) (०) अस्तान-४ ।।

(०) सवर्षी - इन्युत्य्य प्रवा

(१) प्रद्वास्वर - वृष् ।

• 1

(चीएटक में दी हुई ध्वतियों या प्रयोग नेयन हिन्दी की बोतियों से होता (s &

प्राचीन वैदिक धानि-गमूहसे हिन्दी ध्वनि-समूह के निकास पर एक सक्षित्र परिचा प्रस्कुत करते हैं। इसके कुछ उदाहरण निम्नतिनिष है—

संस्कृत की ध, धा, इ, ई, उ, द ध्वतिया हिन्दी सन्दों में 'धा' के रूप में मिलती है। जैसे -

सस्कृत -प्रहर, मादवर्च, वास्दि, गर्मिशी, मृत । हिन्दी-पहर, प्रवरन, बादल, गामिन, मरा ।

इसी प्रकार प्रत्य स्वरों में भी मनेक परिवर्तन दृष्टिः थ्यत्रशे में सरहत के, कान्यत्र के उस, के, सह प्यति के रूप में मिलती है

संस्कृत-कर्नुर,



इन व्वनियों के उच्चारण स्थान तथा रोति को दृष्टि से दो देशी जाते हैं-१. स्वर श्रीर २. व्यजन । जब स्वरयंत्र की तित्ररी वीमा के हार्र के सदृश बापस में ऋंडत होकर भीतर से बाती हुई स्वास को शित हा देती हैं तब घोप उत्पन्न होता है और स्वरों में इस घोप की स्वित रहती है। डा॰ मोलानाय तिवारी ने स्वर को परिभाषा इन प्रकार हो है 'सा प घोष (कभी-कभी अघोष भी) ध्वति है जिसके उच्चारण में हवा अशह धी से मुख-विवर से निकल जाती है" प्रीर ऐसा कोई सकोच नहीं होता कि विनि मात्र भी संघर्ष या स्पर्ध हो । स्वर के प्रतिरिक्त ग्रेप सभी ध्वतिश्री सम होती हैं। व्यंत्रन वह प्रघोप या सघोष ध्वति है जिसके उन्त्रारण में सार्ट नितका से आती हुई स्वास को मुख-बिवर से निकलने में पूर्वहर से प्रवा कुछ मात्रा में अवरोध उपस्थित होता है। अतः स्वर भीर स्वतन में यह पार हो जाता है कि स्वरों के उच्चारण में स्पर्श या वर्षण नहीं होता, पर स्वर्श के उच्चारण में थोड़ा-बहुत स्पर्ध या घपंण प्रवश्य होता है। स्वर्ध का उच्चा रण घडेले भी सरलता से किया जा सकता है किन्तु व्यवनों का घडेते उन्हर-रण करने में विशेष सावधानी भवेशित है। व्यवन की प्रदेशा स्वर पश्चिक हैर तक मुनाई पहता है। 'क' को मपेक्षा 'म' की व्यनि मधिक दूर तक पुनाई पहती है। इसी फारण ब्यंजनों का उच्चारण प्रधिकांश हव में स्वरों के सहरीन से ही होता है। स्वर तो सभी नाद माने जाते हैं पर स्वतन नृष्ठ नाद मौर रूप स्वान होते हैं। सामान्य नियम के मनुनार एक ही जन्यारण स्थान से बी वाने वाने 'नार' का प्रति वर्ष 'स्वाम' प्रवस्त होता है। वेवे-कड, तालु, मूर्चा, घोष्ठ, दल, दलव्वी

स्वरों का बर्वीकरण-स्वर वह स्थाप ध्वति है जो मुणावहर से प्रजाप

सुनि में निक्त का है है है करों के बर्गीकरण के ब्रमुल प्रायश किशकित है-१, मुत्रदिश ने श्रीच अध्याण करने ने प्रश्व गर्यक स्वर है। स्वर्ध इ स्ता, बिहा के सिन आतं के सर्व का प्रशासन शक्त है। सार

न्त्री व स्थित हुन विद्रा और शाम को समयाओं से उपनत्त तर है ह



34 L

. . .

राम् का में था। सभी स्परों के ये दोनों रूप समय है। सादारण खरं पतु

नासिक रहित होने हैं। (६) स्वरतिवयों की स्थिति में पर्यण के कारण बम्बन होने से जो खर

निकताते हैं उन्हें घोष रहते हैं। घषण-हीन स्वरध्वनि को संघोष कहते हैं। प्राय. स्वर घोष होते हैं। प्रनधी में प्र, इ, ए के प्रघोष रूप नी मिलते हैं इड़ मादि । (७) उच्चारण करते समय मुखविवर की मासपेशियाँ तथा प्रग^{क्षी}

कभी कठोर होते हैं और कभी शिविल सतः ये भी इस दृष्टि से शिविल (Lax) मीर दूड (Tense) कहे गये हैं। म, इ, उ शियल है तथा ई, ज दूड़। ए भादि ध्वनियाँ दोनो की मध्यवर्ती हैं। कण्ठ-पिटक और विदुक के बीच उँगती रखने से शिविलता और दृढता का धनुभव हो जाता है।

(प) बुछ स्वर मूल (Monophthong) होते है तथा उनके उच्चारण में जीभ एक स्थान पर रहती है; जैसे ग्र, ई ग्रांदि। कुछ संयुक्त स्वरो Diph

thongs) में एक स्वर से दूसरे स्वर तक जाती है। यया अवधी से ग्र ए (ऐ) स्रस्रो (मौ) स्रादि। व्यजनों का वर्गीकरण-व्यजनों का वर्गीकरण उच्चारणोययोगी प्रवयनों

के बनुसार भौर उच्चारण भी रीति के बनुसार किया जाता है। इन्हीं की क्रमक्षः स्थान और प्रयत्न कहा जाता है। स्थान के माधार पर व्यजनों के निम्नलिखित भेद है--

१. काकस्य या उरस्य (Glottal या Laryngeal)---यह काकल स्थान से उत्पन्न ध्वनि है। यथा--हिन्दी का 'ह'। २. जिह्वामूलीय (Uvular)—यह जिह्वामूलक या जिह्वापरच से उच्चरित

होती है। जैसे क, स, ग आदि। फारसी के प्रभाव से ये हिन्दी में भी बोली जाती हैं 1 ३. इंड्य (Guitural)-कड तानु का मन्तिम कोमल भाग है भीर उसने

उत्पन्त ध्वति को कठ्य कहा जाता है। जब जिल्ला मध्य कोमल तालु (Softpalate) का स्पर्ध करता है। जैसे क, ल, ग, प, छ।



40

४ पारिक्ट (Lateral)—इन स्वतियों में हुना मुख के मध्य में रह जाते में जीभ के धगल-बगार या पारवें में बाहर निक्रतती है, यथा प्त' ।

६ गुष्टिन (Rolled)—शोभ की नोक को कुछ बेतन की तरह सरेट या मुच्छन करके यथने या तालु का स्पर्त करके यह ध्वति तत्तन्त्र ही यात्री

है। इसे संदित भी कहते हैं, जैसे पर'।

 ब्रिस्टर (Flapped)—बीम को सपेट कर तानु के हिमी भाग पर भटके से घोड करने पर तथा उसके हटने पर यह ध्वनि बत्यन होती है, वैने ₹. ₹ 1

= मर्जस्वर (Semi-vowel)-इनके उच्चारण में बायु का प्रवाह बहुत थीमा होता है। ये एक प्रकार से स्वर ग्रीर स्वजन के मध्य की व्यतियाँ हैं। जैसे य (इ), व (उ)।

ध्वनि-वर्गीकरण के सिद्धान्त

स्वर-तन्त्रीय प्रयत्न-इसके भनुमार ध्वनियों के दो भेद हो सकते हैं, घोष भीर अयोष । हिन्दी ध्वनियों में सभी स्वर, क-वर्ग आदि पीनों वर्गों की मन्तिम तीन ध्वनियौं (गयङ,जक्तञा मादि) य र त व ह ज ग्रमारि घोप हैं। शेप सभी ग्रदोप हैं।

प्राणत्य के भाषार पर -- श्वास-यल के ग्राधिवय या कम होने पर उच्चरित ध्वनियौंदो प्रकार की हैं—- ग्रल्प-प्राण तथा महाप्राण । जिनमे 'ह' की ध्वनि विलती है ऐसे व्यजन महाप्राण होते हैं, जैसे—ख, घ, छ, ऋ, ठ, ढ, घ, घ, न्हें,

फ. भ. म्ह, रह, ल्ह, ड मादि । शेष घलस्त्राण है ।

धाम्यन्तर प्रयत्न-(Degree of openness)-इसके धनुसार ध्वनियो के स्वर प्रीर व्याजन दो भेद हो जाते हैं। इसके पश्चात स्वर के ब्राग्न, पश्च,

मध्य तथा सबूत, घर्ड-सबूत, घर्ड-बिबृत भीर विवृत भेद हो जाते हैं। दूसरी ब्रोर व्यजन के स्पर्ध, सवर्ष, अनुनाधिक, पादिवक, लुण्डित उत्सिप्त और स्पर्ध संघर्षी भेद होते हैं। इनका वर्णन ऊपर कर दिया गया है।

उद्यारण-स्थान-इस दृष्टि से स्वरयत्रमुखी, जिह्नामूलीय, कठ्य, मधंन्य, तालव्य, बरस्यं, दन्त्योष्ठ्य ग्रीर द्वयोष्ठ्य ग्रादि भेद हो जाते हैं।

प्रमुनासिकता—इस प्रकार वर्षों के तीन केन्द्र / 1 क्रीनिक कर



हाता; विकिभी वालानाः प्रमानाः ।

(त) मध्य रवर सीव (Syncope)—इंगमा प्रयोग पविकार उन्तर भे होता है, मबागरपूर्व न्धाई म, इमनी ==इस्त्री, सब्भव =सम्बन, बगोव=

यहरेव, do not ∞don' । (ग) मन्य स्वर सोच – भीरे-भीरे हिन्दों के दाद के मन्य स्वर सो ती हैं बता है भीर वे स्वकास्त होते जा रहे हैं. मया—सन = मह, जिल्ला निक्त साम – साम कार्य कर सार्थ

निन, माम = मान् मन्य रा- निज्ञा (स०) = नीर, जाति - अत्र, सार्व = पान मादि। (प) मादि स्वजन सोप - स्वनियों के ये रूप मध्यस्वतः हिन्दी तर्वा प्राहृतों ने पाये जाते हैं जिनमें सहत्व सबस के मादि स्वतन ना तीप हो प्रा

है। उत्तरस्वारं—ग्कप - कपा, स्वान =धान, स्वाली =पानी, स्कान= भवान, hnic=mic । (उ) मध्य त्यत्रन लोप—प्राप्तत तथा हिन्दो ग्रामीण गोवियो थे यह तीर प्रधिशस्त्रन दृष्टियन होता है, यथा बचन = बग्नम, श्रिय=धिम, गॉनगों= गानिन, वार्तिक=वार्तिक, उपवास ≈वपास, श्राहिन=बाहन, पर्देशरं=

परवार, कोकिन≔कोइल। (च) प्रत्य व्यजन लोप—ऱ्सके उदाहरण कम मिसते हैं। जैसे~ बार्स

च्चाम, उप्टू = क्रेंट, सत्य == मत्। (छ) आदि कक्षर लोप-- यही प्रशर का अर्थ क्वर और व्यवन का योग है। जब दो समान अक्षरों के एक साथ आने पर प्राय-एक का लोग हो जाठी

है। उसे विश्व का पूज, university=varsity झाँद । (ज) मध्य सक्षर लीय-भाष्यागर=भडार, गेहूँ बना=गोबना, दरसवत =दस्वत ।

(स) प्रत्य प्रक्षर लोग (Apocope)—मोतिक=मोती. सपादिक= सवा, माता =मी, निम्बुक=नीव तथा भानुगया=भावव।

(त) समाक्षर लोग (Haplology)—मनोरकन भाषा-विज्ञानी व्यूप-फीस्त्र के मतानुबार इशका वर्ष है (एक को जानना'। इसका सर्थ है कि शब्द में एक ही स्वित, सक्षर या स्रवर-समृद्ध के



रग⇒रगत्, परबा≔परवाह; कल⇒कल्ह् ।

भादि-प्रक्षरागम-गुजा = प्रमुची (भोजपुरी)।

मध्य-प्रक्षरागम--खल=-खरल, भ्रालम=-भ्रालक्स ।

वध=वष्टी, भ्रन्त-भक्षरागम—श्रांख—श्रांखड़ी, जीभ ∞ जीभड़िया, स्रौके ≔द्मौकडा द्यादि ।

३. वर्ण-विषयंग (Metathesis)—इसे 'वर्ण-व्यत्यय' भी कहते हैं। कभी-कभी स्वर, व्यजन तथा ग्रक्षर किसी शब्द में परस्पर ध्वति-विनिमय या स्थान परिवर्तन कर लेते है, उसे वर्ण-विपर्यय कहते है। जैसे 'ग्रमहद' से 'धरमूद'। जब पास-पास की ध्वनियों में विषयंय होता है तो पाईवंदर्जी कहलाता है । ग्रन्यवा दूरवर्ती ।

पार्क्वर्ती स्वर-विपर्ययय — इण्डो भाषा मे lie=lei (बनाना) ।

दूरवर्ती स्वर-विवर्षय-कछ =कुछ; पागल=पगला: विन्द=ब्द, भादि। पारवंबर्ती व्यजन-विषयं = ब्राह्मण = वाम्हन, सिग्नल =सिगल; बिह्न = चिन्ह ।

दूरवर्ती व्यंजन-विषयंय - महाराष्ट्र = मरहठा, वाराणसी = बनारस; तमगा ≔तगमा ।

पादर्ववर्ती अक्षर-विपर्वय=मतलब—मनवल, वफर (ग्रवेन्ता)=बरफ (फारसी)।

दरवर्ती ग्रक्षर-विवयंव-लखनऊ =नखलऊ, नारिकेल =नालिकेर, चाकू =कावृ । सन्दास-विवर्षय—दो सन्दों के घारम्भ के घनो मे विषयंग हो जाता है।

जैसे चुरहा-चीका = चीरहा-चुका ।

<u>.</u>... -

Y. समीकरण (Assimilation)—इसे सारप्य, सावण्यं भी कहते हैं। इसमें स्वरंग व्यवन एक दूसरे को प्रमावित कर सवातीय वर्ण बना लेते हैं। इसके दो नेद होते हैं-पुरोगामी मीर परवनाभी । अत्येक पादवंतामी दूरनामी से दो प्रकार वा होता है।

क न्यान्य श्रेष्ट का द्रामाण बालिया से अध्येद उठा उठ्याप्त का लाख हो गया है। पारवेवतीं पुरोगामी समीकरण में त्वत्यि यस यस वर्ष हुई भ्रमाव द्वालती हैं। प्राहुत से इस प्रकार की स्वतियों की फलिकता है। की

षक≃षका, लाल ⇔मार्ग यस्य अस्त वर्ण प्रवास गरा । १०० प्रवर्ण ध्वनि दूसरी ध्वनियों को प्रमातिक इसकी है। हुए से प्रथम के उत्तर में परध्यनि पूर्वे स्वति को ब्रमाबित कासचारित या सवार वसार है। त्रपा—प्रश्वट काका जीज जा पालान प्राचन स्थान स

पाप-पाम की द्वतियों से पश्चितंत्र होता है . तैन सम जार द्वार राज (दुरुष), सर्व = सन्त ।

स्पनन के भ्रतिश्वित स्वयों से भी इस प्रकार का परिवास पार है। पादवं-पूरोनामी उदाहरण सुरज सरज स्थानी ≘ार्गन नथा द्राराणमी के साहरू ⇔ साहद्र सादि है। उसी ब्रक्तर दुर परवगाम'स _ ग्रेंगनि - ~ ~ ती .

इस== उक्क तथा पादर्व-पटबनामी समीवन्त में — भाजपुरी मंगी पता पंजब महेल ह को 'कब इइलह हा जाता है। पारस्परिक ध्याजन समीकरण (Mutual Assimilation)--मे द! पार्श्व-

वर्धी व्यवनो के पारम्परिक प्रभाव डालन के कारण दोनो ही परिश्रीत हो जीते हैं ग्रीर एक नीमरा स्वजन वहाँ ग्राजाना है। उदाहरणार्थ— मन्य = सब, विद्युत = विद्युती, वृद्धि वृभ वाद्य बाजा, कतरिका = करारी ग्रादि । १ विवमीकरण (Dissimilation) - यह सभीकरण का विवर्गत रूप है। इसके ब्याजन तथा स्वरंदा भेद है। ब्याजन के पुरोगासी विषमी रणण मे भयम व्यवन ज्यो का त्यां रहता है ग्रीर दूसरा परिवर्तित हो जाता है, यथा — नाक=काग, सागृँसी = लगूर, वक्णं = कगन, \[armor (सेटिन। = Marble इसी के पश्चनामी क्या में प्रथम स्थानन में परिवर्गन हा है। देरिट=दिलहर। स्वरो के पूरोनामी विषयीकरण में -िर्यक = टिक्ली, पुरुष = पुरिस मिलता है तथा पृश्चगामी विधमीकरण मे-- नार =

ने इर, मुकूट = मजर, मुकूत - वजर । ६ सभी भी एकी शाव — सधित विकारों रा स्वति-विकास स्टा महत्व है। बुछ ध्यवन (व व, य, म ग्रादि उच्चारण म स्वर के समाहान के कारण से स्वरंभे बदल जाते हैं और धपन पूजवर्जी व्यवन मंगित जात है।





भाषा-विज्ञा

के झापार पर मानव की विकास तथा विकेश सक्ति प्रयक्त-पूर्वक होती है। एक

٤٤ समना है।

सामग्री के सध्ययन से निम्न कारणों पर प्रकाश बड़ा है भीर मार्ग पड़ ने शारीरिक या वाक्यान की विभिन्नता—शारीरिक या वाक्यन की विभिन्तता से ध्वतियों ने नेद पैदा हो जाता है। सारीरिक सववव तथा संस्थान की दृष्टि से प्रत्येक व्यक्ति ने मन्तर है। साथ ही मस्तिष्क्र की गुक्ता या तपुता

विद्वान के विचार करने की इकाई प्रविधित या मुखं वाकि से जिल होती है। इतना ही नहीं व्यक्ति के बाह्यन्त्र की रचना तथा सामर्थ्य में भी विभिन्ता है। वाक्यन्त्र सर्देव देश, काल घोर स्थान से नियम्त्रित रहता है। यही कारण है कि सत्कृत के 'स्'का उच्चारण बंगाली में 'स्' और ईरानी में 'ह्' हो गया। यह रहा बोलने का कम। श्रवणेन्द्रिय मे एक उच्चरित व्यक्ति के श्रवण हार्य में भी अन्तर ब्रा जाता है। जैता हम एक विशिष्ट ध्वनि को मुनते हैं वैसा उच्चारण नहीं कर पाते। धतः ये ग्रन्तर कालान्तर या सदियों के पश्चात् ग्रध्ययन करने पर प्रत्यक्ष भनुभव किये जा सकते हैं। सहज और स्वान भाविक रूप से ध्वनियों का उच्चारण ध्वनियों से विकार पृदा कर देता है। फलत भाषा या पद में ग्रागम, लोप ग्रादि हो जाते हैं। २. धनुकरण की अवूर्णता तया धनानता - वाक्यन्त्र और श्रवणेन्द्रि बीच की कड़ी अनुकरण की प्रवृत्ति है। किसी व्यक्ति के उच्चारण का व्यक्ति पूर्ण अनुकरण नहीं कर पाता, या तो वह आगे वड जाता है या पीछे जाता है। इसी कारण ध्वतियों से मन्तर भा जाता है। अनुकरण की भीपूर्ण प्रायः बच्चो में ब्रधिक स्पष्ट होती है। वह रोटी को 'लोटी' तथा चीज 'विज्जी' कहता है। यडा होने पर यह भेद सूक्ष्म रूप में बनारहना है ग्रं इसका स्पष्ट रूप विदेशी ध्वतियों के प्रमुकरण में मिलता है। बाह्यण व 'ब्राह्मन' तथा कनेक्यन का 'करकत' इसी कारण होश है। इस मनुकरण के ब्राजिश में मजानता का भी पर्याप्त योग रहता है। किसी घ्यति के विव

निस्चित या पुद्ध-ज्ञान के उच्चारण का ठीक प्रतुकरण नहीं हो पाला धौर फल ्रस्त्रहर्ग व्यक्तियों में परिवर्तन हो जाता है। अनिरिचन तथा विदेशी सब्दों में मह विकार विशेष हा से होता है। लोक-भाषा में 'मोबरिवयर' का मानेयर.

। पंजर अवय दर्ज इन्सेडर या कम्पोटर हो गया है •



€ष भाषा-विज्ञान

प्रयत्न-ताप्रय का क्षेत्र एकांगी न होकर सर्वागी तथा विस्तृत है।

- साहर्य (Analogy) — ध्वनियों को स्पृतिग्राह्म तथा ध्यार होने।

यनाने का श्रंय साद्य्य को है। सुगमता के उन्हें स्व मे श्रम्य ध्वनि को तमनतः

वसा साद्य्य पर सन्य ध्वनि को वाल निया जाता है। यथा द्वारा के साह्य

पर एकदा भी एकाद्या तथा तैतीस के साहर्य पर संतीस में भनुगतिकता

गई है। स्वर्गकी समानता पर नरक 'नक' हो गया है।

१. यलाधातक और सगीतास्मकता—ये दोनों भी ध्विन-विकार के कारण है। यक्टर की किसी ध्विन पर प्रियक्त वल देने से प्रमय सगीयदर्श ध्विनों कर और होने स्तुप्त हो जाती हैं। यथा — घाम्यन्तर के मध्य में बल का माराव होने से 'ध्य' का लोप होकर 'भीतर' रह नाया। इस मकार 'प्लाप्याय से 'भी रह स्था। घारोह-धवरोह के स्वरम्भन से संधीत का स्वराधात सनृत तथा विवृत रूप धारण कर लेता है। इसी से 'द' का 'ए' तथा 'ड' वा 'धे' ही

जाता है, जैसे 'कुण्ड' का 'कोड़' (बिल्व' का 'बेल' में समीतासक स्वराधात की अज़क है।

१०. काव्य में मात्रा या तुक-कवि लोग घल्यानुवाय या तुक तत्ता नावा के दृष्टिकोण से मनमाना परिवर्तन व्यवित्यों में कर तेते हैं। भक्तिकात तथा रिविकाल की कविता में यह प्रवृत्ति दर्शनीय है। विकरात का विकरार, कमतः = कमस, हिष्यार = हरनार माबि ज्वाहरण वित्ते हैं।

् ११. स्वामाधिक विकास या परिवर्तन-इसको स्वयंत्र विकास भी नहीं हुं। इसमे स्वामाधिक रूप से पिसकर सन्दों की व्यक्तियों स्वयं विकसित हो। ताती हैं।

धाती हैं ! जदाहरण—सर्थं ≕सीप मया ≕र्म क्षप≕कृषा वर्तते ≕गटे पारि ।

१२. विदेशी स्विति का प्रभाव तथा प्रभाव—किसी भाषा ने बन्न भारा ही विधिष्ट स्टेनियों न होने हे प्रभानी भाषा की विमानी-तुमती स्थानों हो उन्हों पूर्व कर भी बाबी है। प्रवेशी की वर्ष 'ट', 'ड' प्यनियों हिनों की वन्हों पूर्व कर भी बाबी है। प्रवेशी की वर्ष 'ट', 'ड' प्यनियों हिनों की पूर्व मा अन्य में परिवर्जित हो पाई, वैसे—िशोर्ट ने परार' नया इंस्क ने पूर्व मा अन्य में परिवर्जित हो पाई, विस्ता के मनाव से हिनों में गुण भीर पुरुष | हिनों में निधे Gupts, Missa के मनाव से हिनों में गुण भीर

१:. भीगोलिक प्रभाव-मह भी ध्वनि विकार का एक कारण है । गर्म जलवानु बाले देशों मे विवृत तथा ठण्डी जलवानु बाले देशों में सब्त व्वनियो का प्रधिक विकास होगा। बारो भीर पर्वती से घरे प्रदेश की ध्वतिया स्थिर तथा बाहरी व्याचात ने होन बनी रहती हैं। इसी प्रकार परिचमी देश निवासी हिन्दी भाषा के दन्त्य वर्णी का उच्चारण नहीं कर सकते हैं। इसमें भौगोलिक परिरियतियाँ काम करती है।

मिथ्र के स्वान पर ग्रा, विधा लिखा जाने लगा है। मत: इससे भी ध्वति मे

विकार हो जाता है।

न्नति होगी तथा ध्वनि गुद्ध तथा परिमानित रहेगी। गुद्ध या विष्नव में ोसने की गति तीय हो जाती है भीर भाषण-तिया में बूछ ध्वतियों से बला-मक स्वरायात बढ़ जाता है तथा परिवासत कुछ ध्वनियों का लोग हो जाता धौर भाषा का विशास या ह्यास वीज गति से होने समना है । समास में दुख में बाशवरण से भीरे बोलने की प्रवृत्ति हो जाती है भीर सबूत स्वित्यों की

१४. सामाबिक बीर सांरकृतिक प्रभाव--- ग्रामाबिक गाति मे माम्कृतिक

शेर भनाव हो बाता है। इस प्रकार व्यक्ति-परिवर्तन हो जाता है। प्रात २० - ध्वति-नियम वया हैं ? पिम (Grim's Law) शृति ध्वति-नयम की सम्यक् समीक्षा कीजिए । बया व्यक्तिनयम भी उसी प्रकार सहार्य

हे जैसे प्राय चैतानिक नियम ? ध्वतियो म परिवर्तन नैकविक रूप से होता रहना है। भाषा की कुछ ध्व-निया में ये विकार घात्रः या पूर्वत विभिन्द नियमों के घायीन होते है। प्राप परिश्वितियों की गुक्करता या निश्वित गति के परीक्षण पर ही स दिश्म

ध्यमन्वित है। अंग्रे सार्वत 'य' प्राकृत में 'घ' हो गया, यह एक नियम है। दन नियमों के धपवाद भी हाते हैं, यथा माराभी प्राइत में सरइत मां, मां रवनि में परिवर्तित होक्ट में रहा।

स्थीन नियम क्या है ?--यह प्रश्न सदेव से भाषा-दिहानियों के अतित्रक म पूजना ग्हा है। सर्वप्रथम नियम क विषय में जानना शाब्दयक है। दिएक र्वाराध्याची में एक श्रिया के कनवरित कर से घटित होने की निवस करते हैं।

নাথা-বি

700

इनमें समय और स्थान ना कोई बन्यन नहीं है ये नियम सार्वहातिह या स वेशिक होते हैं। पर व्यक्ति-नियम में यह बात नहीं है घीर वे कान धीर सी को नहीं साथ सकते हैं। इनके प्रभेक प्रत्याद मिलते हैं। प्रतः व्वतिनिय उसी प्रकार सकाद्य नहीं है जैसे येगानिक नियम । इन दोनों नियमों से बहु मन्तर है। वैज्ञानिक तथा ध्वनि-नियम में प्रन्तर—(१) जैना कि इसर साथ है वैज्ञानिक नियम एक विदिष्ट परिस्पिति या कार्य में मुहा उत्तरते हैं। वे कार विशेष की प्रपेक्षा नहीं रखते हैं, नियोकि ये मार्वकालिक या सब कालों में एक रूप से घटित होते हैं। उदाहरणायं—दो मौर दो चार होते हैं, भीर होते थे भीर होने । स्प्रति-नियमों से यह विश्लेषता नहीं है। यह निश्चित नहीं कि

प्राचीन काल के ध्वनि-परिवर्तन प्रापुनिक या भावी ध्वनियो पर भी लागू होंगे। (२) देशानिक नियम सार्वदेशिक होते हैं। न्यूटन का नियम प्राय: सर्वत्र सागू होता है पर ध्वनि-नियम देश या स्थान भेद से सागू नहीं हो पाते हैं।

(३) वैज्ञानिक या प्राकृतिक नियमों मे मपवाद नहीं होते जब कि व्वर्ति-नियम पद-पद पर शपवाद छोड़ते चलते हैं, सस्कृत 'नृत्य' का 'नाच' हो गया पर 'भृत्य' का 'भाय' नहीं हुमा। 'धर्म' का 'धम्म' हो गया परन्तु 'कर्म' का 'फम्म'नहीं हुआ । घतः वैज्ञानिक नियम सभी परिस्थितियों से सहय तथा अका-ट्य होते हैं परन्तु अपनादों की बहुलता के कारण व्यक्ति-नियम सर्वावस्थाओं मे न घटित होते हैं भौर न अकाट्य ही । घ्वति-नियम वर्तमान या भविष्य के सम्बन्ध मे न होकर कैवल भूतकाल के सम्बन्ध में होते हैं और एक विशि जातिगत भाषा के अन्तर्गत ही होते हैं। इसलिए कुछ बिद्वान इन्हें ध्वति-निः न कह कर ध्वनि-प्रवृत्ति (Phonetic tendency) ही कहना उचित समन है। ध्वित्यों में अपवादों का बाहुस्य ही नियम की सज्ञा को शिथिल कर दे

ए । है। ह्वनि-नियमों में अपवाद होने के सामान्यतः चार कारण है। (क) सादर ह । सार्वे हैं। सार्वेश्व के कारण सब्द नियमानुसार रूप घारण स क प्रभाव हुए मारण कर तेता है। (ख) विदेशी राज्यों का उधार बाना भी अपवाद म्नाय २१ पार महत्त्वपूर्व करण है। नवागत विदेशी राज्यो पर व्यति-नियम घटित नहीं का महत्त्वपूर्व करण का पर्वपर । होते हैं। (ग) तीतरा झाल एक भाषा के प्राचीन या तत्झालीन सब्द-रूपो

101

का ग्रहण करता है जिन पर ध्वति-नियम लागू नही होता है। (प) मनेक बार ऐसा होता है कि मन्य भाषा का मिनता-जुकता रूप भाषा में भवना स्थान ले सेता है भौर प्राचीन शब्द का ही रूप समऋ लिया जाता है। उसे भी घपवाद रूप में ले लिया जाता है। जैसा कि हिन्दी शब्द कोटपाल तथा फारसी भाषा से ग्राये राब्द 'कोतवाल' में रूप-साम्य है। उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट है कि वैज्ञानिक नियम की भौति ध्वनि नियम पूर्णनही है। फिर भी ध्वनि-विषयक इन प्रवृत्तियो को ध्वनि-नियम हो कहा जाता है। ध्वनि-नियम की परिभाषा निम्न हो सकती है-

"किसी विशिष्ट भाषा की कुछ विशिष्ट ध्वनियों में, किमी विशिष्ट काल भौर कुछ विधिष्ट देवाभो में, हुए नियमित परिवर्तन या विकार को उस भाषा का ध्वति-नियम कहते हैं।"

इस परिभाषा के चार धन हैं।

(१) विशिष्ट भाषा का खर्च भाषा विशेष है। एक विशेष भाषा विषयक नियम ग्रन्थ भाषा पर पटित नहीं हो सकते। उदाहरणार्थं ग्रग्नेजी फादर (FATHER) के उच्चारण मे 'र' का उच्चारण न होकर 'फाद में' होता

है पर हिन्दी में 'प्रस्वर' सन्द 'स्रस्वय' उच्चरित नहीं होता है।

(२) विशिष्ट ध्वनियो पर ही यह नियम नागु होते हैं, सब ध्वनियो पर नहीं, यथा FATHER में 'R' का उच्चारण न होते देख MAN में 'N' के

उच्चारण का स्वाय नहीं कर सकते हैं घोर 'मैघ' न वह 'मैन' हो कहेंगे। (३) विद्याप्ट काल का ही प्रयोग ध्वान-परिवर्तन के लिए किया जाना

है। उर्द्र क्ष 'म्र' ध्वनि का सोप हम प्राचीन ग्रदं जी मे नहीं कर सकते हैं, मह पार्थनेक काल मही प्रयुक्त होता है।

(४) विधिष्ट परिस्पितियो से ही बोई ध्वनि नियम बीधा जाता है। उपरोक्त स्टाहरण मे प्राय: यह नियम है कि बाबब के किसी सब्द की मिलाम भीर उक्षके बाद के शब्द का प्रथम प्रधार ध्यवन हो तो 'धार'

५ लागू होता है घोर यदि सन्द का प्रारम्भ प्रकार ध्वति-नियम में दिसी न दिसी धवस्था

इनमें मधन धीर स्थान का काई कपड़ नहीं है के निवन शार्वशाहित या नार्व-द्याप हात है । पर स्वावनिवास में बहु बात नहीं है और वे बात भीर हीना का नहीं नाव पहले हैं। इनक धनक धनतार कि हैं। धना धानिनित पनी प्रकार मकाहण नहीं है जेन बैतानिक निवस ह इन घोना निवसी में बहुई Sert & 1 वेशाविक सवा व्यक्तिविक्य में प्रश्तर-(१) देशा कि प्रार गण है बेशानिक नियम एक विधिष्ट वांगीन्वीत या कार्य म गरी प्रशांत है। व कार विशेष की घरेगा नहीं स्थते हैं, बरोबि वे मार्वेडाविड या गढ़ कारों में 🤝

t..

क्ष्य से परित होते हैं। उपहरकार्य—को घोर को बार होते हैं, भीर हाते में

भीर होते । धानि-निवमी में यह विशेषता नहीं है। यह विशिषत नहीं कि प्रापीन बात के ध्वनि-परिवर्तन प्रापृतिक या भारते ध्वनिवी पर भी तामु होते। (२) बेग्रानिक नियम गार्वदेशिक होते हैं। न्यूटन का नियम आना सर्वत्र लागू होता है पर ध्वति-वियम देश या स्थान केंद्र ने सामू वहां हो पाने हैं।

(३) वैज्ञानिक या प्राकृतिक नियमों में घपवाद नहीं होते जब कि स्वर्ति-नियम पद-पद पर प्रवचाद छोड़ते चलते हैं, सरहात 'नृत्य' का 'नाव' हो पदा पर 'भृत्य' वा 'भाष' नही हुमा। 'भर्म' का 'भन्म' हो गया परन्तु 'हर्म' का 'काम'नही तथा । मत: वैज्ञानिक नियम सभी परिस्थितियों में सहय तथा महा-

टय होते हैं परन्तु भपवादों की बहुलता के कारण व्यति-नियम सर्वावस्थामी में न घटित होते हैं भौर न मकाट्य हो। घ्रति-नियम वर्तमान या भविष्य के



१०२ माधा-विश्रान

दम विषय—(Grim's Law)—दग नियम की पूर्ण विदेषना करने नाने
यभेन भाषा के सर्थन वाकोव दिस है। दाने रेटरेट में जमेन भाषा का
एक स्वाकरण प्रमातित दिया। विश्व नियम का दिवरण उन स्वाकरण के
दिनीय शाकरण (दान् रेटट्ट) में है। वे नियम प्राणेन भारोपेन नारोपेन
सर्वान, प्रमाति क्षानी स्वाक्ष के
दिनीय शाकरण (दान् रेटट्ट) में है। वे नियम प्राणेन
सर्वान, वेने, पंटिन, जमेन, गाधिक तथा दाये को के तुननात्मक विदेशन के
प्रथान कारोपे रे। इस नियम का सम्बन्ध भारोपीय स्वर्णो से है जो जोन,
पेटिन, साबत दार्थित भाषाची को तुनना में, जमेन भाषा में दिनित्त होस्य
परिवर्तित हो गये थे। जमेन भाषा का यह यसं-वर्दिवर्तन दो बार हुसा ।
प्रयम वर्ण-वर्षियर्तन देशा को कई राजान्ती पूर्व हुसा था घोर जिले वर्णन
परिवर्तन सात्मी रताति के साम-नास हुसा, जब ए स्वी-सेरनन सोय उन्तरी
परिवर्तन सात्मी रताति के साम-नास हुसा, जब ए स्वी-सेरनन सोय उन्तरी
परिवर्तन सात्मी रताति के साम-नास हुसा, जब ए स्वी-सेरनन सोय उन्तरी
परिवर्तन सात्मी रताति के साम-नास हुसा, जब ए स्वी-सेरनन सोय वर्णा
परिवर्तन सात्मी रताति के स्वी सेरना सोय वर्णन

प्रथम वर्ण-परिवर्तन- (Pirst Sound Shifting)-प्रारम्भ में विम-

बही गापिक प्रवरी, उच भादि भाषामों में महात्राश ध्यति भीर उच्य जर्मन में सभीर वैणे होता है। (२) संस्कृत भादि का महात्राण, गापिक भादि का सभीय उच्य जर्मन

(२) तरकृत मादि का महाप्राण, गायिक मादि का संघीप उच्य जनने का मधीप वर्ण होता है।

का संपाप यण हाल है। (३) सस्द्रत सादि का संघोष-गाथिक का संघोष उच्च जर्मन में महा-प्राण होता है। संधोष में यह निम्न प्रकार से है---

होता है। सर्धोप में यह निम्स प्रकार से है—— सस्कृत झादि गाधिक उच्च जर्मन

(१) प्रयोप (क् त्, प्) महाप्राण (ज्, प्, फ्) सपीप (ग्, द्, व्)

(२) महात्राण (सं. यं. भ्) संधीप (ग्. दं. न्) मधीप (कं. तं. प्

(३) सघीव (ग, द, व) प्रघीप (क्, त, प) महाशाण (ख, प, फ्)

इस नियम मे घनेक दोव देखकर थिय ने (१८२२ ६० के) द्वितीय सरकरण मे कुछ मुचार किए तथा भारोचीय व्यक्तियों के वास्त्यस्कि परिवर्तन को प्रयम वर्ण-पिवर्तन - ... उच्च-वर्णन के परिवर्तन को द्वितीय वर्ण-परिवर्तन में ष्वितयो का रूप इस प्रकार है-जर्मनिक मे घोष ग्रह्पप्राण (क) भारोपीय मूल भाषा के घोष महाप्राण स्पर्श घृ घृ भृ ग, द, बुहो गये। (ख) भारोपीय मूल भाषा के बोप जर्मतिक में मधीय मत्पप्राण

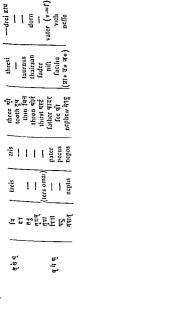
रस्ता । प्रयम वर्ण-परिवर्तन के मन्तर्गत भारोपीय भाषा की परिवर्तित स्पर्श-

क्,त्पृहो गये। धल्पप्राण ग्, द, ब (ग) भारोपीय भाषा के प्रघोष जर्मनिक से संघर्षी भ्रषीप महाप्राण ख. (ह) थुफ् घलप्राण क्, त्, व

(घ), (घ), (भ) हो गये।

मूल भारोपीय भाषा की ये स्पर्श-ध्वनियाँ संस्कृत, ग्रीक ग्रीर लैटिन में तपा जर्मनिक ध्वनियाँ गाँधिक घौर निम्न बर्मन (ध्रवेजी) मे सूरक्षित हैं। उदाहरणार्थ---

	। जमम	प्राचीन उच्च अमृत (प्रा० उ० ५०)	ga-deds, tat टाट	bairan nim (m. 7.2.)	Jock (पांच जम) — cu	zchn (Fet) zwei	hwer was hund	. .
5 5 9	गरियक	gans nig	11	11	1호1	raihun —	hwo hunds	
	मग्र जी	goose मूज	deed डीड widow विद्ये	dust हरट bear दीमर brother बादर	be भी yoke योक cow काउ	ten टेन two ट्र Ip सिप्	lap हैप slip who हू what hound (b=ki)	,
	लेटिन	(H) auser	thesis	g	ungnı	decem labium	tomba quo quo canis	
भारीपीय	ग्रीक	khen	Thesis	Pheretn	zugon	de		,
*	सस्कृत			Heist Birg Bar (fr.)	() () () () () () () () () ()	表	*स्ते उव क. क.व. धुन. (प्रजीन क् के स्थान पर ध्	
		(क) ^{मू} से ग्	म्सेप्ति भसेव	(स) मसेब	व्सेत् (ट्)	क ' ∤क ।व'	(ग) कृ से ख (है)	
	1 '	. ~	•	7.		,	· / / /	<i>-</i>



शिमीय बर्च-महिवांन (Second Sound Shifting)-प्रयम परिवर्तन में मूह भाषा है। अमेनिक भाषा निन्न हुई थी। पर इन हितीय पश्चिमंत्र म जगन भाषा के ही दो का-जब्द गया निम्न जनेत हुए उन्हों दो भाषा में घन्त्रर पहा । कारण यह है कि जर्मन भाषा के विकास पूर्व निम्म अमेन काने (यह अधारि) बहु में हुए भए थे। यह परि यध्य अर्थन में हुया और परिचामन्यस्य कुछ ध्वतियों निल्लिनिन ही गर 49-निम्त जर्मन (प्रश्रेजी) उच्च जमेन

च्यो (three) द्राव (Drei) प्याह(६) इसाट् = YIY (Deed) टाट (tat) == पोस (yoke) क्यास यास (joch) द्कार्ग्यास्म् ≔फुड (foot) परम (fuss) = शेव (Deep) टोफ (ticf) य का फ

सीप (sheen) वाक (schaf)

उपर् क दोनो वर्ण-परिवर्तन की सहायना से निम्न नियन-तालिका प्रि ने बताई--मादिन जर्मेनिक

उच्च जर्भन मृत भाषा ग्, द्, ब् क, त, य, घ, घ, भ् == क्,तृ,पृ स (ह) म्, फ् ग, इ, व् ख् (ह), ध्, फ् ≃ ग, द्, ब् क्, त्, प्

चयम वर्ण-परिवर्तन

दिसीस वर्ण-पश्चितंत

भाषानुबज्ञान . - -

हम इसको त्रिभजाकार रूप मे इस प्रकार रख सकते हैं-



भगर इस त्रिभुज के किसी कोने से भारोपीय ध्वनियों (मस्कृत, ग्रीक, लेटिन) मानकर प्रारम्भ करें तो सकेतित दिशा मे जाने से गाँधिक ग्रीर निम्ना जर्मन की ध्वनियाँ प्राप्त होगी जो भारोपीय ध्वनियो का परिवर्तित रूप हैं। यही प्रयम वर्ण-परिवर्तन है, जैसे १ से २ तथा २ से तीन स्रीगः से एक एक कोना लोधने पर श्रन्य कोने पर हमे उच्च या भ्राधृतिक जर्मनिक व्यतियो मिलेंगी जो भारोबीय से भिन्न होगी। यही द्वितीय वर्ण-परिवर्तन जी दशा है। यदा १ से ३ आदि । समभने के लिए भारोपीय चृ, घृ, भ् ध्वनियाँ स्, त्, प् उच्च अमेनिक ध्वनियों से परिवर्तित हो जाती हैं । प्रयात उच्च जर्मन या वर्ण-परिवर्तन, निम्न जर्मन ने एक कदम आगे निदिष्ट दिया में चलता है। तियुव के घीष से हमे वर्ण-परिवर्तन की उचित दिला प्राध्न होती है।

भिम कृत नियम-तालिका प्रथम वर्ण-परिवर्तन के लिए प्रधिकात स्थाम टीक है पर दिनीय वर्ण-परिवर्तन के लिए अपनादों के बाटुरूप के नारण सफत नहीं वहीं जा सवती है। दोनों वर्ण-परिवर्तन का प्रारम्भिक रूप जो पस्तन

Ensi b en narr 5 .

जा ह ्र च अ या	(6)		
			X = ch = n
भूत भाषा	निम्न जर्भ	तया घादिम अनंत	उष्प दर्मन
प, ध, भ	=	ग, द, ब,	= X, d, A
ग, द, व	-	₹, ₹, ₹ ,	== X, ₹, € T
			(uz), Sz, SS, f %
प , स, प	-	ख (ह), य, फ,	=X, ₹ (₹), €₹, X

नापा-विज्ञान

₹0 ₽

भक्त २१ — प्रासपेन भौर यर्नर के प्रिम-नियम-सञ्चोधन पर दृष्टि दालते हवे प्यनि-नियमों का विवेचन कीजिए। (वि० वि० १६४४) (वि० वि० १६५५)

प्रिम-नियम में भनेक धनवाद देखे गये। इन भपवादों का प्रधानतः कारण सावृत्र्य की भावना है। उशहरणार्थ फादर(Father), मदर (Mother) तथा (Brother) ब्रदर तीनों शब्दों में 'द' (Th) ध्विन सामान्य रूप से मिलती है। परनु जर्मन में इसके रूप फाटर (Fater), मटर (Mutter) तथा बडर (Bruder) मिलते है जिनकी ध्वनियो मे पर्याप्त झन्तर है परन्तु झाधुनिक छग्ने जी में सादृश्य के कारण एकरूप कर दिये गए हैं। सद्ध विदेशी उधार ती हुई ध्वतियां भी अपवाद का कारण हैं। जैसे संस्कृत में 'कमेलक' शब्द सेमेटिक

इसमें अन्तर्भृत होने के कारण से यह संस्कृत का शब्द प्रतीत होता है। ग्रिम महोदय ने स्वयमेव इन अपवादों के धाधिक्य को स्वीकार किया है। कुछ ग्रनगद नियमित हुए हैं, यथा स्क, स्त तथा स्प व्वनियों में 'म' व्यनि ने कई स्थानों में वर्ण-परिवर्तन नहीं होने दिया । वत (KT) और व्त (PT) में त अपरितित रहा तथा त्त (TT) गाँथिक मे थ्ट (Tht) और बाद मे स्तु (ss) ध्वति मे बदले गया।

भाषाम्रो से केमिल (Camel) से उघर ली गई है। 'र' ग्रीर 'क' घ्वनियों का

ग्रासमैन-नियम---प्रिम के व्यनि-नियम के अनुसार क्रमशः क्, स्, यू का स्त (ह), थ, फ्होना चाहिए परन्तु ग्रायाद स्वरूप ग्, द, व् मिलता है। उदाहरणार्य ग्रीक किल्लो से अब्रेजी मे हो (Ho), लुप्तोस से यम (Thump) श्रीर पियाम मे फाड़ी (Fody) बनना चाहिये पर, यो (go), डम (Dump) तथा बाडी (body) मिलता है। इस अपवाद का समाधान पासमैन ने यह निष्ठम बना कर किया कि मूल भारोपीय भाषा में यदि शब्द या धात के ब्राटि ग्रीर ग्रन्त दोनों स्वानों पर व्वित्या महाप्राण हों तो संस्कृत भीर भीक भादि से प्रायः एक ध्वति प्रत्यप्राण् वन जाती है। जैसे सस्कृत की √ हू (=हबन

प्रायः एक क्यान रूप, बुहोति, जुहुत , जुह्नति न होकर हुहोति, हुहुतः हुह्नति. क्रता) का मूस रूप, बुहोति, जुहुत , करणा । १ इसी प्रकार√भृ≕डरना से भिमति न होकर 'विभिन्न' रूप our e . इससे मह परिजाम निक्तता है कि भारोपीय मूल भाषा की दो घवस्थाएँ बनता है।

्या प्रश्ति प्रवस्था में दो महाप्राण रहे होंगे दूसरी में केवल एक महा-रही होगी। पहती प्रवस्था में दो महाप्राण रहे होंगे दूसरी में केवल एक महा-

```
श्रम प्वति की न्यित सान्य हो सकती है, यथा—
पूर्वावस्था उत्तरावस्या

*\sqrt{3}प से भोगामि \sqrt{3}प से बोधामि
प्याप्ति सार्वातः

मगर वभार सारि ।
```

. घरनादस्तक्ष जहाँ कृ, तृ, पृ, के स्थान पर गृ, दृ, वृ मिलने हैं वहाँ प्राचीनस्तक में कृ, तृ, पृका पुराना रूप (हृ), पृ, कृ प्रपति भारोपीय भाषा में पृ, गृ, रहा होता विसका प्राचे पत्रकर गृ, दृ, वृ बना होता। इस निक्ता में वर्ष-दिवर्तन निवमानुकृत हो जाता है तथा जिन रूपो में भरवाद स्वस्त एक पर प्रापे परिवर्तन हो जाता था, उनका इस नियम से समाधान हो गया।

बनंर-नियम-प्रासमैन-नियम के पश्चात् भी कुछ घपबाद रह गये थे।

र्येग क्, त्, प् के स्थान में जर्मन भाषाओं में गृ, द्, वृ हो जाता है। जराहरगार्च—पुक्क, राज्य का खाधारण निवमानुमार दूप (youth), हम्पूर्व हे (hunthred) होना चाहिचे पा परन्तु जग (youth) खाने हम्द्रेड (hundred) क्या
भिन्ता है। वर्नर ने रन भरवारों पर विश्वार कर यह निश्चित क्या कि विन्
निवन हरायमां (secent) पर भाषाधित था। मून भाषा के कृ, तृ, पृ के पूर्व
यदि राराधात हो जो विन-निवन के धनुगार परिवर्तन होता है पर पदि स्वत्य
भाषा कृ, पृ के बाद चाले स्वर पर हो तो परिवर्धन एक प्रथ मोर मार्ग वातामेन निवन की मोर्जि गृ, द्, वृ हो बाजा है। हनने विद मून भारोगीय भाषा के
पूर्व क्ष्यामान न होने पर गृ, वृ कृ (प्र, b, f) महासाय क्यां भाराया करते हैं। वेद

सरहुउ गॉपिक सप्त विदुत (Sibun) राजम् हु-द (Hunda) — Hundred

हुद्युष् गुन्त (Juggs) (यहाँ 'स् आजीत र्'का श्रीतिविधि है)

दिम ने प्रधाननुषार भा' के स्थान पर भा' न शिवदर हुउ उदार्यको से

पर भिना है। विषे स्पुता का Sposu का न भिनकर Sporu कर मिनता है। इसके निम् वर्गर ने स्वरापात को हो काश्य माना । भूगे के पूर्व स्वरापात होने पर भूगे हो रहेना मनवा पर्य हो नावेगा ।

यनेशने एक दृष्टिकीय रता कि आरोबीय क्. तृ, युके पूर्व सृतिना हो (यदा रक्. रत्र, रत्र) तो प्रसीतक में माने पर प्रश्तियों में किसी महार का परिवर्तन नहीं सिलता । इसी प्रकार त महिक्सा युके आब हो तो कोई परिवर्तन नहीं सिलता ।

उपाहरणार्व---

FE-(4) -	127	ui T	सरिभ			
TO LE			•165स	गाया	प्रयुवी	वच्च प्रमंत
	- 1		piskis	tisks ,	tish	tisch
स्त-स्त ं मा	ŒT,	esti	est	141	18	ist
' 4	रदा	okto	octo	ahtau	-	acht
£3-£3 ' '	••		spicio			spenon(O H G)
ध्य-ध्यः स	at 1	1	Neptis	!		Nin (OHG)

वर्तर के इस उपनियम (Corollary) के सशोधन के पश्चात् भी साइश्य के कारण विमानियम में अनेक अपवाद रह गये हैं।

स्वार्य स्विनियम साताश्व-नियम (Palatal Law)—कंट्स व्यंत्रत के तालघ हो जाते से रहे तालघ-नियम कहा जाता है। दुख तारों में संस्कृत में चू मीर ज् रहात पर मान्य आपासों में कू घीर गू मिनते हैं। इस प्रवृत्ति जा यह नियम बता कि सहत तारों में या रेवर, ष्वित की दृष्टि से घीक सा लेटिन घो (O) की तारह है। उसके पूर्व क्या गू हो स्पतन पाया जाता है, पर यदि 'या' स्वर सीर्य (तत्तार है) वेदे—एक हो पानु पन् ये वने रूप 'यचित' (यू-म में सीर ज (तत्तार है) वेदे—एक हो पानु पन् ये वने रूप 'यचित' (यू-म में सीर ज (तत्तार है) वेदी—एक हो पानु पन् ये वने रूप 'यचित' (यू-म में सीर ज (तत्तार है) वेदी—एक हो पानु पन् ये वने रूप 'यचित' (यू-म में सीर ज (तत्तार है) वेदी—एक हो पानु पन् ये वने रूप 'यचित' (यू-म में सीर वर्षा जा सहता है। सता निक्यं यह है कि किसी काल में सरहता है में यह रेसा जा सहता है। सता निक्यं यह है कि किसी काल में सरहता श्व के स्थान पर 'ये धोर 'थो' हतर भी थे। महत्त्वर 'इ' के पूर्व का कष्ट्य स्पर्यन मानस्य संपर्धाति हो गया और गत्रवस्य कृ का वृधीर गृका वृ हो ग्या। इस पान संशेष, पेटिन सांह को प्राक्षीर पर्धा किसी के मुर-वित क्रमें भे बारण सुख सारोगीय के संस्कृत की स्थारण स्थित निकट समस्य जान नहां है।

े श्रीकर्तवयम् मृत् भागीरीय झाट में दो गयमे के मण्यक्ती ता का बीक में 'ह' होकर मृत्र हो 'सता, तिम-*Generos- हम टोन्ड क बनाव्यक्ति।

भारत भारत शुक्त हा जाता, जन--- Generou- हटा ट्रान्स न हिनास्तर । श्रीहम निवस--- इसमें पुत्रांत्र मां का परंजा जाता, जेन-- *Generous - Benetou

चारमोर्जनश्म—गावृत्त का दारशो से ह मितना, स्था मान चहात. विष्युतिका

ष ीत्र । सम्बद्धाः स्वतिनिवयः—पोध्युद्धः साधुदन्द्र निवयं साहि है ।

प्रश्न २२--- मारोपीय परिवार की विदेशयगाओं कीर महाव पर प्रकार बानते हुए उसके विभाजन का भी परिचय दीजिए। (यर विक १६२०)

भारेगीय परिवार विश्व का सर्वाधिक स्वरुग्धित है। इन परिवार में भागाएँ विश्व के सुबस विध्व गरण के द्वारा को भी जा से हैं उस भोगोलिक जिलार की दुख्य से दुख्य में स्वरुग्ध है। इस परिवार का धोडकर जिल्ही भागत में में बेद प्रभोशित होता हुआ सुगत पराई भाग का धोडकर बिट्टा डीप पर्वन्त है। इक्ते साब ही साधीन्त्रम उपलब्ध साहित्य तथा पर्वे की दूष्य में इस परिवार का महाब भागिय है। भागा बेतानिक सर्वा नी दुष्य में समृत्य की बेदिक लिथि धारतम है। दाव साव ही साज भी दिश्व सहा परिवार की भागाओं का धारायों है। साव साव से सम्बन्ध की भागाएँ मानी जानी हैं। धार्यों, कोन, क्यी, स्वेतिस स्था हिन्दी पाज भागाएँ मानी जानी हैं। धार्यों, कोन, क्यी, स्वेतिस स्था हिन्दी पाज भागाएँ मानी जानी हैं। धार्यों, कोन, क्यी, स्वेतिस स्था हिन्दी पाज

नामकरक — रह परिवार के घनेक नाय है। तर्वत्रयम हमें भारत-प्रमंती "इस्ते-प्रमंतिक" नाम दिया गया था चाँकि इस्त्री श्रीभा भारत से जमंती तक मानी गर्द परन्तु देस्टी शाखा की भाषामां की दृष्टि से यह नाम उपयुक्त न प्रमम्प्र गया। मंत्रवृत्तर का सार्व परिवार तथा स्थान नाम इस्त्रोनीक्तिक मीर जेकेंद्रिक भी शर्वमाध्यन हो सके। भीगोतिक दृष्टि से इस्त्रोनीक्तिक नाम

हो (यथा स्क, स्त, स्प) तो जर्मेनिक है	कि भारोपीय क्,त्,प्केपूर्वस् फिला ग्रियोने पर ध्वनियों मेकिसी प्रकार का तयदिक्याप्केसाथ हो तो कोई
परिवर्तन नही होता ।	
उदाहरणार्थ	
भारोपीय	जर्मनिक
सम्कृत । ग्रीक लंटिन	गायी अग्रेजी उच्च जर्मन

पर 'स्' ही रहेगा अन्यथा 'र्' हो जायेगा ।

'र' मिला है। जैसे स्नुपा का Snosu रूप न मिलकर Snoru रूप मिलता है। इसके लिए वर्नर ने स्वराधात को ही कारण माना । 'स्' के पूर्व स्वराघात होने

	सम्कृत	ग्रीक	लंटिन	। गायी	ध्रप्रेजी	उच्च अर्भन
स्क-स्क					tish	fisch
स्त-स्त	ग्रास्ति					ist
	ग्रस्य	okto	octo	ahtau		acht

स्त-स्त	ग्रास्ति	esti	est	ıst	15	ist
	ग्रस्टा	okto	octo	ahtau		acht
F7-F7			spicio	1		spehon(O H G
प्त-प्त	नदा		Neptis		~-	Nift (O H.G.

वर्नर के इस उपनियम (Corollary) के संगोधन के परवात् भी साहुर के कारण बिम-नियम मे अनेक अपनाद रह गये हैं।

111

२—जो प्रत्यय जोड़े जाते हैं उनके स्वतंत्र धर्य का पता नहीं है। परन्तु यह धनुनान है कि ये भारोपिय प्रत्ययं भी स्वतंत्र दाव्य थे तथा धन्य भाषाधों के प्रत्यों को भीतं जनका भी धर्य था, कातान्तर में धीरे-धीरे व्यक्ति-परिवर्तन के चक्र में पदने से उनका धाषुनिक रूप मात्र क्षेत्र रह गया है।

४—पूर्व-सर्ग वा पूर्व-विमान्तियों का प्रयोग बाल्ट्र परिवार की भौति मध्यस्य मुक्त वा बास्य-रका के विष् नहीं होता है। भारोधीय कुल में इनका प्रियकता से प्रयोग वादर तथा किया के पर्य को बदलने में किया जाता है यश—पाहार, विहार तथा परिदार में 'था', 'बि' नवा 'परि' पूर्ववर्त या जपमां है तथा इनकी मूल प्रति प्रयोग स्वात है होंगे है भीर इनकी पानु वा शब्द से पूरक् किया जपमा छोडा या महता है।

५—भोरोपीय-गरिवार की प्रमुख विदोधता समाव-एकना की विशेष प्रक्ति है। धमान कराते समय विमान कराते समय विमान कराते समय विमान कराते समय विमान पर के प्रशेषिण उन प्रकार के स्थान पर एक में प्रकार प्रकार के प्रशेषिण उन प्रकार होता है। समय पर में एक नया पर्य निवनने वालता है। वास्तव से भारोपीय समय की हम व्यवस्ति प्रकार में भारोपीय समय की हम व्यवस्ति प्रकार में भारोपीय समय की हम व्यवस्ति प्रकार में प्रतिवन्त वालय समय के एक में ने नकते हैं। देव भाषा से सम्मान प्रकार के एक में ने नकते हैं। देव भाषा से समय प्रकार के एक में ने मकते हैं। देव भाषा से समय प्रकार में प्रकार में प्रकार में प्रकार मार्थ के प्रकार मार्थ के प्रकार में प्रविचार में प्रकार मार्थ में प्रकार मे

पुरा तथा राहा है। इस का सारम में किसी उस से बिराए करा कर स्वार कर सारम के विस्त कर से बिराए करा कर स्वार स्वार से बिराए करा कर स्वार पर स्वार पर से किसी कर से बिराए करा कर स्वार पर स्वार पर पर से किसी के सार पर से किसी के सार पर से किसी के सार पर से किसी के से कि

 अध्यक्त भागतीय परिवार ने द्वायय-स्था का ब्राव्यि है। द्वारा एक मात्र कारण एक थात च निकलने पर चिक्लि भागायो का उद्युप्त रूप ने

उचित ही है क्योंकि सीमा के दोनों भागो पर भारतीय तथा केल्टिक भाषाएँ 🚺 जैस्पर्सन 'झायं' नाम को झधिक गौरव प्रदान करते हैं। परन्तु कान मी इगलैण्ड के विद्वानों ने इस परिव र का नाम इन्डो-पुरोपीयन या भारत-पुरोसिय पसन्द किया। महाद्वीप की दृष्टि से यह नाम ठीक है। भारत-पूरोवियन का सनिष्त रूप 'भारोपीय-परिवार' भारत तथा बरोपियन देशों में प्रविश चुका है। भाषा-वैज्ञानिक भी इस नाम को तत्वपूर्ण मानते है। मर्वावीन उम प्राचीन सम्पना, संस्कृति तथा साहित्य की दृष्टि से यह परिवार विश्व वे सर्वाधिक गौरवमय तथा समृद्ध है। इस परिवार की भाषामां का धौरव धनुशीलन पर्याप्त मात्रा में हुमा है। भारोपीय-परिवार की मृत्य विशेषताएँ-(१) यह परिवार दिलच्छ-योगारमक है। भारमभ में इन परिवार की भागाँ प्रयोगातमक थी पर विकसित होकर एक दो को छोड़ कर प्रायः सभी भागाएँ वियोगारमक हो रही हैं। संबंत्रथम प्रत्यय सन्द का एक बरा था तबा था। बे

उपरा प्रभिन्न योग रहा। या । कालान्तर में स्वतियों में विकास के कार्य प्रस्तव नष्ट होकर लुप्त हो गर्व भीर उनके स्थान पर परवर्ग तथा छ। वि विया बादि का महत्व बहु गया । इन विकार के परिणामस्वरूप बंद भाषा सर्वा ग्रांसक बोर विभक्ति प्रयान रूप से वियोगारमक तथा स्थान प्रथा है। गई हैं। जैंगे 'राम मोहन को गीटता है' जारज में राम और माहत के पारस्त्रोरण रुपान, परिवर्तन ने धर्षे परिवर्तित हो जाता है। यह बृत्ति संबंधी, ईस्सी नवी हिन्दी में महिन्द परिवादित होते हैं, गरह है माहि मानार भागामा में यह बाह

भाषा-विज्ञान १८१

२—जो प्रत्यय जोड़े जाते हैं जनके स्वतय अर्थका पता नही है। परन्तु यह अनुनान है कि से भारोपिय प्रत्यय भी स्वत्रय स्वस्य भे तथा अन्य भाषाओं के प्रदर्शीको भीति जनका भी अर्थया, कालान्तर मे भीरे-धंरे व्यनि-परिवर्गन के अर्फ में पदने से जनका आधुनिक रूप मात्र क्षेत्र रह गया है।

Y—दूबे-समं या यूबे-विमास्तियों का प्रयोग बान्टू परिवार की भ्रोति मम्बन्ध मूचक या बाक्य-रचना के लिए नहीं होता है। भारोशीय कुल में इनका मधिकता से प्रयोग तरह तथा किया के सर्थ को बहनते में किया जाता है यरा— महार, बिहार तथा पिछार में 'था', 'बिं' तथा 'परि' यूबेनमं या उपनम हैं तथा इनकी मूप प्रहार नथा के तरह होनी है और इनकी पानु या सकद से पुषक् किया तथा पीड़ा या सकता है।

५— मारोपीय-परिचार को प्रमुख विशेषता समान-धना की विशेष प्रशिन है। समान बनाने समय विश्व-क्षेत्रों का लोग हो जाता है। समस्त पर के सर्थ तथा नि पर पर के स्वर्थ तथा नि पर पर के स्वर्थ तथा नि पर पर के से हिंदि के सम्मान बना है। समानित धर्म में महान् प्रमुख होता है। समस्त पर में एक नया प्रयं निकलने लगना है। समन्त में भागीय समान को हम प्रवर्शन प्रवर्ण में मिनव्यक्त वावया वाद के कर में ने मनने हैं। वेटत आवाद का समन्त प्रश्न बहुत बड़ा तथा लाखा है। स्वी प्रतार महत्त्व में भी बहे राम है।

६ -- ध्ययपूर्ति या धारागवन्यात (Youd gradation) इस प्रश्वित ती पूर्व विद्यार है। इसव नंदर-दिवन ने प्राप्य या समस्य त्राव समस्य में परिवर्ग है। इसव नंदर-दिवन ने प्राप्य या समस्य के विद्यार परिवर्ग है। इसव नंदर-दिवन ने धीर धीर क्ष्ययो नो साथ हो गया भी समस्य ते व परिवर्ग ने इसा गाउँ होने बसा हम ने प्राप्य भी समस्य व परिवर्ग ने इसा गाउँ होने बसा हम ने प्राप्य के दिवन परिवर्ग ने इसा परिवर्ग ने इसा प्राप्य होने स्वाह हम ने प्राप्य के प्राप्य के प्राप्य के प्राप्य के प्राप्य कर कर में दिवन परिवर्ग ने किस्ति में परिवर्ग ने किस्ति में परिवर्ग ने परिवर्ग ने परिवर्ग के प्राप्य कर कर स्थान में परिवर्ग के प्राप्य के प्राप्य कर स्थान में परिवर्ग के प्राप्य कर स्थान में परिवर्ग के प्राप्य कर स्थान में परिवर्ग के प्राप्य कर स्थान में प्राप्य के प्राप्य के प्राप्य के प्राप्य कर स्थान में प्राप्य के प्य के प्राप्य के प्राप्य के प्राप्य के प्राप्य के प्राप्य के प्राप

 अत्य भागति परिवार ने द प्यश्वा का ब्राह्मिक है। दावा गट-भाष काल एक अंड से निवस्ते पर चिक्ति नायादी का स्टउन्क राज्य



मैनप तथा दिवेनिक की बेल्छ, कालिक घीर दिटन भाषाएँ हैं। टयुटोनिक-यह भारोपीय परिवार की महत्वपूर्ण छ। हो। इनकी

भाषाएँ जमंत्री, स्वीटन, नार्वे डेनमार्क, प्रगतेड प्रादि में बोली जाती हैं। इस को तीन उपमानाएँ हैं-१. पूर्वी जर्मन २. उत्तरी जर्मन । पश्चिती जर्मन ।

परिचमी जर्दन उपमाक्षा का साहित्य तथा प्रचार की दृष्टि से बडा महत्व है।

इस वर्ग की जर्मन भाषा तथा धप्रेजी ने साहित्य समृद्धि के कारण मन्तर्गादरीय

स्याति प्राप्त कर हो है। 'प्रिम-नियम' का वर्ग-परिवर्तन पश्चिमी जर्मनी की

उच्च तथा निस्त अमंत भाषा पर भाष्त है। ये भाषाएँ प्राचीन काल से ही

सहित से ब्यवहित की भोर बढ रही हैं।

लंदिन या इतालिक-इस शाला की प्रमुख भाषा लंदिन है। यह रोमन कैयोलिक सम्प्रदाय की धार्मिक भाषा है । केल्टिक के समान इसके भी दो वर्ग

'प' घोर 'क' है। पहने को लैटिन तथा दूसरे को एम्ब्रो-मेमेनिटिक कहते हैं। भाग्भारोपीय के मध्येता के लिए लंटिन का महत्व भी सस्कृत भीर ग्रीक के

ममान ही है। इसी से रोमान्टिक केन्च, स्पेनिश्च, पुर्वगाली, इतालियन तथा रूमानियन भाषामी का विकास हुमा है।

हैवेनिह -वैदिक सस्इत के बाद इस परिवार की भाषाध्री का प्राचीनतम

उपलब्ध साहित्य ग्रीक भाषा मे होमर की इलियड तथा ग्रोडेसी महाकार्थ्या मे मुर्राक्षत है जो ६० पू॰ ८५० का कहा बाता है। यह लंटिन के समान सध्य तया विद्वान् समाज की भाषा रही है। योक भाषा तथा वैदिक संस्कृत में ध्रत्य-

धिक साम्य है। दोनों में ही सगीतात्मक स्वराघात प्रधान या तथा बाद में दोनो बनात्मक स्वरापात की मोर प्रवृत्त हुई। सस्कृत मे सत्ता, सर्वनाम तथा भीक

में किया भौर मन्यय के रूपों की मधिकता है। बीक में स्वरी तथा सहकृत में व्यवनों की घरेशाइत प्रविकता है।

विकास हुआ और धावध्य छन्। र निविन्त का ने प्राथमी तथा जन में पूर्वत् रेग से व रा रेसी की प्रवेत हमा है। बन्नः वर्ग बन्ननी का है। आपा वे मधी प्रशाह है मध्यम्या है लिए विवृक्तियों वा द्रावर्ते स #1 t 2 i विभावन

भारोतीय दिवार वे कतियन भाषाएँ ऐसी हैं, जिनमें उन स्थान पर पाना जाता है नहीं माद्र राज पां तहा पन्त कई बोरोदीय भागामी ने भागा बाता है। पावेशिक्षांतक भारत-मुखेवीय नालव्य क्य, स्य प्रादि हा मुध सालांबा व उश की स्वो रह गई, पर भारत-दिशनी बाला, प्रत्वेतिन भाग्तीस्वाचिक धादि धीम सप्वी स, स, ज, ज का रूप ने तेती हैं। सक्त धाको ही वे १००० में पका किया। इनते यह मनुमानित है कि प्री भागोपीय ध को तरह की निमानाए कही होती, एक समीचबर्ती भारत, ईस धार्गीनिवा, ४व धारि स्थानो में बोली जाती है। यन्त्र दुरवर्ती विभाषामी

इन व्यक्तियों का विकास व होते से वे कब्द्र का में स्पर्ध ही बनी रही। इसी भाषार पर बानबेहर में इव समस्त भाषाओं को दो वर्गों में वीटा है-शतम् तथा केन्तुप् -इन बोवों शब्दों का पर्य सी' है। एक मे क' व्वति

भाई जाती है, दूसरे में 'स'। स्पट्टार्थं - भवेस्ता-गतम्, फारसी-सद

बिवेनिक

संस्कृत-दातम्, हिन्दी-धौ, रूसी-रतो, बल्पेरियन-मृतो, लिथुवानियन --रिजम्लास, लंटिन-केन्त्रम, ग्रीक-हेन्टोन इटैलियन-केन्तो, फोच-केन्त थ्रीटन-कन्ट, गेलिक-व्युड, तीखारी-कन्ध । मेन्त्म वर्ग

इस वर्ग में छः साखाएँ है--१. केस्टिक, २. ट्यूटोनिक (जर्मनिक), ३. राहिन (इटली), ४. हैलेनिक (बीक), ४. हिट्टाइट (हिली), ६. तीवारी।

केल्टिक-इस साला की भाषाएँ यूरीप के विश्वणी भाग में बोली जाती हैं। संदिन शाखा से इनका स्व-सान्य है । इसके ध्वति-भेद से 'क' छौर प'दो यगे हैं। जैसे बेल्स 'पम्प' (पांच) का आइरिस में 'कोइक' है। 'प' वर्ग को गहते हैं। गायलिक की भाइरिश 🕶



भारत दिशा तोवारी—यह पूर्वाय पुडिस्तान हे अस्मान प्रदेश की मासा है। पार्व ितार इत्तव 'हाथ' वा 'र-व' साह निवंत में यह भारत के बेन्द्रुव वर्त ही है। दम के भारतीय (कार्टी, गरीप्ती) विति में हुए पत्र मान दूस है। सब बहुएरी घटाई का मधीरता के कारण घटनियक प्रभात है। इसने स्वरों की बर्तिण कम है। यथि नियम तथा विभक्तियाँ सन्दान के मनान है। स्वस्थानातर में संस्कृत के निरुद्ध है. यथा विष्टृ का परवर्त, मातृ का मात्रहें, बरट का मोत्रा रातम वर्ग

इस वर्ष को भाषावां के बार उपकुल हैं-- १. महवेनियन, २. बार्डोस्स-विक, ३ धार्मेनियन तथा ४ धार्य या भारत-ईरानी ।

मत्वेनियन मा इसोरियन-यह शासा कारिन्यम की साडी से इटनी है विश्वाणी पूर्वी भाग तक पैली पी। उनमे शिनालेसी के मतिरिक्त कई में

साहित्यिक सामधी उपलब्ध नहीं होती । इसके प्राचीन कालिक तथा गांप कालिक हो। का कोई भी भवतेष भाग प्राप्त नहीं है। बाह्ती-स्लाविक या लेटी-स्लविक—इस गाया में बाह्टिक तथा स्लान

बोनिक युक्त उपसासामों का प्रस्तित्व है। बास्तिक शासा की प्राचीनवर्ग प्रकृति का पता नहीं लगता है। मध्यकाल में इसकी तीन शासाएं हैं-नियूर मानियन, लेतिस तथा प्रशियन । प्राचीन प्रशियन समयत जर्मन के प्रमांव से नष्ट हो गई है। रीप दोनो भाषाएँ हत भौर पश्चिमी भागों में बोली जाती हैं। स्ताविक उपमाखा की भाषाएँ ब्रत्येरिया, जंकोस्तेवाक्या, पोलंड, युगोस्ताविया, युक्तेन तथा रूस में नोली जाती है। धादि भारोपीय व्यक्ति

बामें नियन-पामें वर्गे के पश्चिम में इस शाला की भाषात् नियति हैं। इसमें ईरानी, तुकी तथा फारसी धटर प्रभुष्ति मात्रा में मिलते हैं। योहन तथा एशिया की सीमा पर बोली जाने वाची कीनियन इसी के मलवंन है। इस भाषा का नवीन रूप प्राचीन रूप से सर्वेषा भिन्न है तथा प्राचीन रूप सब भी धार्मिक कार्यों में प्रयुक्त होता है इस साप्ता पर मार्थ तथा मनार्थ दोनों भाषाची का प्रभाव है।

भारत-ईरानी तथा प्रायं शाला---भारोपीय-परिवार की भायं-शाया कर

महत्व प्रतुलनीय है। धार्यों का एक समूह ईशान की घोर वंदा तथा कुछ घार्यों ने भारत में प्रवेश किया। मतः इसको भारत-ईशन की शाया भी कहते हैं। इस धाखा के तीन उपकुल हैं--(१) भारतीय, (२) दरद तया (३) ईंगनी । भारतीय भ्रायं दाखा को प्राचीनतम भाषा सस्कृत है, तथा प्राचीन नाहित्य जो वैदिक मन्त्रों के रूप में उपलब्ध हैं - यह परिवार प्राचीनतम माहित्यिक निधि हैं। यह वैदिक साहित्य ढेंद्र-दो हवार ईसा पूर्व का है। भारतीय प्रार्व गाला की परवर्ती भाषाएँ प्राकृत तथा मनभ्रत की स्थित को पार करती हुई माज भी भारतीय भार्य भाषाभी के रूप में बिकमित हुई हैं। ग्रतः इनके तीन विभाग विवे गये हैं-प्राचीन, मध्य तथा धाष्ट्रविक काल । ईरावी उपशासा के मन्तर्गत पारिक्षियों की प्राचीन भाषा मबेस्ता मिलती है और यह ऋग्वेदिक मंत्रों से विलती-जुलती है। इसकी प्राचीनतम भाषा देसा से लगभग ८०० वर्षं पूर्वकी कही जाती है। दरद भाषामी काक्षेत्र पानीर तया पश्चिमीत्तर पंत्राब है। परतो की तरह बाक्य-गठन की दृष्टि से दरद का स्थान ईरानी तथा भारतीय भाषाची के मध्य है। यदि पहती का भुकाव ईरानी की ओर है तो दरद ना भारतीय भाषाची की घोर । दरद उपवर्ग की तीन भाषाएँ हैं-सोवार, वाफिर भीर दरद । भवेत्ता के भविश्वित ईरानी का प्राचीन रूप भरेभेनिद राजायों के ४२१ ई० पूर्व बर्जिकोर्स शिलालेखी से प्रत्य होते हैं। परवर्शी भाषा बहुतकी तथा प्रमुख शाधुनिक फारसी हैं।

प्रश्न २३---भारतीय सार्य-भाषाभी पर सन्य भाषाभी का बया प्रमाध पड़ा है ? इसको स्वय्ट करते हुए बताइए कि भारत में किन परिवारों की भाषाएँ बीलो जाती हैं।

भारतवर्ष एक बहा तथा विश्नुत देश है तथा इस दृष्टि से इतरी जगहा-द्रीप भी नहा जा सहता है। इतन स्रोक परिवार नी भाषा तथा बीतियों थी में जाती हैं। इन इस मात्र नारण समेक जाति तथा देशामियों का रम देश वे पत्र जाता है। भारतेशिय आवाएँ तो देशी स्थान को समून्य मगति है। इसके स्वितिस्त धनांशीचेन भावयों ने हवित्र कुत्त की भाषाएँ सर्वीप्रक सहायमुंचे है तथा प्रायः समस्त हतिया भारत ने इतरी स्थायक स्थिति है। सन्व भारतीये भाषाई स्वत्र इत्याद स्वत्र स्वारियांचियां



भागा-विज्ञान ११६

विनात है भोर इपडा एक लयु तर विपत्ता पर्वत-भंगी तक स्थान है। सि कनावरों भाषा कहत है। सावर भाषा सावरों (वर्षनी विकारिया) की भाषा है। यन्य महत्वपूर्ण भाषावं मनाती (किहार, उद्योगा व्यापन, सावाम), मुख्यारों , शिशर में रोची के पास तथा धन्यत्र) तथा हो (विल्तूबि किये में) है। भीवर्षण में भीन एक परिमारित तथा साण्य-गत्यत्व भाषा थी, परण्य स्व यह द्यापन, वर्षां तथा भारत के असनी तथा सारियासिया प्रार्थ मोंने अपनी है। इन भाषाओं के मामबी में भागत्व में इसमें मिन्सीयत मिनते हैं। विवर्धभार होत्र वो भाषा हसी व्यक्ति हो। भारत में इसमें मध्यभित भाषा स्वाप्त प्राप्त में खासी है। यह इस भाषा का रूप विकर्णन होकर भिन्न हो। यह है।

हार्यया है।

भारतीय सार्य-भारताची चर मुख्या-भारताची हा प्रभाव—मुखा भारता मे

हुए ऐसी विनेपतायों है जिन से भारतीय सार्य-भाषाण प्रभावित हुई है। मुझा
है प्रभाव के बारण ही दिलार में विचा करते की पर्यावक व्यवस्था है। मुझा
ही एक विकास हुईर सहस्वत्र का जनमा पुण्य स्वत्राम प्रभाव है। इसके
एक प्रधार में भाष्यम पुण्य को मामिकित कर लिया जाता है तथा हुन्छ कर्ता मुझा ने भाष्यम पुण्य को मामिकित कर लिया जाता है तथा हुन्छ क्षा मुझा ने प्रभाव मुझा में भाष्यम यहा हुन्छ क्षा प्रभाव प्रभाव पुण्य (भीर नुष्ण)

मंत्र ये क्षा पाने क्षा हुन्छ हुन्छ क्षा प्रभाव पुण्य हुन्छ का स्वत्रा हुन्छ का स्वत्रा हुन्छ हुन्छ का स्वत्रा हुन्छ हुन्

पानिकार प्राप्त प्रमुख्य कर विकास के पूर्व के प्राप्त है। विकास प्राप्त प्रमुख्य कर है। विकास परिवार — इस विकास की दरकार की करने हैं। विकास परिवार विकास प्रमुख्य कर निर्माण कर प्रमुख्य कर कर कर के प्रमुख्य के प्रमुख्य के प्रमुख्य के प्रमुख्य के प्रमुख्य के प्रमुख्य कर के प्रमुख्य के प्रमुख्य

रै. इविड परिवार—भारत में बार्य-भाषामां के पश्चात् इस परिवार में भाषामी का मत्विक महत्व है। प्रिमिकासतः यह मुख्य से जिल्ल है। हा। वादित्व मत्यिक विक्रसित तथा जनत है। इन भाषाभे में तामित द्वर्गान लम, कम्बड तथा तेत्रम् भाषाव् अमुल है। इस परिवार की भाषामां में ज्ञानित का बाइनम सर्वाभिक उन्तव और विशास है तथा इनमें साहित्य की रहना माठवी राती हो बनी मा रही है। वासित को दुनी मतवातम है जो श्वी सामान में तामिल से वृत्रक हो गई थो। भारत के दिनिकी-विश्वमी महुदन्तर पर पर भी योनी जातो है। इसका साहित्य मच्छा है तथा बाहाणों के ममान ने नह वेंहरत-तिष्ठ ही गई है। कर रह मेंबूर की भाषा है। इनहां कावर तथा ताहुव माचीन है तथा निषि में तेवमु के निकट है। तेवन मचना मान्य भारत दीन पूर्व के धीन में बोनी जानी है। इनके पार स्वराल तथा भाग भपूर है। जन-मन्द्रा में यह इस कुल की सबसे बड़ी भागा है। इस बर्ग की भागाएँ उपन चनोग प्रधान तथा मनेनाधर होती है।

वार्य-भावाधों वर प्रभाव—मार्च वरिश्वर (महत्त्र) में मूर्पन स्वीती (दार्थ) इसी परिवार के बचाह ने पाई बड़ीन हैं से हैं। महार (गृह्ण चार) भीर र ता म (पिता होती) में भी पत भाषाचा अन्तर श्रीकार है। भार रहता है। (१९) वर्ष का अपना का अवस्था का अवस्था है। वर्ष का अवस्था है। भावे-मान भी में भे रह तर माणारित मात्र भी देशी तरिवाह भी देश है। विरुक्तांत, इत्या, वाता । भारतीय भागाया स वत्यो, क्षित, क्षांत, व्यवस्था त्राच्यात् । भीतः मीदः महि मादि पत्रद सार्वः इतः त्रतः त्रतः त्रतः वर्तः वर्तः है उत्तर प्रवासः । भीतः भीदः महि मादि पत्रद सार्वः इतः त्रतः त्रतः । हो पोवा इस्त हो। स प्रविद्य दर्शन नो रखी नामावा के करवे है। ४. घाउँनतिवार—पाक इत अत्यामा का ग्रीच उत्तर पाना है। क्षीत्रसं

भाषा-विज्ञान

गारत में कोहणी भाषा भी दूसी का रूप है। इस परिवार की भारत में प्रव-लेत भाषाएँ तीन है— हैरानी, बरद और भारतीय। ईरानी भाषा का फास्ती रुप में भी साहिश्यिक रुपों में प्रमुक्त होता है। उद्दें मौर नहीं योगी में भी (बकें भनेक हादर हैं। पर यह बीनी नहीं जाती है। दरद भाषा नो विसास या पैशाबी भी कहा बचा है। भारत में घब इसका प्रभाव नहीं हा, निस्की, रहाबी और तुहुर कोकणी मराजे पर भी मबेट नामित्र होंगा है। वास्मीभी नोषा का विकास पैशाबी महस्त्र में माना जाता है। पर इस पर सम्हन वा बेदेट प्रभाव है।

भारतीय भाषाभी का सर्वाधिक माधियम्य उन्हारी भारत में है। इसका माहित्य भाषानिकात नी दृष्टि सं सर्वाधिक स्थान्त है। वेदिक सक्तृत से हिंदी पर्यन्त सक्तृत से हिंदी पर्यन्त सक्तृत से हिंदी पर्यन्त सक्तृत से हिंदी पर्यन्त सक्तृत से प्रकृत भाषाभी की महातता का तुमक है। विद्यन्त का तिभावत मारतीय भाषाधी दर सामाधित है। हिंदी का क्षेत्र कृत्य स्थान्त राष्ट्र भाषाभी पर स्वता प्रकृत है। वार्च परिवाद ना प्रकृत सामाधित कर स्वता प्रकृत सामाधित है। हिंदी का क्षेत्र कृत्य स्थानीय सामाधित सह सामाधित के सामाधित सामाधि

४, विविध या बीनिहबत महुदाय—स्मये बुछ भारत में बोत्ती जाने वाली वे भाषालू बांची है जिनहों दिनी वर्ण वा दिखार में रचना वा रूप के बांच निक गर्म प्रत्य के प्रत्य के प्रत्य में के बांच नहीं के बांच नहीं रचन वा स्वत्र है। गुनेशे भाषा का मध्यम्य बुछ दिक्षाने ने हत्या और मोट्सबेट्से की मक्त्रमा में स्वादित दिखा है। दो भाषाबी वा धीव भाषत्र में है उतने एक प्रत्यनी है। यह घरमत दीव को भाषा है। दूसरी 'बुरवास्ति' वा परना है। इसरा धीव वास्त्रीर के उनसी लूसी सेने पर है। इतिक वा वादिनुक से इसरा मन्द्रभय पूत्र रचार्यत करने वा प्रताम तरकर दूसर है।

प्रत १८- मूस (द्वारिम) भारतेयीय भाषा को सन्दर जाता के साथ दुषना करते हुए उसकी प्रतासाता, ध्वतियाँ धीर प्रशासन स्वर (neutral १००४) की करवना वर प्रकास शांतिए।







भारोतीय परिवार की समस्त साखायी में कुछ ऐसी निकट समारवार्द है। विनक्ते कारण इन्हें एक परिवार में सन्मितित किया जाता है। उदाहरणार्थ-

सरकृत प्रीक लैटिन जर्मन बंदीजी स्वाबीनिकशासिक १. रिन (रिनर), प्रतेर, (pater), प्रतेर, वानेन (vater), फादर (father)

र. भरामि, चेरी (Phero), फेरी (fero) -बीयर (Bear), बेरिन (beran). • बहान, लुहीउन (lukous lukous) नुनीय (lupos बुहरन (nolico)

बल्फोन्म (wulongs)

्र नाया-विज्ञान १२७

्र बाड्यम में प्रयोग रामायण-काल । लेकर भुगत-काल तक रहा । इस भाषा १ के मर्थावत स्वरूप स्वीयवर्गी देशों के भाषा, (तस्य री. चीती, जावाती मार्थि में पर्धानिहित्र हो गरें । सहकृत का साहित्र विदव के सर्वाधिक नरम्ल माहित्यों में में से एक हैं । इसने मरेक भाषामीको मत्रैक हरित्यों से प्रमासित किया हैं।

संहहन धीर चबेहता में सान्य- पार्च-भाषाणों में एव प्रनार से प्रनुक्तता तथा व्यावस्था की दृष्टि के प्राप्तन्त सान्तिप्य की अवसा विश्वती है, जो इसे प्रन्य प्राप्तामों से पृश्क करती है। तथी भाषाणों का नुननगरक माध्य निम्न दृष्टि विश्यों में देशा जा महता है।

(१) ध्वन्यासम्बद्धा की कृष्टि से बार्च साखा की इन कोना आवासी— समृद्ध और घरेनता में प्राचीन भारोगीय है, घी, ध का नेव नहीं रहा है। समस्त भारोगीय जुन स्वर खब, 0ऐ धीर बिधी (हस्व या दीर्घ) सार्य-भाषाची में "में (हस्व या दीर्घ) बस्तुत च या सा है। जाने हैं, वस्तु चीक

बादि में इनका भेद बना रहा है। उद्दोहरणार्थ-

भारोतीय सन्द्रण घरेला पीक लेटिन कैनेसल (ne'bhos), नसल, नबह नेप्लेस (nephos), नेब्जा (nebula) द घोरच (osth), चरिन, स्ट (ast.), घोरनेपीन (oste'on), os ण्यो (apo), चारम, पर एपी (apo) — क्षेत्रतेस (cLwos) घरव, परनी (aspo), हेप्पोस (heppos), प्रेचम्

(२) भारोशीय जराबीन स्वर स (स्वा 2) दोनो भाषासो से 'ह' हो बाता है। परन्तु यह दिवार स्विध्वत स्वीक स्वति तीर्ष स्वर हा सी, सा के यपप्रित बनक क्या से सार्थ वर्ष से स्वी स्थान से द'हो नाजा है। यचा— भारोगेत सक संब पढ़े (pate) दिवा विज्ञ पार्तर (pater) पंतर

थे (dhe) भात से दित भेजीस् (thetos)

(१) सरहत, प्रदेशना में 'र' (ऋ) घोर 'न' (म्) मून भारोतीय ध्वतिनी व्यवस्थित हो जातो है। भारोतीय भाषा में इन होनी में स्थित मेद नहीं मा



रापा-विज्ञान

के सर्वावत सब्द समीपवर्ती देशों कं भाषा, तिब्दती, चीनी, जापानी स्नादि मे विलाहित हो गर्ने । संस्कृत का साहित्र विश्व के सर्वाविक नम्मन्त नाहित्यों मे में से एक है। इसने बनेक भाषामीको बनेक दृष्टियों से प्रशादित किया है।

संस्कृत धीर घवेस्ता में साम्य--धार्य-भाषाधों में एक प्रकार ने धनुक्ष्यता तथाथ्य।करण की दृष्टि से भ्रत्यन्त सान्निध्य की भावना सिलती है, जो इसे धस्य ग्रालाघो से पूर्वक् करती है। दोनो भाषाघो का तुलनात्मक साम्य निम्न दृष्टि बिन्दुयों से देखा जा सकता है।

(१) ध्वन्यात्मकता की ट्रिट से मार्च साखा की इन दोनों भाषामी-सरहत और प्रवेस्ता मे प्राचीन भारोपीय ऐ, घो, घ्र का भेद नही रहा है। समस्त भारोपीय मूल स्वरं 🔞 प, छ ऐ भीर 🚨 भी (हस्व या दीर्घ) मार्थ-भाषाधों में 'स्नं' (हृश्व या दीर्घ) बश्हृत स्न या द्या हो जाने हैं, परन्तु ग्रीक बादि में इनका भेद बना रहा है। उदोहरणायं-

संस्त प्रदेशता पीक भारोतीय

सेटिन ●नेभास (ne'bhos), नभस, नबह नेफोस(nephos), नेबूला (nebula) ख घोस्य (osth), धास्य, स्त (ast), घोस्तेयोन (oste'on), os धारम्, धर एपी (200)

■एशे (apo), ●ऐंबबोस (ckwos) घरद , घरनो (aspo), हेप्पोस (heppos), ऐंबबम्

(epuus)

(२) भारोपीय उदासीन स्वरंघ (स्वा 2) दोनो भाषायो में 'इ'ही जाता है। परन्तु यह दिवार सधिवतर ग्रीक ध्वति दीर्थ स्वर ए, म्रो, मा के धपथुति जनक रूप में बार्य वर्ग में ब्रां के स्थान में 'इ' हो जाता है। जया-

भारोतीय eż. पते (pale) पिना पिता पानेर (palce) पतेर Geber (thetes) पे (dhe) पानु से हिड

(३) सहरत, घरेला य 'र' (ऋ) घोर 'ल' (मृ) मून भारोरीय ध्वनियाँ

न्तरिश्वित हो बाडी है। भारोपीय भाषा में इन होती में स्थित मेह नहीं या







भीर परे इ. ए स्वर के होने पर च, छ, ज, भ, हो गये।

(६) संस्कृत तथा बादेस्ता में समान रूप तथा समानायीं धनेक शब्द है, जैंग सस्कृत योजस् का धवेस्ता मे घोज:, घनु-धन्य, का धनुप्रन्य ददामि का ददानि धादि ।

(१०) दोनो भाषाचो की रूप-रचना तथा सबटना इतनी समान है कि भवेरता की गाथा की भाषा को कतिपच ध्वति नियम मन्बधी परिवर्तनी के

माधार पर वैदिक संस्कृत के रूप में बदला जा सकता है। उदाहरणार्थ-

धवेस्ता

मुरदामोह प्रविस्तम् = गूरं धाममु ग्राविष्ठम । ग्रादि ।

साकृत तथा धवेस्ता ने धन्तर-दोनों के बूछ रूरों में मन्तर भी है। (१) सस्द्रत में टबर्ग है जनकि प्रवेस्ता में नहीं है।

(२) भारतीय मे बवर्ग (ब्, छ्, ज्, भ्रू, न्न्.) ध्वतियाँ हैं, वविक ईरानी

में वेबल प्रधाञ्है। (३) पाचो वर्गों के द्वितीय और चतुर्व महाप्राण वर्ण धवेस्ता मे नहीं है।

(४) घदेस्ता मे 'ल्' के स्थान पर 'र' प्वर्ति है जैसे श्रीत = सीरो। (ध) ईरानी में स्वरों वा बाहुत्व है। भारतीय 'म' 'मा' वी जगह उसमें

धाउँ स्वर हैं। (६) सन्£त का ऋ धवेस्ता में घर, र्या स है। जैने, वृक्षम्≔ वरेंग्रेस,

धे ध्ट≕यशस्त्र ।

(अ) संस्त योव महाप्राय प्, थ, भू ईरानी में सत्यत्राण सृ, द्, ब् प्राप्त ह हे है। यथा-

भूमि - दूमि (bumi), धेरु - दएनु (daenu), धर्म = एमं (garm),

(c) सर्1ा के संयोग घलामांच क्, तू, यू तथा संयोग महामान स् स,

क्रिती में माध्य या संपत्ती मु, पु कु हो गरे हैं। देव-बन्दा-गर्था (114044), +444 - 24744(14ft.cm), 4 4 .- 2241, 24 - 55 (satu)

441 241 (3262), fill - [4 (1.23) (१) भार बद्दमादय और प्रतिशिक्त की प्रवेतना साम कर की घर है।

ufur !-



प्रदेन २६--प्राकृत बंबा है? प्राकृत, पालि की भाषागत विजेदनाएँ बताइये भीर इनक्रा सम्बन्ध सरहत तथा बायुनिक भारतीय ग्रायं-भाषाची से निर्धारित rlfað i

ध्रष्टवा 'संस्कृत प्राकृत भाषाओं को जनतो है' इस कचन का युक्ति युक्त उत्तर बीबिए। पानि तथा प्राहत दोनो ही भारतीय भाषाओं का उद्भव वैश्वित सन्हत

के परचात हीता है। सर्वप्रदम हम पालि ने दिवय में विदेवन करते हैं। मध्यम शार्य-माधाधी के प्रथम वर भी महत्त्वार्ण भाषा 'पानि' है तथा इमका गमप छठी प्रशब्दी ई० पूर्व में पहली पती ईवबी तक माना जाता है। वालिका नामकरण

'शांत' धट्ट भी ब्यूरानि के सम्बन्ध में विद्वानी के विभिन्त मन है। 'पानि' टान्ड भाषा के लिए प्रयुक्त ने होकर 'बुद्ध-वयन' के लिए प्रयाग किया गया है। इत्तर इल्लेख भौवी तदी के यथ दीन बस तथा मानाव बद्धान के

इ।स दिया गया है। भाषा के रूप में भागधी या मनध भाषा का व्यवहार हाना था। भारतवे में जानि का प्ररोग मति धरोबीन है धीर रास्था व विद्वानी क द्वारा क्रिया गया है । 'पानि' पान्य का स्मृत्यन्ति में बुध प्रमुख गत उल्लेखने व

है। बूछ युरोस्टिन बिहानी ने अनि (prali) से 'पानी' की स्टूप्यांन मानी है बिगवर धर्ष पुरुष गुण्डों की पतियों है। भी विधुद्वेजर अहाराज के भनगार इत्ता सम्बन्ध पानिः पान्त पति अपिटु पति न्यानि से है। भिज्ञ भिद्धार्थ सक शब्द 'पाउ' पानि पान्ति (पानि म रत्सूत'ड' दा '3' ते बाता है) व मानत है। इन सबता धर्व पुढणाड का बुद बचन

है, बाद म यह नाथा क भने स बिकतित हो यथा । बुद्ध विद्वाली क मण हणह व्यन्ति (६) व वी भाषा) द्वेष्ट्र पार्शव बना है बचाहि हत्वृत्र की जुनता च हरू

सीव की भाषा भी रकुछ इलको "जीकृत" (न्यावट पायहान्याधना राज)

at gilleafen ba finnt bi ift tieffe neut fa fe unen grabe

· विद्रात कार्यानको व इतका कार्याच्याच्या हु। एक यह

से 'कासब की जातक (इंदात') से दा'त का कारत्य है। प्रवह व प्रवह



गोलं भाषा ने तद्भवं राज्ये का बाहुत्य है। तस्तम तथा देशक प्रपेशाहृत ।त्रा में कम हैं। सगोतात्मक स्वराघात की स्थिति इस भाषा में प्रतिदेशक में हैं। प्रिमर्शन के मतानुनार इसमें केवल बतात्मक स्वराघात या। लिंग |ति ये। दिवसन तथा प्रत्यनेदर रूप कम ही ये। 'यालि' में स्वर-परिवर्तन स्वराधिक में प्रतिस्थान

तस्त्रत भी बरेशा बिध्क था।

प्राष्ट्रत भी बरेशा बिध्क था।

प्राष्ट्रत भावत् ने सुद्दे हैं। सिमाशु साम्यत सो अहन को अस्ति सस्कृत में हुई है। सिमाशु सामाज सोगो के वचन-स्वाचार को प्राष्ट्रन का धायार मानते हैं। प्राष्ट्रत के धुन्दे करी हुई। से मानते हैं। ऐसा धनुसान सत्ताव बाता है कि एक भाषा का सस्तार करके उपके कर को सस्त्रत सामा दिया गया, बहु भाषा को ससस्त्रत थी धोर परिक्र प्राप्त को सामाज सोगों में पहुंच कर के सस्त्रत सामाज सोगों में पहुंच कर के सामाज सोगों में पहुंच कर के सोमाज सोगों में सहंच्या कर के सोमाज सोगों में सहंच्या सामाज सोगों में सहंच्या कर के सोमाज सोगों में सहंच्या कर सोगों सामाज सोगों में सहंच्या कर के सोमाज सामाज सोगों में सहंच्या कर के सोमाज सोगों में सहंच्या कर के सोमाज सोगों में सहंच्या सामाज सामाज सोगों में सहंच्या सामाज सोगों में सहंच्या सामाज सोगों में सामाज सोगों सामाज सोगों सामाज सोगों में सहंच्या सामाज सोगों सामाज सोगों सामाज सोगों सामाज सोगों सामाज सोगों सामाज सोगों सामाज सामाज सोगों सामाज सोगों सामाज सोगों सामाज सोगों सामाज सोगों सामाज सामाज सोगों सामाज सोगों सामाज सामाज सोगों सामाज सामाज सामाज सामाज सामाज सोगों सामाज सामाज

न सहत कर न बाता शांतो थी, न्यायतः, आहत नाम का भागनगरण्या है। रातिन्तान को नमार्थित पर तोक-भाषा का नहीं कर प्रवित्तर था।

तितानतियों प्रावृत—हूद शांति जाया के तत्कातीन थो। प्रयोक्त के
दिवालेको को प्रावृत को प्रयोक्तिय प्रावृत कहते हैं। प्रयोक्त ने स्वस्थों पीर
पहानो पर पान के जिस्तान भागी ने शांतन तथा पर्य तक्ष्मणी विद्याल
प्राह्मी तथा सरोर्जु तिर्वित में प्राचितित कर में भीत के प्रावृत्त पुरुवाये थे।
भागा-वित्तान वो दूष्टि ते इत प्रतिनेत्यों का बसा महत्य है। इतने देन पूरुवाये थे।
भागा-वित्तान वो दूष्टि ते इत प्रतिनेत्यों का बसा महत्य है। इतने देन पूरुवाये थे।
स्वारी नहीं के तत्वतन मध्य मात्र को भाषा के विभिन्न स्वक्ष्मों का जिल्हे
रातरां वीच भोनियों थी। वहाँ पु.सू.यू तीनो कर प्राव्ह होते है भीर नहीं
पार्ति थो। सीं थीं। दूरी पु.सू.यू तीनो कर प्राव्ह होते है पीर नहीं

प्राहरी से मेद प्राहरी के प्रसारों के दिवस में वर्षान्त मन-मेद हैं। दिहानी ने बीच से प्रापक प्राहरों का उत्तेव दिवा है, वरत्नु भावा की ट्रॉट से प्रमुखन पीन से हरें माने जाउं है—(१) धोरखेती, (३) बेदाबी, (३) महाराष्ट्री, (४) सर्व मावयों वया (३) माल्यों।

रूप रम है। येप पालि नो भाति है।



24 भागा-विशान Y. मर्दं माराघी-इमना धेन माराघी घीर शीरमेनी का मध्यवर्ती प्रदेश

है। यह प्राचीन कोशन के धालपाय की भाषा है। नाटको तथा जैन-साहित्य मे गद्य-पद्य दोनो रूपो भे इसका प्रयोग हुमा है। जैनियों ने इसे 'मार्पी' सा 'मादि-भाषा' नहा है। इसका प्राचीनतन प्रशेग मददयोग के ताटको मे भिलता है। स, प के स्थान पर 'संतथा चबर्गके स्थान पर कड़ी-कड़ी तबर्गमिलता है। दस्य व्वतियों मुद्धंत्य हो गई हैं। यया श्रावक=सावव, स्थित=ठित्र ।

 मागयो — मागयी प्राकृत मगय के साम-पान की भन्दा है। लक्षा में पाली को ही सामधी बहा है। इसका उद्भव शौरनेनी से माना जाता है। सस्त्त नाटको में निम्न श्रेणी के पात्र इनका प्रयोग करते हैं। गीडी, गावरी, चाण्डामी ग्राटि इसके मनेक नेद हैं। इस प्राकृत में स, प, केस्यान पर 'दा' तथा 'र' सर्वत्र 'ल' हो जाता है, मया, सन्त = सत्त, पुरुष = पुलिश, राजा = सात्रा । स्व' मीर 'वं' के स्थान पर 'स्त' मिलता है । जैसे उपस्थित

== उपस्तिद, प्रथंवती == पस्तवदी । प्राहृत की कुछ सामान्य विदोषताएँ---प्राकृत भाषाएँ ध्वनि की दृष्टि से पालि के प्रधिक सन्तिकट हैं। इसमें भी हस्य ए, घो, छ, ल्ह का प्रयोग भावता रहा। ए, घो, ऋ, ल का प्रयोग नहीं हमा। प्राकृत में तीनों ऊष्म हा (मानधी, पैदाची मादि) प (पैदाची) तया स (बर्धमानधी) में मिलती है तपा वही वही पर यह दूसरी जप्मध्वनि में परिवर्तित हो गई हैं। भागधी में 'र' वा 'ल' 'ज'. वा 'य' पाया जाता है। धन्य प्राक्तो मे 'य' का सामान्यतः 'ज' नया 'र' 'ल' का परस्पर परिवर्तन में देखने में ग्राता है। इन प्राकृतों में स्पर्भ घोष सपर्पी ब्यजन भी थे, यथा ग. घ. घ. घ प्रादि प्राजुतो में 'न' का विकास प्राय. प'हो गया है। प्राकृती में व्यवसान्त शब्द सही हैं। धल्पप्राण स्पर्भों का स्वर मध्यम होने पर लोग तथा महाप्राण स्पर्भ का मध्यग होने पर 'ह' मे परिवर्तन हो जाता है। सस्तृत मे विमर्ग () केस्थान पर प्रायः ए, भो पा 'म' ना 'ब' रूप भीर घोष स्वशी का अवीष तथा अपीप ना घोष मे परिवर्तन हो जाता है। सभीपकरण, स्रोप, स्वरभक्ति ध्वीन-गरिवर्तन की प्रवृतियां प्रविकतर महाराष्ट्री तथा मानधी भाषाग्री ग्रादि में सक्षित होती हैं। 'नीय' प्राक्त के प्रतिरिक्त पन्य प्राकृतों से द्विचन का रूप दृष्टिगत नहीं







६. दायह

४. वत

ग-विज्ञान

नागर राज (पुरानी रोजस्याओं) का ६ महाराष्ट्री ६ पर्वं पावदी

वनी दिला । १) s kinsit (v) faziri (ta) (धा) बतानी (त्र)

(11) a't-1 ((4) Late below the MANGROUPH NAME OF A MANGRAPH CO. THE CAMP

A 43 86 2 1 सार्थ कर्य सामाको को अनुवो है। उर्देश विक्रम अवस्था न ta unglas wuxuu wuquu ar tar u gur wax wax oo 💎 🔭 🚉

BRANKER WAR BOYS BLOOM ON WILLIAM OF BLANCH OF BRANCH OF पुत्र कर बारक पुत्र संस्थारित साथ स्था के प्राप्त के पूर्व पर पूर्व ते प्राप्त है।

ફેંદ પ્રવેશનું સાધા કું આ ગુરુ મનાદ તા માટ્ટ વર ફોંધ રહા જ વર ૧૯૬૬ मक्ष के करकारों, के मुन, परी र, सरमूत को के बे केररम् के रसमे के सर स्टार ET # 11 E to dize might to mater man a man income are

(स) इस धपश्रम के नागर रूप मे (ध शतक्यानी (२) (व) गुजराती (३) (क) लहेदा (४)

(ता) प्रवादी (इच पर होश्नेनी संवध्य का प्रभाव है।)(४) भिन्दी (६)

पटाई। धिरेननी स्वरध्या प्याप्तमके

प्रभाव है। 'ं ⊢ा

मगरी (८)

TRAIL HILL FOLL MARKER & LANGER IN IN SERVICE

કરવા તાલ કરવા છે. કે કે કા તાલ કરે કે કે કે કે માર્ચ કરો માટે કે કે માર્ચ કે માટે માટે કે કે કે માર્ચ કે માટે માટે માટે માટે મા



. ध्वनि

(क) दियसँत के घटुलार ग्रन्तरंग में ऊत्म ध्वितमें का उच्चारण दस्य है इस में होता है किन्तु बहिरम भाषाधी में यह 'पा' (बताल, महाराष्ट्र) त' (पूर्वी बदाल, ग्राम) उथा 'ह' (बताल तथा परिचमोलांग) हो ाता है।

सालोकता—स्वर मध्यत थां वा व्हं सन्तरण भाषाओं से भी पामा जाता है, यभा स॰ एकसप्पति>प० हिन्दी एकहत्तर, स० द्वादश साह (प० हिन्दी), स० करिष्यति>करिष्ट्रद (प० हि०) वहिरण से पा वही-कही है, वैदे सहैदा से करेगी (करेगी)। बगान में पा मामधी प्राकृत के प्रभाव से है उद्या मानों से सालक्ष्य स्वनियों (इ. ई. स) के प्रभाव से । धनगत गुण्यानी

में यह 'प' भी दृष्टिगत हो जाता है, यथा— कांग्रे (करिप्यति) (स) प्रियति के कायनानुसार 'पढां प्रति का विकास बहित्स में 'म्' तथा भन्तरमं में 'ब' रूप में हवा है । बहित्स भाषाओं में महाजाल प्यतियों

भत्तप्राण हो जाती है, जयकि धन्तरम में ऐसा नहीं होता ।

साकोबना — उपनुष्त तिहाल के विषयीन स्रवेत उपारण मियने है। स्थान स्थारत से सक असूक का बामुन (क दियी) मा निश्व का नीम। दूषरी सोद सदिश्य—(बनसा) में निष्कृत का सेनू मा नेतूं का नियन है। अनिनी का बदिन (दिनी) सादि सरेन स्वयाद दिनने है।

(ग) सन्य नियानों संप्तेत्रा 'ल्' साम्बुं वेस्थान वर प्रनेत्र वेस्त्र बहित्रा भाषामा म निवता है। बहित्रा भाषामी संप्तेत्र कृति प्रतिवत्त्र हो जला है।

while $\mathbf{x}_1 = \mathbf{x}_1^2$ which is $\mathbf{x}_1^2 = \{\mathbf{x}_1^2, \mathbf{x}_2^2, \mathbf{x}_3^2, \mathbf{x}_4^2, \mathbf{x}_4^$

 श्री क्यावरच या क्या-(६) भाषा थी गरि बाबी स्थीयारच्या न विशेण-काम की कार समिगुक्त होती है। कीर क्यी दहके क्यानेत विशेष स्थान क्यान्त







गभग वेकर का वर्गीकरण भी इसी प्रकार का है।

थी बीताराम चतुर्वेदी ने सम्बन्ध-सूत्रक परवर्ग (विभक्ति या कारक) के ापार पर वर्गीकरण किया है। यथा-१ का (हिन्दी, पहाडी, जबपूरी तथा ोबरुरी)। २. दा (पदावी मीर लहेंदा) ३ जो (निधी, कच्छी) ४. मी गुजराती) दथा प्र. एर (बगाली, उडिया, भामामी) वर्ग दनाए है। यथार्थत. ह बोई वर्गीकरण है नहीं।

ाममूर्ति मलहोत्रा का 'ब्रादर्ग-वर्गीकरण'

(क) परिवर्षी भाषाएँ -- १ डिधी, २ पत्राबी, ३ लहुँदा, ४ राजस्याती (. गुजराती, ६, मराठी नथा पहाडी।

(पा) रेन्द्रीय भाषाल"-पहिचमी हिन्दी।

(इ) प्रदं भाषायें--- पूर्वी हिन्दी, है. विहारी, १०. वगानी, ११ उदियातपा १२. घासाभी।

एक वर्गीकरण टा॰ मोलानाय तिवारी ने प्राकृत के प्राधार पर किया है।

दन दर्शीकरण से झार्द-भाषामां को वैज्ञानिक परिचय निमना है।

प्रदेश देव-भारत की प्राचीन भाषाची का तारतम्य दिवाते हुए हिन्दी के विकास पर प्रशास दालिये।

घषवा

हिन्दी भाषा की उत्पत्ति के कमिक इतिहास का स्वय्द दिन्दर्शन कराहुवे । र्वेदिक सस्वृत्ते ही खनी भारतीय घार्य-भाषायो का मूल-योत मानी जाती है। बोक्कि सरकृत का जन्म रखी से हुया है। भारती साहित्यक समृद्धि थोर प्रतिष्या के बारण इस भाषा ने विश्व में बनर स्थानि प्राप्त कर भी है। बोध

भीर बैन पर्ने का विहास उस गम्ब की प्रवृतित लोक-भाग में हुमा। उसका नाम पानी विष्यात हुया । यांगे छत्रहर यही रूप विभिन्त प्राकृत भाषायों के क्य में विश्वित हो गया । मस्कृत पाली तथा प्राकृत में साहित्य की रधना होने के बारण वैवाहरणा ने उन्हें स्वाहरण के निवसी में बीच दिया । फनस्त्रक्षा वसका वन-भाषा'व दिनीन होकर उसका स्वामादिक प्रवाह तथा विकास कह

'शनर में बाह्त की नवीन बोतियाँ प्रतिबंद होहर सरभग्न



ापा-विज्ञान 583

प्राचीन रूप से इसमें भनेक परिवर्तन हो गये है। हिन्दी के विवास की दृष्टि हिंदो को तीन कालों में विभक्त किया गया है---१. प्राचीन वाल (१४०० ई० तक)।

२. मध्यकाल (१४०० से १८०० तक)। ३. भाष्तिक काल (१८०० से भव तक)।

प्राचीनदाल-हिन्दी भाषा के प्रारम्भिक हम तथा सामग्री का दर्शन में तीन राज्यों में उपलब्ध होता है—दिल्ली, बन्नीज तथा ग्रजमेर। इन राज्यों ने परस्पर फुट भ्रीर घरेला युद्ध होते रहते थे। दिल्ली से चौहान बर्ग के राजा प्रवीसाज चौहान का सामने या घीर उनका राजस्वि चन्द्र था। गठीर यस भी राजधानी वन्नौज के भ्रन्तिम सम्राट्जबचन्द कादण्वार साहित्यिक चर्चा दा भून्य देन्द्र पातवासस्तृत तथा प्राकृत भाषाको घनिक समादर प्राप्त षा। महाकाव्य नैपधीय-वरित के रचयिता श्री हुएं बदयन्द के राजकृति थे। महोबा का राजकवि जगनायक या जगनिक तथा ग्राजमेर के नराति नातह का नाम भादर से लिया जाता है। भयिकाश बाड्यय के नष्ट ही जाने से उसके मूत- रूप का परिचय प्राप्त नहीं हो पाया है। ११६१ ई० में पृष्पीराज घोर षयवन्द को पराजय से दिल्ली, कल्लीज भौर महोबा पर जो हिन्दी के तीन कंद्र

थे, मुहम्मद गौरी के साधिपत्य के कारण मुनलमानो का शासन स्यापित हो गया था। इस प्रकार प्राय समस्त हिन्दी प्रदेश विदेशी शासको के प्रायक्तार में या । इस कारण हिन्दी भाषा के जिलालेख और ताग्रपत्रों की सस्या न्यूनतम है, देवल प्रयोशाय तथा समर्शिह राज दरबार से मम्बन्धित हिन्दी वे वछ प्राचीन नम्ने प्राप्त होते है परन्तु वे प्रामाणिक नहीं माने जाते हैं। सिद्ध तथा नावपदी दियो वा वाह्मय (ममय ७०० ई० से ११०० ई० तम) वा प्राप्त होता है परन्तु इव सामग्री वी प्राचीनता तथा प्रामाणिकता

षभी सदित्य है। विद्व-साहित्य की भाषा धरध्रत मानधी मानी बाती है। गोरपन' वर्षा योध्यवाची प्रतिष्ठ हैं। गुलेशी जी के 'पुरानी दिन्ही' लेख में वज्य ६ प व्य प्रवास भाषामी वे प्रभावित राजस्यानी वा ही एक नेह

है। भारत व किर्दा प्राधिक र के पास्त्रक प्रार्थी और तुर्वे की और

क्लाओं से बादत हुई दवा सहत और हिसी हो। उसरा सी दूरित ने























हिन्दों में कम है। सटखटाना, ६मकाना झादि बुछ ऐसे भी घादि हैं जो तस्सम बहे जा सकते हैं पर वास्तव में हैं नहीं।

त्रसमानास—कुछ गब्द सम्हतजो के गढ़े चले था रहे हैं घोर तस्मर समान प्रतीत होते हैं। जैने—राष्ट्रीय, पोराणिक, उन्त्रायक, श्राप, प्रण घादि।

धर्मतद्भव या लब्बाबात—हिन्दी शब्द-समूह में कुछ लेगे भी सब्द हैं यो नित-परिवर्तन में साद्ध्य के प्रमुक्तार नगा निष्, गए हैं। जैने— मोसी ना पुलिया मोसा। यह तब्धन का हो स्थान्तर मात्र है। घन्य उदाहरण दुलहिन स्पादि है।

प्रतिस्वन्यात्मक-कभी-कभी कित्री संस्य के सादृष्य या सम्बन्ध बोध करने के तिए तथा प्रभाव दासने के लिए प्रावृत्ति कर दी जाती है, यथा-

म्बप्तमः प्रभाव दासन क । लए झावाल कर दो जाती है, समा—
 सीटा-घोटा, रोटी-फोटो मादि।
 दिख दास्य—हिन्दी में मनेक ऐसे सब्द हैं जो दो आपामों के सब्दों में

समास करने पर बने हैं। उदाहरण-स्टार, काटना, रेसगांकी, स्नायनपर । हिन्दी सन्द-मुह पर सन्य साधृतिक सार्य-भाषांकी की भी प्रभाव पड़ा

हिन्दी सन्द-समूह पर बन्य बाधुनिक बाय-भाषाया का भी प्रभाव पड़ा है भीर उन प्रान्तीय भाषायों के सन्द यथा स्थान हिन्दी में प्रवेश पा गये हैं।

इदाहणार्य—मराठी—प्रगति, सानू, चानू, बाबू। गुजराती— पड़तास सादि।

२. भारतीय सनायं-भाषाओं से भारत साहर—हिन्दी के तरहम तथा तद्भव सालों से हुए इन ऐसे हैं भी प्राचीन काल से सनायं-भाषाओं से सार्य-भाषाओं से साल्य के दिन साइड कराते की स्मृत्यति सहद्वत राव्यों से नहीं हो पानी है उनकों भी हम सनायं-भाषाओं से साल्याम सेते हैं सोत ऐसे भानेक तप्प स्थित शामित, हेग्नु, कोस साहि सन्य भाषाओं से उन्नत्य होते हैं। ऐसे एसी को माना दिल्ली में नुक्तवन है। इतिक भाषाओं से साल्या गायों का सर्व हिसी से नृहत हुए बचन पत्त है। इतिक भाषाओं सेता हिसी में विकास होते में नृहत हुए बचन पत्त है। इतिक भाषाओं सेता है। हिसी में निकास होता हुने ने बचन का पाने है देश है। दिसी में मूर्यम्य वर्षी (स्वार) का स्वाराज होता सालाओं के स्वाराच से स्वाराण है। हिसी मा सम्यावकार सेता

द. दिदेशी भाषाको के साथ-में धाद भारत में दिदेशी सामन के फन-











मापा-विज्ञान एक्षचन बहुबचन घोडा घोडे पुँ । पोश--- मूल रूप (कर्ता)

3 2 8

चोडे सोह बिकृत रूप (प्रन्य कारक) सहको, लड़ियाँ स्त्री० लडको---मू० रू० (कना) लडही लडही सडिकयो इत्यादि वि० रू (प्रत्य कारक)

कुछ भाकारान्त एक बदन शब्दों में भी कर्ता के अनिरिक्त भ्रन्य कारकों में एकारा-त विद्वत रूप उपनब्ध होना है जैने ऊपर क्ली एकव० 'घोडा' ग्रन्थ नारकमे एकारा∺न एकब० 'घोडें' रूप में परिवर्तित हो गया है। इन बिकृत रपों के विषय में यह मत है कि ये सस्कृत की भिन्त-भिन्त विभन्तियों के एक वचन रूपो का धवशेष मात्र हैं।

प्राय यह देखा जाता है कि हिन्दी सज्ञामों के मूल तथा विकृत रूपों में 'भी' समाने से पूर्व ईक्शरान्त भीर ऊक्शरान्त सब्दों में 'ई' भीर 'ऊ' के स्यानो पर कनदा 'इ' ग्रौर उ' कर दिया जाना है। स्त्रीलिंग के मन्त रूपों में इकारान्त या ईरारान्त तथा ककारान्त सम्रामी के मूलरूप बहुबचन में इसी, इएँ तया उएँ रूप बन आते हैं। सहा के मूच तथा विहुत रूपों से सामान्यतः समस्त सम्माधित परिवर्तन इस प्रकार दिए जा सकते हैं---

पुल्लिय		स्थीतिय		
एकवर	ान े	बहु (चन	एक्वदन	बहुवचन
		धना	रान्द	
मून रूप	घा	₹	×	ए *
विहत रूप	Ų	पो	×	घो
		धन्य	स्य	
मूल कर	×	×	×	ए, या
विष्टुत रूर	×	धो	×	धो
स्तिग				
Male for	37 ×m	i furen sesi ı	maner fact -	

भारतिक जड़ तथा चेतन पदार्थों के धनुसार नियो का बर्जीकरण प्राचीन तथा प्रारम्भिक बाल से तीन बर्गी से विनाभित किया गया । पुरवदाची पदार्थ ीदाशी स्वीनिय तदा निय की भावता के दिना पराधी की यदना











सिंग्य हो ही है।

रे. हमं तया सम्प्रदान कारक — हिन्दी में कम तथा सम्प्रदान के निए एक ही प्रशास के कारक-विद्धों का व्यवहार किया जाता है। यदी बोली में 'को' विद्यु दोनों विभक्तियों में प्रवृत्त होता है तथा 'के लिए' विशेषत सम्प्रदान में माता है।

शो—टुम्प के पत्र से इतशी ब्युत्पत्ति सस्कृत सन्द 'कृत' से है। इसका विवास-तम इस प्रकार है—कृत⇒िकतो⇒किसो∹को। इसी प्रकार कत से 'हैं शो उत्पत्ति कृतोप के सनन्तर 'त ध्वति का महाप्राणीकरण (हं) है।

भारत में कत घोर कद रूप भी मिलते हैं। होनेती, बीध्य तथा, भेटनी स्मार्ट विकास 'सो' की उत्पा

होनंती, श्रीम्स तथा चेटवीं मादि विद्वान् 'वो' की उत्पत्ति सस्तृत 'कक्ष' वे मानते है, यथा—वश>कतस>कीप>कीह>वह>वहं>वो/को। 'कक्ष' वा मर्व सभीप या मोर के क्षप में यहन किया जाता है।

के निए-के वा सम्बन्ध सक्तृत कृतें और किए वा 'साने न्सीमा>
व्यावि>वर्ष से जोडा बाता है। हिन्दी बोलियों में रही प्रकेश सन्तिन्तिन्ति है। हिन्दी बोलियों में रही प्रकेश सन्तिन्ति ।
विक्र मृत्यत होते हैं। स्त्यत्रीयन वर्षा के मतानुसार 'के', 'जो' कारक पित्रों के सम्बन्धयायक सामीन हिन्दु 'बेरक' वा क्यान्तर सामते हैं। हानेकी 'लिए' की सम्बन्धयायक सामीन हिन्दु 'बेरक' वा क्यान्त्रमा सामते हैं। हानेकी 'लिए'

हो सम्बन्धायक प्राचीन स्तिह वेरहाँ दा करान्त्रर मानते हैं। हार्नसी 'निष्' हो स्ट्रानि 'वस्ते' (लामार्च) से मानते हैं। वर धनिम दोनो मह सर्वमान्य नहीं है। हार्नसी ने प्रान्य हिन्दी को हुए प्रामीच बोतियों के मुख्य प्रस्ता ही 'हो'नि रव प्रश्नर से दो है—

रिन्धे दानी BIES DIE स्वयं स्वयं स्व ब्राइट रूप 5,5 स्दान टाणि टाणे . gitp C+1 94.3 STE ~ < < 11 4 जे क्य .-. < 414 *13 .. द (उद Ti T . तारं, तरं 🤜 eft# 975 र्वारए < 4.2 æ š 4: < 245 ٩ŧ े. इप्रकृत्य तथा प्रशास कारक-्रिन्दी भाषा में इन दीनी कारता का



सज्ञामों के स्थान पर सर्वनामों का प्रयोग किया जाता है मत इनके रूप क निर्माणनों में सज्जा रूपों के समान चलते हैं। इनको माठ भागों में ग्रानित किया गया है। सिशन्त रूप में उनकी स्पुर्वान नीचे दी जाती है। है. पुरुष बायक सर्वनाम—इसके तीन भेर है—उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष ग्राम्य पुरुष। ग्राम्य पुरुष का निवेचन निरुपयाणक के साम किया।

उत्तम पुरुष--इनके निम्न मुख्य स्पान्तर हैं-

	एकवचन	बहुवचन
मूल ह्य	# -	हम
বিক্ল ব হুব	मुके (मुक्त)—	हमे
सम्बन्ध कारक	मेरा—	हमारा
D_rust main mi	A = 2/22 mas = 2/11 km	'क्ला' के जिल्लीक

मैं—एकत सम्बन्ध धहं से न होकर सस्कृत तृतीय रूप 'सया' से निर्धारित क्या गया है। इसका विकास मया > प्रा० मई (मए)>प्रप० मई>हिन्दी १, है। मैं भी मनुस्वार ध्वनि तृतीया 'एन' के प्रभाव से है।

मुझ — स्वता बर्भव सहत्व 'महा' वे माना बाता है। बेने महा > मन्त->मफ-पुक्त। मक वे मुक्त की स्वता तुक्त के साद्स्य पर हुई है। हुए दिशन स्वता विकास प्राप्त कर मह से मानते हैं। इसी का रूप में के साथार पर मा

> विवास श्रापता का गहर्द' ने स्थिर किया संस्कृत यह से हैं। हो (बज्र)।

ैक्ष 'धरते' मे है जो वैदिक 'धरमे' का

ही (बज)। का सम्बन्ध प्राकृत रूप ेम यही रूप म्हारी केरी, करो प्रस्पय हैं।



इस - इसका विकास संस्कृत ग्रस्य, प्राकृत एग्रस्य से माना जाता है। भैटवीं 'इव' वा मनुमान मस्इत एतस्य से करते हैं।

इन-पह रूप एतेन>एदिण>एदणा से सदिग्ध है। 'न' मे पप्ठी बहु-

वबन ना प्रभाव दिष्टिगत होता है। इमें, इन्हें मूल करों के विष्टन रूप हैं। बह-इसकी ब्युत्पत्ति धनिदिचत है। तद् रूपो से इनका यथायं सम्बन्ध नहीं है। चंटबों के मतानुसार सस्कृत के कल्पित रूप 'सब'>प्राकृत 'मो' से वह की उत्पत्ति है। 'सब' सौर 'सो' रून ईरानी सौर दरद भाषामों में भी मिनता है। 'उस' का मम्बन्ध प्राकृत भाउत्स तथा संस्कृत भवन्य से जोडा जा चंदता है। इसी प्रकार वे धौर इन का धनुमान किया जा सकता है। इसे,

इन्हें विश्वत रूप है। रै. धनिरचयदाचक सर्वनाम—इसके मूख्य स्पान्तर इस प्रकार हैं।

बहु ० एक ०

মুক হব को ई कोई विक्त स्प विस्त्री किसी

कोई-इनकी ब्युश्वति सस्कृत कोऽपि' से है। प्रावृत में नोवि तथा हिसी में बोई बन गया। पसे व धीर बड़ हो जाना प्यति-तियमी के भनुक्त है।

किथी – मन्बुत द्रास्ट 'बस्यावि' का ही रूपान्तर हिन्दी का विभी है। किही

रप को मुन्तान सदिग्य तथा प्रनिद्दिक है। उप-दमना सम्बन्ध मस्कृत 'बस्चिद्' से माना जाता है । प्रानृत मे इस

बा 'बुब्द' स्व मिलना है। ४. सन्दर्भवावक सर्वनाम-हिन्दी सम्बन्धवाचन सर्वनाम के प्रमुख निम्न

₹9 ⋛...

47 40 ₹ **₹**• 3# P.P को--बो बिन, बिन्हें। tera eq दिसे दिसे थो-यह तो सस्युत य, 'बा स्थान्तर है। य ⇒यो⇒यो। विय-रश्वर सन्दर्भ सर्व दरव से हैं। दस्य>विस्व>ितन ।



भाषा-विद्वान १७१

म्बिन-परिवर्तन हो जाता है। हिन्दी की बोलियों में कौन के स्थान पर 'को' स्प भी मितते हैं। इसकी उत्पत्ति स्पष्टतः सस्कृत 'कः' से है।

क्सि-सस्कृत कस्य>प्राकृत कस्य>किस ।

हिन—इसकी ब्युपति सस्कृत कानां या नागं (कैया) कल्पित रूपों से मानो वाती है। जेसे—सं० काना:>प्रा० केणा>केना>किन । किसे, किन्हें वेद क्या प्रपत्तित रूपों के समान हैं।

रेपा—हिन्दी 'स्वा' की उत्पत्ति प्रतिदिचत है। कि से इसका सम्बन्ध प्रभी रिराणधीन है।

प्रस्त ११--हिस्बी किया के कालों में संस्कृत कालों के कौन से रूप प्रय-रोव रह गये हैं। दोनों का सम्बन्ध स्थापित कीजिये।

या

हिन्से फियामों को खुत्यति बताइये ।

सहत भाषा की सबसे बसी विशेषता उसका समीमासमक होता है । प्रतेक कियो मीति कुछ प्रपतारों को छोड़कर जायः सहकृत क्रियामें समीमास्तक ही गाँ थे ।

सोग, एस बात, कीन पुरस् घोर तीन बचन के घरुसार अस्केत सहकृत पार्टु के १४% ((×१० ×१×१) किन-पिम्म क्य मितने हैं। इसके प्रतिक्ति अस्केत के प्रतास क्षेत्र के प्रतिक्ति अस्केत के प्रतास के प्रतास के प्रतास के प्रतिक्ति अस्केत के प्रतास के

संध्य अदिव सोट दुष्ट् है ।
स्पन्नस्थीन सार्व-भावासी में धानुष्टय—रचना में दुष्टि में सबसानुबूत स्वर होन वने थे। सप्तापतित्र सार्व भावासी में दिल्ला दो स्वरात्य हो रही पर रूपा की स्वरात सहन की तुन्ता में कम हो गर्द थी। क्लारियन में धानुसी की बच्चा संध्य होने से सीट उपयोजिया की दुष्टि से रचना मनाम सम्ब वर्षा पर भी पहा। यह चरित्रके हमें सात्रि आला में दुष्टिन होने नता था। अहुन्त हिस्पब का पानि से भीत हो बच्चा सिट सः प्रयोगी में से वर्षानेवर का मनाम संध्य का पानि से भीत हो बच्चा जानि से सर्वराज्य रहे। इसमें कारों की



हिनों को बातुएँ—हानंतों ने वणना कर हिन्दी की बातुएँ पाव को मानी

ऐतिहारिक दृष्टि से हिन्दी बातुमों के दो रूप हैं— मूल बातु तथा नोगिक
। सस्तु से हिन्दी में बाने साली बातुएँ मूल कही जा सकती हैं। हानंती
तुद्धार तश्ती सक्ता १६३ हैं। तुष्ठ मूल बातुएँ सस्तुत विद्याद्धा बातुओं से स्वरूप
दृष्टि से ताम रातती हैं। बात हिन्दी की 'खां तथा सस्तुत की 'खार्ड' में
'ख साम हैं। तुष्ठ बातुमों में संस्तुत के किसी विशिष्ट गण का प्रभाव
रहा है या प्राय: नण-परिवर्तन हो बाता है। उदाहरणार्थ हिं० नाच <स०
==4-ंपारे

(क) मूल धातु-मूल धानुमो को चार वर्गों मे रक्ता जाता है-

ै वे हिन्दी की मूल पानुएँ जो प्राचीन भारतीय बाय-मापामी (प्राप् भारतीय क्षान) से क्षमणत बाई है तथा उनका सम्भवत तद्भय रूप ही मिलता है।

२ वे मूल पातुर जो प्रा० भा० घा० की धातुषों के प्रेरणार्थक रूपों से विकसित हुई है। इनका भी प्राय तद्भव रूप मिलता है।

ा. वे मून पानुष्यो प्रापुनिक वाल में सीधे सस्तृत से तो गई है। वे तलम या पर्य-तत्तम रूप में हिन्दों में सक्षित होती हैं।

४. वे मूल धानुष् जिनवी ब्युप्तति सदिग्ध है, पर रूप की दृष्टि से सरहत धानुष्यों के सहय प्रतीत होती है।

(क) स्मोतिक सातु— हिन्दी स्मोतिक सातुष् वे कहनाती है जिनका विकास समझ सातुस्मे से नहीं हमा है किन्तु जिनका सम्बन्ध का सो साइट करों से हैं साहक सातुस्मे से नहीं ते कर में रवित है। इनके तीन विभाग किये जा सात्रे हैं—

रै. नाम थापू--विनवा निर्माण सहा क्या से हुमा है, यदा (हि॰ वन - त॰ वन्म)।

र तपुरत कायू-यो क्या का कियन है, येन हिन्दी बुक न्यान करूरी



षा—िहरी 'पा'<प्राकृत पगढ्, ठाइ<संस्तृत 'स्थित' रूप में प्राप्त 'गर्दै।

ः . होग-६० होता<म० होन्तो, हान्तो<स० भवत् ।

रूपा-(बोर हुयो, भयो) ८प्रा भवि० <स० भवित ।

प्रा-हिन्दी 'रहना' को जुलांत सदिष्य है। टनर ने इसका सम्बन्ध 'पित्र' मादि एवरों की भीति रह बातु से माना है।

प्रसी, बनाती, मुक्ताती, राजरावाती तथा पुरानी सबसी सादि से बनाव 'ख' स्वित से कुल सहातक किया को ब्यूचिति प्रा० मा० की वित्र प्रमु / बच्छ से मानी जाती हैं। टतेर इसका सन्वस्थ म० 'सा √ थे' केलोड सा नु

वे प्रोत्ते हैं। वर्ट-पूर्व हिन्दी की बुख कोतियों में यह रूप मिलता है। इसका प्रोत्पांव प्र∘√वृत् से जोड़ा याता है। यथा-हि० बाटे<प्रा० बट्टद<स० क्षेत्र

हि स्वाध्य को गमना को आती है। सावार्य व्यवेत के मत से हिं/
उत्तर वानावनार्य क्यो का वाल्य वाहत के बनमान काल के को स्रोत्व विध्यानमा है। व्याहरवाल-जंदहत 'बतानि' अगह के प्रते के स्राध्य (वाल्य काल है। व्याहरवाल-जंदहत 'बतानि' अगह है। हिंदा के म दूर्य के को को कोचीत सरहर के करी व सानी आता है। ये अपनय है बहुवय के को को कोचीत सरहर के करी व सानी आता है। ये अपनय है बहुवय को तो बाहत स्वयं के स्वति के स्वति कोची आता है। ये अपनय के बहुवय हो तो काल काल कुछ के को तो प्राप्त काह ते के स्वयं में है। वी स्वयं काल कुछ के को तो प्राप्त काह के के के काह को कोची के कीची काह है। व्याहरवाली का सान कीची







305 ।पा-विज्ञान · भविष्यत् काल में भी इस-'व' झन्त वाले रूप का प्रयोग पाया जाता है।

 कर्वावक सन्नाए त्रियायंक सन्ना के विकृत रूप मे वाला, हारा प्रादि वेन्द्र सगाकर बनाई जाती हैं। जैसे जाने वाला, एकडने वाला भादि। हिन्दी बाना का सम्बद्ध सं 'पालक' तथा 'हारा' का सम्बन्ध स "धारक' से जोडते हैं। हुछ बोलियों में 'झद्या' लगाकर भी कर्तृवाचक सज्ञाकी रचना की जाती है, यथा पढ़ेंग्या, करम्या मादि । इसका उद्भव भी सस्कृत 'तृक' से है । , जैसे, पड़ैया ≪पठत्कः । तास्कालिक कृदन्त-तात्कालिक कृदन्तो का निर्माण यतमानकालिक क्रनों में 'हो' लगाकर किया जाता है। प्राय बर्तमानकालिक कदन्त के

विकृत में ही प्रयुक्त किया जाता है, यथा-जाते ही, नहाते ही मादि । अपूर्ण निया बोतक कुदन्त बर्तमान कालिक कुदन्त का ही एक परिवर्तित रूप है। वेंसे-उसे पुस्तक पढते नीद मा गई। भूतकालिक क्दन्त के विकृत रूप से पूर्ण क्रिया चोतक क्दन्त का जन्म हुता है। उदाहरणाय-'उमे गये बहुत दिन हो गये । भापनिक काल में हिन्दी कृदन्तों का प्रयोग काल के भर्ष में होने लगा है। सस्त्व इदन्तो से ही हिन्दी इदन्तो की उत्पत्ति हुई है परन्तु काल रूप म प्रमुक्त हिन्दी कुरन्तो का सम्बंध सीधा मस्कृत कालो से नही है। मून कालों की

कभी हो जाने से प्राकृत में भी इसी प्रवार इटस्तों का प्रयोग पाया जाता है। धार्थानक बाल में जब प्राचीन बालों के संयोगात्मक रूप सुन्त हो गये नो ें स्य से



भारा-दिहान १८१

'ई' का निनता है, यदा—इक्कीस, इक्तीस, इक्तालीस मादि । इनमें 'ई' ध्र्यंत गुल को मुनस्वति 'ए' का परिवर्तित रूप है ।

यो-हियों के दो का कर सहस्त में 'हो' तथा प्राकृत में 'दो' है। सस्कृत में 'हो दह पनि प्राकृत स्वया पुरुषतों में 'दो' में बदल गई है तथा हिन्दी में भे पहुक सल्तामों ने प्राय: यह रूप मुर्गाशत है। जैते—बारह, बाहम, बनीव, बनावित मारि। येथ 'दो' स्वति हिन्दी समातों में 'दु', 'दू' तथा 'दो'

वर वे विजया है, यथा दुग्हा, दोनो, दोहरा चादि। तीय-हिन्दी का तीत≺प्राहत तिलि≪संहतर वेलि रूपो से साध्य प्रवाही, तबहत त्रय वा स्वय्य प्रजाब हुये सस्हत सस्यामी मे 'से', 'सें', 'से' या दिल को में सुच्छिनोवर होता है, उदाहरणार्य—संदह, तेतीस, तिता-बीस (तालक लार्य)

बार—हिंदी वा बार प्राष्ट्रन ये 'बलारि' तथा साइत में पासारि का में में होता है। मधुष्ठ सरमाधो सोर सवालो में हिंदी के 'बो' तथा बोर रूप वित्रे हैं प्रिन पर सम्ब्रुक कर 'बनुर' तथा प्राप्ट कर 'बजरो' वा प्रमाव है। हवा—बोधरी बोराली, बोमान, बोरह सादि। बारवाई, बारसान

यादि नकीन गमरत हवी में बार का प्रयोग दिया गया है।

भीव--हिन्दी का गाँव माहून तथा प्राहुत दोनों से प्ययं क्य सा सिनडा है। हिन्दी को गाहुक सराप्रधी यह प्राहुत पत्यं या प्ययं का क्यार है। मै--या है, यासीम साहि। कुछ सरायों से प्यतं व्ययं से बदन दया है। भूष--हिकाबन भीवन साहि। बाहुत का यय वही पत्यं तथा हो प्यतं वन क्या है। ब्याहकों स्थापन, स्थापन, यक्यन, व्यक्त, व्यक्ती प्रयन्त साहि

स्य स्वतः चारच व प्रतिव स्व को हो एका है।

While the second size a "direct size of a light fit to a second size of the second size o



वानीम, बबालीस मादि ।

पत्रात्त — हिन्दी का प्यास्त्र प्राप्त में प्यासारी कि स्वत्र है। स्वत्र सर्वास के प्राप्त है। स्वत्र सरवासों ने पत्रात का स्वातायन क्य 'पत्र', 'यत' कि जाते हैं। वेदे सावत, तिरपत्र भ्रीर चीमत भ्रादि । उनक्यास, पत्रात के भारत पत्र ता त

साठ-हिन्दी की इस सख्या के रूप प्राकृत में 'सहिठ' तथा सस्कृत में 'पिट' मिलते हैं। संयुक्त संस्थायों में इसका रूपान्तर 'सठ' है, यथा- इकसठ,

बास्ट, वरेस्ट पादि ।

कतर—हिन्से के सतर का प्राकृत में 'खतरि' तथा सस्कृत में 'खप्ति' के सतर का प्राकृत में 'खप्ति' तथा सस्कृत में 'खप्ति' के मिल होता है। पाल तथा प्राकृत में 'खं घ्वित 'र' में परिवर्तीत हो। गर्दे हैं। हिन्से के सतर पर इन्हों प्राकृत रूपों का प्रभाव है। चैटर्जी महोदय के सत्र में 'खप्ति' में ति <ि—ि दिल्हें प्रकृति कि स्वतर हो। यथी है। परण्त दिल्हें में देव स्वतर के 'खं 'घ्वित 'हैं। में के सत्तर 'हैं। 'खं 'घ्वित स्वतर में 'हं' में स्वत्त में देव प्रकृति हो। स्वत्त स्वतर में 'हं' में स्वत्त में 'हं' महताया 'हं' में स्वत्त यथा है।

परहो—हिन्दी घरखी का विकास>प्राकृत 'मसीड'>सस्ट्रत 'मसीडी' से हुमा है। समुक्त सस्यासो में मानी प्रपत्त यानी रूप विकता है, यथा— उनाधी, बेनामा माडि। घरती में 'स' का डिस्क रूप पत्राची के प्रभाव से है।

मध्ये—यह रूप प्रान्त के 'नध्यए' तथा संस्तृत के 'नध्य' का स्पान्तर है। मयुक्त सरमाओं में प्रानृत समस्था 'नध्ये' रूप मिलता है, जैसे बानने, तिरा-तरे स्राति।

त्व सादि । सी---हिन्दी वा सी प्रावृत में 'सम्र' तथा 'सम्' मीर सत्वृत्र में 'पात्र' है। इसका क्यान्तर संयुक्त सत्यामी में 'से' ही जाता है, स्था,संवदा, बार से एक।

हमार-हिन्दी म यह पतानी वा तत्त्वम दन्द है। सत्वृत सदुक्त सरदाधा मे सहस्र क स्थान पर 'ददारा' वा अयोग अर्थानत हो दरा चा। हिन्दी म 'हत्ता' वा प्रयास मुस्सम-वान वी दन है।

साब-गतन्त्र में दशका क्य 'तथ' है तथा स्यानी में 'तथ' रह तथा है,

. ,



मान—स्वता दिकात हिन्दी सहकृत सन्दर 'याज' से हुमा है। सान से 'रू' के ज' की तालय स्वति (अ) सेच रही है सीर स्वयं तथा यत्तरस वर्णा के सेस ने रोजों मुख हो। सबे हैं। सुन्त 'रू' का हुतीय स्थान तालय स्वति

"में मुर्गाश्च हूं भीर भारि स्वर दोषं हो गया है। रिवार-व्यान आसिक्वार से दवतार नी उत्तरित स्वष्ट है। भावि पर्या भा ज्या मध्य ध्यदन 'द' ना नोप होकर द्वार दोष यह गया है। परिनंदास सोधीरण ना स्थान सामृ हुमा है।

प्रमोत - यह सरवृत प्रदोनिवानि - उनविवानि का ही स्वास्तर है। धर्मन्तरिवने के सम्बन्देत सन्तिम वर्ष 'जि' तून होकर व' धानि 'ई' में धर्मन्तिहरु हो पहें। 'स' का 'म' वन गया। सह उन्नीत बना।

वशह -- वाट सर्व में पह नि मृत है परन्तु ध्वति-विषयों के सामू वशह -- वाट सर्व में पह नि मृत है परन्तु ध्वति-विषयों के सामू विश्वे के बाग्य दसरी बुल्यान सदित्य है।

ारण क नाम्य द्वारा प्रदूषांच साराभ है। नाम - नाम त्रामुण पार्म ना विकासन रूप है। नाम नी मध्य प्रति पूर्व नाम हो गया नथा पर्य जायस्य प्रवृति प्रतिमें बदल गई धीर नाम

यन तरा । यन्तर-पह सन्दर्भवां ना क्यान्तर है। सन्दर्भवन हुना भण्य स्व क्यानमा निम्मीयको भनित ट्रंस योग्योनन हो गई स्वीर वरह का स्व

दिन होता ।

क्षेत्री कर कर कर के किया है के क्षेत्र के

the site rethers with the country to the same of the s

the let with the extreme and we want to







78. T

माज--इसका विकास हिन्दी सस्कृत शब्द 'ग्रंग्रं से हुमा है। माज में 'मद' के 'य' की तालब्य ध्वनि (ज) दोष रही है सीर स्पर्त तथा मन्तस्य वर्णी के योग मे दोनों लुप्त हो गये हैं। लुप्त प्दंका तृतीय स्थान नालस्य प्वनि

'व' मे सुरक्षित है भीर भादि स्वर दीघं हो गया है। इतवार—सम्कृत भादित्यवार से इतवार की उत्पत्ति स्पष्ट है। श्रादि स्वर 'धा' तथा मध्य स्थाजन 'द' का लोप होकर इतबार दोप रह गया है।

ध्वति-विकास लोपीकरण का सिद्धात लागू हुमा है। उम्मीस-यह सस्टत एकोनविशति>उनविशति का ही रूपान्तर है। प्वति-परिवर्तन के मन्तर्गत मन्तिम वर्ग 'ति' नुप्त होकर व' ध्वति 'ई' मे

परिवर्तित हो गई। 'दा' वा 'स' वन गया। मत्र उन्नीस बना। करोड - कोटि सस्कृत राज्य से यह नि मृत है परन्तु ध्वनि-नियमों के लागू

न होने के कारण इसकी अदलित सदिग्य है।

काज - याज सस्हत 'कामं' ना विक्रमित रूप है। कार्य की मध्य ध्वनि < देश तोर हो गया तथा 'य' तालब्य ध्वति 'अ' मे बदल गई मीर काज

रुपान्तर है। मध्य ब्यवन 'र्'कालोप हो मे परिवर्तित हो गई धीर केवट स्वा मव-

'नुटित घोर **'**ड' दध्टि से भी 'द' ग्रीर 'ड' 'यस है। धन्त्य स्वर 'म्र'

८ है। 'प' के लोप हो जाने

ाच्च' से माना जाता है। हुमा । क्रम ध्यदन 'श' का

7.7.35°

मान—इसका विकास हिन्दी सहदत ग्रन्थ 'मण' से हुमा है। मान में 'मय' के 'य' की तालव्य ब्वनि (ज) रोय रही है बीर स्वर्म तथा मन्तस्य वर्णों के रोग में बोर्सो जुद्य हो। मुद्ये हैं। मुद्या 'य' मा नृतीय स्थान मामव्य ब्वनि 'ज' में मुरस्तित है मीर मादि स्वर दोर्स हो गया है।

इतवार—संस्कृत मादिववार से इतवार भी उत्पत्ति स्वष्ट है। मादि स्वर भा तथा मध्य ध्यत्रन भी को लोग होकर इतवार पेप रह गया है। स्वरि-विकास लोगोकरण का सिद्धात लागू हमा है।

उन्तीत-यह सरहत एकोर्नावर्धात - उनिवर्धित का ही स्थान्तर है। म्बार-परिवर्धन के मन्त्रगत मन्तिम वर्ग 'वि' तुग्त होकर व' ध्वति 'है' में परिवर्धित हो गई। 'प' वा 'व' वन गया। मन उन्तीत वना।

परिवाद हा गई। 'सं का 'सं का गया। भग उन्त्राष्ठ वता। करोड़ —कोटि सस्कृत सन्द्र से यह नि सूत है परन्तु ध्वनि-नियमो के लागू न होने के कारण इसकी ध्रुवित्ति सदिग्य है।

बाब - बाब संस्कृत 'कार्य' का विकसित रूप है। कार्य की मध्य ध्वति 'र्' वा लोर हो गया तथा 'य' वालव्य ध्वति 'व' मे बदल गई मीर काज

बन गण हवान्तर है। यथ्य ध्यवन प्र'का तीप हो में परिवर्तित हो गई ग्रीर केवट सा धर-

ध्यवन 'व' का पीत रूप 'व' 'के स्वीत से हुमा है। 'द' जि 'र' वृद्धित भीत 'ब' दृष्टि से भी 'ब' भीत 'ब'

ो यस है। प्रत्य स्वर पा' । - है। पा के सोत हो जाने

्र चर्च चे माना बाता है। हुमा । इच्छा ध्यवन 'च' का



₹ c ¥

माज-इसका विकास हिन्दी सस्कृत सन्द 'ब्रग्न' से हुमा है। ब्राज में

'मय' के 'भ' की तालब्ध व्वति (ज) रोष रही है शीर स्पर्श तथा भन्तस्य वर्णी

के योग मे दोनों लुप्त हो गये हैं। सुप्त 'द' का नृतीय स्थान तामध्य ध्वनि

'व' मे सुरक्षित है भीर मादि स्वर दीचे हो गया है। इतवार-सम्भूत प्रादित्ववार से इतवार की उत्पत्ति स्वष्ट है। प्रादि

स्वर 'मा' तथा मध्य स्मजन 'द' का लोप होकर इतबार रोप रह गया है। म्बनि-विकास लोशीकरण का सिद्धात लागू हुमा है।

उन्नीस-यह संस्कृत एकोनविद्यति > उनिवधित का ही रूपान्तर है। प्यति-परिवर्तन के धन्तर्गत धन्तिम वर्ग 'ति' नुप्त होकर व' ध्वति 'ई' मे

परिवर्तित हो गई। 'स' वा 'म' बन गया। घर उन्नीस बना। करोड -कोटि सस्कृत शब्द से यह निःमृत है परन्तु ध्वनि-नियमों के लागू

न होने के कारण इसकी ब्युत्पित सदिव्य है।

बाज – बाज मस्टूड 'कार्य' का विक्रमित रूप है। कार्य वी मध्य स्वति क्र' का लोर हो गया तथा 'य' तालब्य ब्विन 'अ' मे बदल गई धीर काज



2=4

म्यास्या भाग

माज—इसका विकास हिन्दी संस्कृत शब्द 'ग्रद्य' से हुगा है। माज मे

'ज' मे सुरक्षित है भीर मादि स्वर दीर्घ हो गया है। इतवार-स्कृत मादित्ववार से इतवार की उत्पत्ति स्पष्ट है। म्रादि स्वर 'धा' तथा मध्य ब्यजन 'द' का लोप होकर इतयार शेप रह गया है।

उन्नीस-यह सरकृत एकोनविदाति>उनविदाति का ही रूपान्तर है। ध्वति-परिवर्तन के भन्तगंत भन्तिम वर्ण 'ति' सुप्त होकर व' ध्यति 'ई' मे परिवृतित हो गई। 'छ' का 'स' बन गया। मत उन्तीस बना। करोड़ -कोटि सस्छन यह्य से यह नि मृत है परन्तु ध्वनि-नियमों के लागू

कात्र – बात्र स्टम्प्ट 'कार्य' का विकसित रूप है। कार्यकी मध्य ध्वनि ्रा 'या लोड ं श्री 'य' तालब्द ध्वनि 'व' मे बदल गई मौर नाज

ध्वनि-विकास सोवीकरण का मिद्धान सामू हुमा है।

न होने के कारण इसकी ब्युलिति सदिग्य है।

के योग मे दोनों लुप्त हो गये हैं। सुप्त 'द' का तृतीय स्थान तालव्य घ्वनि

'मद' के 'य' की तालब्य ब्विन (ज) रोप रही है शौर स्पर्श तथा धन्तस्य वर्णी



नेबला—दिस सन्द की व्युत्पत्ति सस्कृत 'नकुत' से है। 'उ' ग्रर्ड स्वर 'वं में परिवर्तित हो गया। 'न' के 'म' का 'ए' नदा 'न' के 'म' का दीर्घ हो

थया । इस प्रकार नेवता सब्द बना ।

षष्यम-इम्बा सम्बुत रूप प्रवासन है, पर प्रवासन से 'प्रवान' बनना स्टिम्प है। प्रतीत होता है 'पत' की स्पृत्ति प्राप्तत प्रवास से है। पर परासा से पुत्र के सनुस्थार का लीत होकर पत्र और सन्तिम बले 'सा' था भीप हा गया । 'पणा' से 'पन' दीय रहा । और रूप पचरन कन गया ।

प्यष्ट्रमर--- यह सावन पाच सन्तरिं या सपान्तर है। उध्य स १६ न वा वियमानुमार 'इ' हो गया । पर 'ति' वा 'र' होता सः सब नती । इत्वय इगरा रेप 'सल्हि' सिल्ला है। घरशी महोदय ने इगरी रहुन्तील कि हि

डि>रि मानी है को प्राय सदाय है।











स्त्रधारणत्या प्रत्येक वेदिक प्रध्य मे गीतात्मक स्वराधात पाया जाता है। भीती भाषा बाज भी स्वरीतात्मक है। वैदिक भाषा से बलात्मक स्वराधात का बिरुद्धत पा लेकिन वह प्रमुख न होने के कारण चिहित नहीं किया जाता पा शाहतों से बहाराष्ट्रीय, मानधी (बर्च) जैन, काव्यात्मक धरभरी तथा जैन रोरोगों में गृह स्वराधार वर्तमान था।

२. बनाश्मक स्वरायात - बनात्मक स्वरायात का सम्बन्ध फेफडो से है । इसमें सगीतात्मक स्वराधात की भांति ध्वति ऊँ की-नीकी नहीं की जाती है श्रीपतु सीस को भकते के साथ छोडकर जोर दिया जाता है। फेफडा तेजी से वायु फेक्ता है। इस प्रकार शब्द के जिस ब्रश पर बलात्नक स्वराधात होता है उसकी भागाब कुछ जोर में मुनाई पड़ती है। लैटिन भीर भवेस्ता में बला-रमक स्वराषात प्रधिक था। प्राधृतिक भाषाग्री में ग्रंगेजी भीर फारसी में भी यह पाया जाता है। इससे घट्ट के मर्थ में भी प्रायः परिवर्तन ही जाता है। वैसे Conduct (बॉन्डवर) राज्द में स्वरायात (c) पर है तो याज्य सजा धीर यदि (त) पर है तो त्रिया हो जायेगा । यह बलात्मक स्पराभात सन्दात के पूर्व प्रयम दीर्थ ध्वर पर प्राय. रहता है। सहकृत स्तीको के उच्चारण में प्राय इस प्रवार का स्वरायात प्रवस्तित है। शौरवेनी, मागधी तथा प्राइन्तों में सरहत के बलात्मक स्वरायात का विकसित रूप वर्तमान कहा जाता है। प्रो० टैनर के धनुसार पाध्निक भारतीय धार्य-भाषाबीने संगीतात्मक तथा वलात्मक दोनो ही स्वरापातो का मस्तित्व है। इस विषय में धनेक विद्वानी में मतमेद भी है। परन्त यह निरिचत है कि बैदिक काल के पश्चात् निखित रूप में स्वरायान विद्वित करने वा रिवाज उठ गया था मत. मधिकाश सामग्री मनुमान पर ही भाषत है।

4. कवासक स्वरापात — यह स्वरापात गीतासक तथा बवासक स्वरा-पातो के मिल है। प्रायंक मनुष्य को स्वरतियति सारितिक समावत के पनुष्याति मिल-भिल होंगी है। यहः प्रायंक स्वरित के स्वर तथा मदने में जिलाजा होंगी है। यति मदने या बोलने के स्थिप दल वे हम एक ध्यानिक की पाताय को देवार्गित प्रमुख्य सकते हैं। यह स्वरापात सोलने में हो यह होंगा है। इस ली यह प्रायंत्र की होंगा है। इस ली यह प्रायंत्र में स्वर्णन स्वर्णन होंगा है। इस लाग होंगा है। यह स्वरापात साव प्रायंत्र में स्वर्णन स्वर्णन होंगा है। इस लाग हम साव प्रायंत्र में स्वर्णन स्वर्णन होंगा है। इस लाग हम साव प्रायंत्र हम साव हम साव प्रायंत्र हम साव स्वायंत्र हम साव स्वयंत्र हम साव साव स्वयंत्र हम स्वय



उग्नुंक पाद में रे, रे, के ये तीनो दीयं हैं परनुष्टर की दृष्टि से ह्राय है। इस कारण दिन दर्जों पर स्वराधात नहीं है वे पाहे मात्रा की दृष्टि से ह्राय हो या दीयं स्वराधात के समाज में हरत ही माने आते हैं। कवित्त स्रोर फेनासी में भी हती नियम का प्राय पासन किया जाता है।

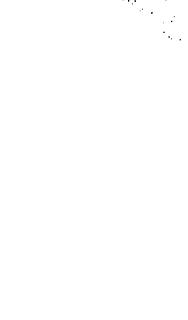
घरधी में भी बलात्मक स्वराधात की स्थिति जाए है। वाक्य में क्यवहृत एराधारी करते से स्वराधात पाजा जाता है। इवधार, त्रयक्षर तथा प्रधिक मार वाने करों में क्रल के दो प्रधारों में ते उत पर स्वराधात होता है जो वीर्ष हो या स्थात के कारण टीर्घमाना जाय। यदि दोनों प्रधार दीर्घ या स्वराह होते स्वराधात उपान्य दक्षर पर होता है, जैने पिक्षान, पथीस, भायद

इस प्रकार स्वरापात का हिन्दी में विकास वैदिक काल से पनी हुई एक सम्दो परम्परा की मुखला मात्र है।

प्रतन पर्दे के हिन्दी भाषा को बैज्ञानिक परिभाषा बीजिए तथा उसके साहित्यक कर्ष पर दृष्टि डालते हुए खड़ी बोली की उत्पत्ति भीर विकास पर

एक सन् शेष निवार ।

बा बारी या दिन देव दिन्दी वन्द वारको भाषा बा है जिवना वसे दिन देव वा बारी या दिन देव किया गाया बोती वादी में ही प्रकृत होता वा वास्तर्य को होता वा सम्पर्य को होता वा सम्पर्य को होता वा सम्पर्य को हिन्दी वान्य प्रमाण के निर्हो वनता है हिन्दु मानदादिक कर विद्वार वा बार को सम्पर्य का स्वार्य कर के स्वार्य किया के स्वार्य के स्वार्य के सम्पर्य को साम मोनी जाती है, जिवनी की माए विद्वार के विवार के सम्पर्य का सम्पर्य का स्वार्य के स्वार्य का दिवारों भाग, पूर्व में भारत हुई, ही, पूर्व में सावपूर कमा विद्वार को साम स्वार्य के स्वार्य के स्वार्य का किया कहार सम्पर्य के स्वार्य है। भाषा के स्वार्य के स्वार्य हुई से सावपूर के स्वार्य के स्वर्य के स्व



कही बोलों का प्रास्त्य-पाराम में लड़ी बोलों के सम्बन्ध में एक सम ना नहां है कि हरका प्राप्त्रभाव प्रायं जो के भारत प्राणमन पर हुया। इतिहास में बात होता है कि वह भाषा प्रयं जो से पूर्व की है। यह भाषा प्रवधी धीर वन के समकातीन की है। इसका उद्भव उस प्रप्तसा से हुया जो हिस्साने से मुनन्यहाहर तक धीर मेरल, मुजयक्तनगर जिले तक बोलों जाती थी। ११वीं राजाशी में हमचन्त्र के सम्बानुसासन नामक स्थाकरण में इसके किंबित् रूप का सामास मिनता है।

बराहरणार्थ—'भल्ला हुमा जो मारिया, बहिणि म्हारा कन्तु' मे लग्नी नोती को मानापन प्रवृत्ति म्हारा, मारिया पादि मे दृष्टिगत होती है। ११वीं मती के बोहतदेव राभी में चित्त माद्या, मन उबद्या, मोती का माधा किया मारि बारब मिनते हैं।

हिसों भोर वहूँ वा सविवत बय-हिसों धोर वहूँ वो निजना वा मान गरी में में बुंछ विवरित सवस्या में होने तता था। यतमहूत वे चल यह बयेन वो महिसा नामक होते में मारी सोजी वा चरिसारित नहीं ता महत्वपूर्व का सबय मिनता है। तक्ष्म, यान, साल, तसाब धाडि दाओं में रव बर वहूँ के मनाब का सदेत मिनता है। बर्धा-यानी के सानी बाओं योग विचा गया है। रायसतार निवस्ती हुंड 'नोमार्गाप्त' में बहुँ सानी प्रभाव में मुख्य की सीची तम्म वाच्य पिनता है। हुंब, वे में तर्म स्थानमा स्थान स्ववस्थान हुंड 'मेन प्रमुशाय' का भागानुवार किया। भागा स्थान वन है। क्यायद और विवास किए। का सुद्ध प्रभाव हुंड 'स्थान हुंड उद्यक्त को सीचा स्थान की बार्ग क्यात नक्षत्व हुंड 'स्थान का



मापा-विज्ञान १६७

पंतान में इस नात्त के फलस्वरूप हिन्दी का प्रचार धीवता से हुया। यात्र प्रांची पण्ड राज तथा पात्र रामभोहनपा ने बहुत पण्डे के प्रचारायें प्रके प्रांची के प्रचारायें प्रके प्रांची के स्वार्थ प्रके का स्वर्ग किया। हिन्दी प्रमार में ध्याराम किसीरों का योग महत्व-पूर्ण है। रहांने कहें पुराकें तथा 'भाग्यती' नाम का उपन्यास निया। इनका गय मुलभा हुमा तथा प्रोड था। बीसवी पाती के प्रवम चरण में राष्ट्रीय चेता का प्रभाव साहित्व के सोन में भी यह। भारतेन्द्र हरिस्कृत तथा जन-पार प्रवार के नात्म में मतेन कार्य में में भी यह। भारतेन्द्र हरिस्कृत तथा जन-पार प्रवार के नात्म में मतेन कार्य में मी यह। हिन्दी पाती बोलों को समुनात उपन पार मुख्याली साहित्य पाता हिन्दी पाती बोली को समुनात वार्य मान्य में मान्य कार्य कार्य

प्रश्न ४२—बिवानी भाषा के विकास भीर साहित्य का परिचय देते हुए सड़ी बोली से उसका सम्बन्ध बताईए।

चौरह्यी-परहृशी प्रवासी में सही बोली साहित्यक हिस्सी के विकास में दिखा भारत के तरवारी, रिसाबत के नयारों भीर उनके दरवारी किवियों, किशोर हिसाबित में महत्वपूर्ण योग दिया है। इस कार्य में मुल्लमाने का हाय प्रधिक रहते थीर प्रवासी में बी विदि प्रारखी हैंने के बारण होते प्रता उन्नूर सम्भने की भूत होती चली साई है। दयार्थ में दिख्यों हिस्सी प्रापृतिक लड़ी जोनी के सार्दित इस कार्य में विकास के प्रवास किया है। में बीच के सार्दित कार्य कार्य कर के में बीच के सार्दित कार्य कार्य के महत्व के स्वास की स्वास

फाम्मी पादि के साहित्य के साथ भारत को विभिन्न भाषायों के साहित्य का भी धप्पयन धवस्य किया होगा। १७वी शताब्दी तक के दिविजी भाषा के ध्वामें के लेखक सभी मुम्ममान हुए। इतका कारण या कि हिन्दी के मादिकाल के विद्रानों को भाषा सस्कृत यो। साहित्य को भाषा प्रमुख्त यो। उत समय हिन्दू भगनी प्रचलित साहित्य के भाषा प्रमुख्त यो। उत समय हिन्दू भगनी प्रचलित साहित्य के भाषा भाषा करता को बीलपात को भाषा को प्रमान कर साहित्य ने उतका प्रचेग किया। भारतीय नजता के भाषा को प्रमान कर साहित्य ने उतका प्रचेग किया। भारतीय नजता के भाषा को प्रमान कर साहित्य ने उतका प्रचेग किया। भारतीय नजता के साथ सर्वद करते की नाम साहित्य कर के सित्य का सहारा विद्या। मुस्तिम सत्र भीर प्रभीर पर्योग परित्य का स्वाह्य करने वाले। इस प्रचार का स्वाह्य करने की स्वाह्य करने मार्थ हा प्रचार करता के स्वाह्य करने मार्थ । इस प्रकार का स्वाह्य करते के विधे इस भाषा का स्वाह्य करने मार्थ। इस प्रकार का स्वाह्य करने के स्विधे इस भाषा का स्वाह्य करने मार्थ। इस प्रकार का स्वाह्य करने किया । इस प्रकार का स्वाह्य करने किया हम्मी स्वाह्य करने स्वाह्य करने किया । इस प्रकार का स्वाह्य करने स्वाह्य करने स्वाह्य हमार का स्वाह्य करने स्वाह्य करने स्वाह्य करने स्वाह्य करने स्वाह्य स्वाह्य करने स्वाह्य स्वाह्य

क्षम ताथ हिना हम आपहता बढ़ता है। जतर भागता में सह हिनों के सर्वश्रम हकी समीर सुतरों माने जाते हैं। इनदी हिन्दी कोल-पाल को भाषा थी, दिनमें खड़ी बोली के साथ कुछ पत्र भाषा का गृह भी था। सुतरों के समकालीन सन सलीहलदर का दौहा भाषा की शृद्धि स करेगत है—

> सजन सकारे आयेंगे और नैन मरेंगे रोय 1 कियना ऐसी रैन कर भोर कभी न होय ।

दन प्रचार भारत से खरी बोनी से बास्त-निर्माण ११वीं ताठी तक चा प्राचीन उपनय्य होता है। उन्नके उपरान यह परण्या कई पाठियों तक मुख रहे। 'उन समय भारतीय परम्या में उन्न धेवी वा साइत साहिया र बा रहा बा तथा प्राइट धीर समध्य से बाय, नाहन, नहांनी धारि कि बा रहे थे तथा विदेशी परम्या बहिता को बोने धीने उपयोग में नियये पर बन-सामाय के समझे बोग्य विद्यात धीर विर्मेश-स्ट्रानियाँ हिस्से नियम देने थे। 'यह बिदेशी परम्या बड़ी बोनी को साम तकर १८वें से दिल्ली प्रदेशों से मुक्तमानी पोयों, सती धीर दर्वेंदों के साम दिल्ली भारत का पारस के सीम का प्राइट की हिस्से पार्ट करा उसी भारत का पारस के सीम हा पार्ट के सी नहीं प्रदेश पर्ट मुख प



भाषा-विज्ञान २०१

हफीज दिखत बसे गये। परन्तु इन नवीन कनाकार की कृतियों में 'दिस्तनी' की विदेशवाए" तुस्त होने तगी। इन पर फारसी का गहरा रग बढ़ गया था।

मन तक दिश्ता के सभी कलाकार मुगतमान हुए परस्तु मानकवाही राज्य में कुछ हिन्दुषों ने भी इत आवा में रचनाएँ की, तममें लाता मोहन नात 'मेहना के भीर साला लांडमीनराम्य 'पानि' उन्तेयनीय है। शैसकी प्रतास्त्री तक माने-माने तो है इराश्चर हो इन भाषा वा एकमान वोषक रह गया। परना इस समय तक भाषा परना म्यामांक स्वस्य स्तेयन उद्दू का रूप पारण कर पूकी थी। मय बहाँ के सभी माहित्यकारी की भाषा लांतिस यहुँ है। किर भी दो-एक स्विचों ने दिख्यों को मपनाचा है इसमें 'हमला' की दुर्माणी मोर प्रवस्त के हिन्दी एट सन्दो वन पड़े हैं। सभीप में माधुनिक यही बोर्क की पूर्वन हिन्दी, हिन्दवी या दिख्यनी आया के उद्देशम मोर विकास की बारी करानी है।

साहित्य की दृष्टि से दिस्तनी गत में मसनविशी प्रश्निक हैं। निजानी की मसनविश्वी सर्वस्यात न दहम' दिस्तनी की प्रथम मसनविश्वी है। वजहीं की कुनुव मुस्ति भीतिक रचना है। बायकी के स्वायत दी कहा पर प्राप्त गुनाम मसी हत दिस्तानी भारत स्वायत है। मुसीनी माँ मननवी 'पारत दारा' है। इसीनी माँ मननवी 'पारत दारा' है। इसीन सम्बद्धा देवक की जन-

नामा भीर मुस्तान इहाहीय की नवस्य उस्तेलनीय है।

मतः यह बारा माहित्य हिन्दी ना मादि साहित्य नहा वा चनता है पर इसकी निषि कारसी है। हिन्दी बासों नो दुर्वोप है। उपदि हिन्दी नी दक्तिनी साला के सेपक प्राय: मुक्तमान थे किर भी उनमें भारतीवता घोर देशीवन पर्वाद का । भ

प्राप्त रहे ने वेदनावरी के उद्यम घोर विदास वर एक लेख सिखिये त जरहे नुष्य धीर रोवो दा दिवेदन करते हुये दृष्ट मुचारतमक मुसाद कोडिये।

भाषा घीर निवि का पास्त्विक सम्बन्ध बडा धनिष्ठ है। निवि भ का सावस्य तथा सरीर है। भाषा और निवि दोनी हो विकार-विनम माध्यम तथा भाव-प्रकारन के सबेत हैं। भाषा का विन्हों हास विविद्य



भाषा-विज्ञान २०३

है। देवनायरी निशि को एक विदेयता यह है कि इसमें जो हुछ लिया जाता है उपना उक्कारण पूर्ण करेण उसी प्रकार किया जाता है। विश्व की सन्य जिलेकों में यह पूर्ण नहीं है। रीमन तथा उर्दू लियि से सके क्यानि-सकेन नहीं हैं। साथ ही उनसे निया हुछ जाता है भीर उचना उक्कारण परन्य प्रकार में क्यान्याता है। एक ही वर्ष का प्रयोग विभिन्न ताड़ी से करने से इसना उक्कारण भी बदन जाता है। परन्तु देवनायरी नियि से ऐसा नहीं होता। जुन्हारण भी बदन जाता है। एक्तु देवनायरी नियि से ऐसा नहीं होता। जुन्हारण निवस्त प्रवान के निय सदेव एक निवस्त वर्ष का प्रयोग हो देवित। साना गाया है। एसी कुरन्तु इसने वैज्ञानिक नियि साना नया है।

हिन्दी प्रदेश में प्रतंक वितियों के होते हुए देवनागरी विवि का स्थान सर्वसेंट एवं उन्द है। मुद्रा में दो पिकामा इसी का व्यवहार किया जाता
है। मुद्दी पिकास कर के स्वानिक सकेत वर्धवान है। दवान
है। मुद्दी उत्पार प्रवचन, प्राम्कत प्रयत्न परि बाह्य प्रयत्नों के विवासों पर
वो वर्षी केंद्रा किया गया है। इन्हों के प्रतीक देवनागरी के स्वर प्रीर व्यवन के
वर्ष है। उत्पार प्रवचन, प्राम्कत प्रयत्न परि के उन्वारण में जिन प्रशार
वे मुद्रा ही उत्पार हो। हम हो के प्रतीक देवनागरी के स्वर प्रीर व्यवन के
वर्ष है। उत्पार पार्थ में प्राम में प्रताद के उन्वारण में जिन प्रशार
में मुख्य प्राथा प्रवच्या है प्रीर जिल्ला की स्थित मध्य में होनी है। 'पा' की
मात्रा उत्पत्ने पूर्ण प्रे वर्ष में भी मुद्र के व्यवहां के दोहर नवस्वन
है। 'पी' भीर है की चाहरी भाताएँ (), ") मुद्र के व्यवसे के दोहर नवस्वन
है। 'पी' भीर है की चाहरी भाताएँ (), ") मुद्र के व्यवसे के दोहर नवस्वन
है। प्राम प्रताद के प्रहार प्रमाय केंगालिक ने हिन्दी वर्णवाल की वैगालिक
वो परिशा करने के वहर पर में जब वर्षों के स्वरह के प्रिष्ट के स्वर्ध के प्राप्त के स्वर्ध के प्रताद के स्वर्ध के प्राप्त के प्रताद के स्वर्ध के प्रताद के स्वर्ध के प्राप्त के प्रताद कर स्वर प्रताद हो स्वर्ध के उन्हर दिया ने पर स्वर्ध के प्रताद के स्वर्ध के प्रताद के

हिन्दी बर्गमाना के स्वर तथा स्वयंत्री में भागतर है। स्वरों के उच्चा में स्थानों में बिना टक्साय हुए स्वीत प्यति निकल जाती है जब कि स्व में प्राथवानु उच्चारम-स्थानों के स्वर्ध या पर्यथ करती हुई बसी जाती मत. संद्रानिक हुटि हे स्वर भीर स्वयंत पृषद् पृषक होने चाहिए। देवन चित्र में प्रानिक हुटि है स्वर भीर स्वयंत पृषद् पृषक होने चाहिए। देवन चित्र में प्रशिक्ष हो है।

जन्मारण-स्थानो के मनुसार स्पूर्ण व्यवनों के पांच वर्ण कर दिये य



भाषा-विवास 200

वंगला। उत्तर भारत की पविकास द्वाधृतिक लिशियों नागरी लिशि की निनान हैं। इम कारण वर्तवान देवनागरी लिपि से इनका निकट का सम्बन्ध भौर साद्य्य है। बाह्यों की दक्षिणी सैली के भन्तर्गत, पश्चिमी, मध्यप्रदेशीय, जैतनू, बन्द्रही, प्रथ लिपि, कॉलग लिपि तथा नामिल लिपि का प्रादुर्भाव ह्या ।

भाउनी राताब्दी से नागरी लिशि की प्रभक्ता बराबर रही है। राजस्थान, उनर प्रदेश, बिहार, मध्यप्रदेश में दसवी शती के समस्न शितालेख मादि इसी लिति में निखे गए हैं। भाष्तिक देवनागरी लिपि प्राचीन नागरी लिपि का ही विक्रित रूप है। गत सौ वर्षों में मुद्रण के प्रविष्कार ने संयुक्त व्याजनों के जगर नीचे से सम्मिलित रूपो (श. श. स. मादि) हटा रूर माने पीछे लिखे हुए रूपो (च्च, वक, वब झादि) को ही झधिक मपनाया है।

भाव तावरी विशि का उत्तरोत्तर विकास हो रहा है । हिन्दी, सरहत तथा मराठी को यही एकमात्र लिकि है। नेशल को यही राजनिषि है। निविला भीर

में इसका सम्मान हो रहा है तथा भारत की लिपि भी यही मानी गई है।

परिशिष्ट

रान ४४--स्पष्ट कोजिये---

(क) भाषा की परिभाषा, (त) भाषा प्रजित सम्यत्ति है. (य) भाषा ावस्था से वियोगावस्था की घोर जाती है, (च) भाषा-चन्न, (इ) भाषा

।माध्य प्रवसियाः

(क) भाषा को परिभावा-भाषा दिवार को प्रश्निम्यन्ति तथा दिवार-मय का सामन है। इसरे सब्दों में विचार को स्विध्यक्ति के जिल क्यें गरत को गमान के द्वारा नवीहत है और किन्हा व्यवहार होता है: भाषा है।' साबान्य कर से प्रिस साथव से हम बात दिनार दा भाष । तह पहला सहें, यह भाषा है ।"

शा भानानाव विवास व भाषा-दिशान से से हुई परिचास .--"नामा प्रश्वास्थाहरको है जन्दरीय प्राययक विश्वपूर्ण या द्रश्यिक .

भाषा-विज्ञान 307

भिषितु उसे दूसरों के समगं से रहकर ज्ञान प्राप्त करना पड़ता है। एक बालक भारती मातृभाषा के समान अन्य भाषा भी सुरमता से सील सकता है। इसके भविरियत मनुष्य प्रयन्त के द्वारा ग्रनेक भाषाचा का जाता हो सकता है । धाज फाल में रहने बाले केन्द्र जाति के जोग केन्द्रिक भाषा ही नहीं प्रियत वैहित-पुत्री फोच भाषाभी बोलने हैं। इसने स्पार्ट किभाषासनन स्रोर प्रयान से उपाजित की जाती है। धन भाषा परस्थरासन सम्पत्ति हान कमाप्रसाप प्रजित्र भी है।

(म) भाषा संयोगाबस्था से वियोगाबस्था की धोर जाती है- भाषा सामाजिकसमग्रह परिणास है। शमाज क विकास कमाधा संगास सी विकास व्यक्तिवात है। भाषांक स्थापक व्यवपान । सामा देर देश केश प्रा सकता है कि भाषा की प्रवन्ति सर्टित से व्यवहिति की छार राज्ये। भाषा भादि पाल भ समस्त, अस्ति भोगस्थल ग्रहण है । र धार वह सरग भारत भीर सुध्य हाती जाती है। सभा भाषामा वे इतिहास संपट स्था है कि जावा वंदिनता संसरभूता की धार धदसर होती है। मानव का यह अ मजान स्वनाद है कि बह क्रम संबद्ध प्रधास मा स्थित संबद्ध के करण है। देशी प्रेयत्न लाध्य संबद्ध सत्यत्य का सन्त बहन जराना है और बाद संजन

बह बर ही बाध चला लता है । भाषा एक सहजारि ब्रास्ट है वा रहण बरेन min n 41= 22 --- --- --- ---



ब्याकरस

भाग-विशान प्रोर <u>जारण का प्रतिक्ष सम्बन्ध है</u>। व्याकरण भाग विज्ञान के चित्र सामग्री मन्द्रन करता है धोर भाग-विज्ञान ब्याकरण को धां बदात है। चामरूज भागा को मेश्रुत तथा ध्रमापुता पर निवार करना है परनु भाग-विज्ञान भागा को वैज्ञानिक व्यारण प्रस्तुन करना है धोर भागा है त्रण रूपो धोर वारणो जो सोज करना है। व्याकरण प्रतिकारी ने होक प्राचेननायादी है धोर नवजान रूपो को धाया धुमानता है जबकि भाग-विज्ञा वा सम्बन्ध भागा के पीवन कर ते है। व्याकरण निवस, उपनियम तथ प्रपत्ता है भीर प्राच-विज्ञान करता है तथा भागा के निष्यंत करों को ध्रमात है भागा है धोर प्रयान-विज्ञान पर्यक्ष को काव्यादा तथा दिशास पर्यक्ष प्रस्ता है। भागा के प्राचीन रूप का विकास केसे हुया, भागा-विज्ञान है वारणो वो सोज करना है। धन भाग-विज्ञान करते हैं धोर आगा-विज्ञान करते

भावा-विवास भाषा के प्रध्यक के लिए ब्राय समस्य मामधी साहित्य री ग्रहण करना है। भाषा धीर हम-दिस्तर्वन का बाता करती कारी साह में माहित्य में हो प्रीवान मिनती है। भाषा के ऐतिहासिक तथा तुननार प्रध्यक में हमें नाहित्य के हो सहायता मिनती है। तरहन, प्रभेतन तथा प्रधारि माशित के प्रधार प्रदान में हमें एक परिवार मानते है। मन भाषा नी प्रधान निर्मित साहित्य में तुर्पित मिनती है। कि नाथ भी मुझ के नित्य भाषा-विवास मध्यभ्र म, प्राइत, तरह तथा धीरक माहित्य को धीर रंगका प्रधान माहित्य करा धीरक माहित्य को धीर रंगका है धीर रंगका प्रधान करा प्रधान महित्य उत्तर्स्य होना है। एक्सप्ते परिवार के प्रधान माहित्य क्षा बाह प्रधान परिवार कि स्वार प्रधान साहित्य क्षा बाह प्रधान परिवार कि स्वार प्रधान करा साहित्य क्षा बाह प्रधान परिवार कि स्वार को है। समस्य परिवार कि स्वार को है। समस्य मिनती हमें को है। समस्य माहित्य को है। समस्य माहित्य को है। समस्य माहित्य को है। समस्य साहित्य को साहित्य को स्वार साहित्य के समस्य साहित्य को साहित्य का साहित्य का साहित्य को साहित्य को साहित्य को साहित्य का साहित्य का साहित्य का साहित्य का साहित्य का साहित्य को साहित्य का सा

'कैसे' का उत्तर देता है । अ<u>त</u> भाषा-विज्ञान व्या<u>करण का भी व्याकरण है ।</u>

भाषानिकात योर मनोविकात में बर्गाल क्षालिम्य है। भाषा वि-वारी है तथा विचारी वर्ग सीमा सम्बन्ध मालिम्ह तथा स्त्रीरिकात मतुष्य को रम्पानिक में भी भाषा वा बहुत हुए तम्माय है। प्र विकास भाषा की मालांकि तुर्विकों को मुलकान से मनोविकात से



प्रकाश डाला गया है। डारोर-विज्ञान

सरोर-विज्ञान धोर भाषा-विज्ञान का गहरा सम्बन्ध है। भाषा का मनुष्य के सारोरिक तटन के पर्याव्य सम्बन्ध है। भाषा मुख से नि मृत व्यनि है, सात्य रवान बागु की गति, स्वर-वन्न, स्वरत्यों, नामिक-विवर, सातु, दीत और फ्रोट, कट, मुद्धी धारि धवयंची का कार्य तथा कान हारा स्विन का सहन स्वार्य समस्त पदनि का मान सरोर-विज्ञान के बिना सम्बन नही है। ज्ञानतन्तु सन्तित्त से मुन, नामिक धारि स्वयंचे को प्रेरित करने है। सिवित भाषा वा बहुन भी नेसेन्द्रिय में होना है जो सरीर-विज्ञान का एक ध्या है।

्रितहासं

भाषा-विज्ञान धौर १विहास का पनिष्ठ सम्बन्ध है। कियी देश में किसी सम्बन्ध सम्बन्ध है। कियी देश में किसी सम्बन्ध देश वा राज्य स्थापित होना होना हो देशों की भाषा को प्रभावित करना है। हिन्दों में घरबी, घरखी, तुर्वी, पुर्वेगाली तथा धौषों की सम्बन्ध कर वा सम्बन्ध स्थाप सम्बन्ध सम्बन्ध सम्बन्ध सम्बन्ध सम्बन्ध सम्बन्ध स्थाप सम्बन्ध समित्य सम

भारत ना ऐतिहासिक या तुननात्मक प्राच्यन इतिहास के तिस्याच्छ्य गूटों पर भी प्रशान द्वालता है। भाराविकात की सहावता के तनातीन भाया के प्राचार पर प्राविद्दान बात के तमाज ना प्राच्यन हिया जाता है। भाराविद्यान पीय परिवार के प्रध्यन में मूच भारतीय जीयों की सामाजिक द्यात तथा पासिक प्रवृत्तियों का परिवार प्राच्य हो जाता है। उदाहरणार्थ प्राचेतन्त्रम प्राप्त परिवार बनावर रही ये तथा परिवार में प्रतेक सम्बन्धों को प्रमान पार्टी के धरित्य वे द्यात्र हो जाता है। प्राची के मूल तिवास न्यान की द्याप भी रही स्वारत पर हा रही है।

समाज-गास्त्र ।

भाषा विचार विभिन्न वा माधन है। हसाज में हो बान मानवीन म बा साराम-द्राम भाषा के साम्यम से हो होता है। विज हाविजय म बो सम्म ने विचार विचा है वही भाषा बन वहें है। यह भाषा भ-भागतिन होडर समस्यम है। हीतन में 'वह' हम्द हमूब माना बर्दि भारत में पूर्व बर्द म वहा ब्रावे होता है। हमाहू हसी स्वस्टुत दशना बिगे का बहें बाद में मूर्व हा दसा। जाराज बहु है



- से इनके घटड़ों के योग को प्रश्निष्ट कहा जाता है।
- (३) प्रश्लिष्ट योगात्मक—इगमे केवल प्रत्ययो ना प्राथान्य रहता है भीर प्रत्ययों से ही सम्बन्ध स्पष्ट हो जाता है । इन बास्यों में मून गब्द मौर नम्बन्ध-तत्व को प्रकट करने के लिए प्रत्यय प्रयुक्त होते हैं । इसी कारण इन वाक्यों को 'गारदर्गक गठन वाले वाक्य' की सजा से विभूषित किया जाता है।
- (४) हिलध्ट योगात्मक —ये विभक्ति प्रधान वाक्य कहे जाते है। विभ-वित्यां का प्रयोग भरितच्ट योगात्मक की भौति प्रत्यय रूप में होता है। पर दोनों में मन्तर यह है कि मस्तिष्ट में प्रत्यय स्पष्ट रहते हैं भीर स्लिष्ट में इनका स्वष्ट पता नही चलता है। जैसे राम+सु (प्रयमा, एक व०) ⇒राम: (यहाँ मुका पता नहीं चलता है। इसी प्रकार कही-कही तो सबोग में प्रत्यय पूर्णनम लुप्त हो जाता है, यमा लता+मु≕लता (मुका सर्वया लोप हो गया है। वैयाकरणिक गठन को दस्टि से बाक्य के तीन प्रकार हैं—(१) साधारण बाबय, (२) सयुक्त भीर (६) मिश्रित बाबय ।

भाव या ग्रथं की दिन्द से बास्य के भेद-

- (१) विधान मूचक—राम जाता है। (२) निषेध मूचक—राम नही जाता है। (२) माक्षा मूचक—यह काम करो।

- - (६) यह गया होगा ।
- जिया के **प्राधार पर--**(क) त्रियायुक्त वाक्त, (ख) त्रिया विहीन वाक्य (मुहाबरे, लोकोन्नि तथा विजायन धादि मे ऐसे यावयों का प्रयोग होता है।) वास्य-गठन से परिवर्तन के कारण
- (१) यन्य नाषा का प्रभाव जब कोई भाषा यन्य भाषा से प्रभावित होती है तो बभी-बभी उसके पाष्य गठन में भी उस प्रभाव के फलस्बर पर्वितंत था जाता है। हिन्दी में पारनी और भवेत्री के प्रभाव के बारण परिवर्तन मा गर्न हैं। 'कि' सगाकर बाक्व बनाने की परम्परा पारनी के है। नेहरू प्रादि को भाषा में प्रयेजी के प्रभाव से तिया के बाद कर्म प्रवृत्ति मिलती है।
 - (२) ध्वति-विकास के बारण विनिश्तियों का पिस जाना विशास के साथ जब सम्बन्ध तरव को स्पष्ट करने वाली विभानतथी



यह भभिकाकल नीचे की भीर भुककर ध्वास-नालिका को बन्द कर देता है और भोजन या पानी ग्रागे सरक कर भोजन-नालिका में धना जाता है। स्वास-नातिका के ऊपरी भाग में ग्राभिकाकत के नीचे ध्वति उत्पन्न करने वाला प्रधान धवयय होता है जिसे ध्वति-सन्त्र या स्वर सन्त्र वहने है। बाहर गले से जो उभरी पाटी दिखाई देती है, यह बही है। स्वर-यन्त्र में पतली भिल्ली के बने दो सर्चने पर्देवा क्पाट होने है उन्हें स्वर-नन्त्री या स्वर-रब्ज् वहने है। ध्वनियाँ उत्पन्न बरने के लिए स्वरतन्त्रियाँ एक दूसरे के समीप धानी है और दूर हरती है। इस प्रकार धनेक प्रकार की स्थितियाँ उत्पन्त होकर धनेक विभिन्न ध्वनियों की उत्पन्ति होती है। इनमें घेंग्य घषोष यापत्रांग तथा महाप्राग ध्वनियो उथ्बरित होती है। ब्रॉभ के स्वरूप के मास का छोड़ासा नाग उस स्थान पर होता है जहां से नासिका-दिवर धीर सूत्र-दिवर के रास्ते फुल्ते हैं, इसे बीबा या स्निजिल्ल बहने है । बीबा की मध्य नियति स सनुनासिक वर्णा तथा इसके नासिका-विवर का रोबने पर साधारण वणा जा उच्चारण जांग है। मृत्य विवर के उपर की धार नाल है जिसके बण्ड स्थान और दौना र अंत्र स ु श्रेम से चारभाग है -- १ कामल तालु, २ मदा ३ कटार तालुतशा ४ वस्म । बिद्धा रे विभिन्न भागो का इतन स्पर्ध बरावर विभिन्न ध्वतियाँ उत्वरित की जाती है। मूल विचर के तिचन भाग में जिल्ला है। बाउन में बाद पर पर विदेश प्राप्तति या गुज-विदर बनाने के लिए इसका प्रयोग नरत है। जिल्ला के पीच नाग है - मृत परच नध्य, बच नथा नीहा। जिल्ला दान सा हाइ स मित्रक दिलिश्र ध्वनियो वा निभाग वस्त है। यह सौजात रूप संध्वनि यन्त्र शा काय है।

(ख) भागण्यस्ति ब्रोट स्थातिमात्र का ब्यावर—भागा स्थित स्थेत गा स्मृह मात्र है। स्थित के स्थातिमात्र मात्र प्रवास स्थात स्थात मात्र मात्र स्थात स्थात मात्र मात्र स्थात स्थात मात्र मात्र स्थात स्थात मात्र मात्र स्थात स्थात







भाषा-विज्ञान २२१

सरहत के द्विवयन का प्रयोग युग्म शब्दों के लिए होता या—क्रिमे पिनरी, पादी, क्षणी प्रादि । बाद मे विलोम युग्म तथा इन्द्र समास मे भी साद्ध्य हे आधार पर इसका प्रयोग यल निकला, यथा लाभनाभी, सिंह भूगाती प्रादि ।

सार्द्य के विस्तार के प्रधान कारण मुविधा या सरकता ही माद्ग्य का

साबुद्ध के विस्तार के प्रधान कारणा मुख्या का सम्बन्ध है। प्राण है।

(व) प्रभिष्यजना की कठिनाई या एक भाव के लिए दा विभिन्न सन्धा का परिसता से अपने के लिए जन-मिनाव्य एक से रूप बना नेना है। असे पुरीय

ं पीसत ने पहने पर भी पारचान्य ने मादृद्ध पर पीवान्य ना रचना की गई। (छ) रूप नी स्नित्सपुना से या स्नीयक स्पष्टता सान ने लिए रूप की निए

ति है, यथा ism के प्रापार पर Socialism भीर जमन आर्थ के भारतर 'oward भारि रूप मृष्ट हुए !

(ग) समानता मा विषयम पर बन देन के लिए सादस्य कर अंग्रेग शता

ा उद्यक्तिमान संस्कृत में स्वयं पास मानू बा स्वयू आपनु क्या वा तदा रहे । ति वा इवारान होते हुए भी क्यु वय अवीतन हमाना । दः अरण सामन्तर से भीतन वे साधार वर बाद व बहुए क्या बन तरा , दन देवार इसे देव वे निक प्रति हमाने क्या हमानु का अरण कर तरा , दन देवार

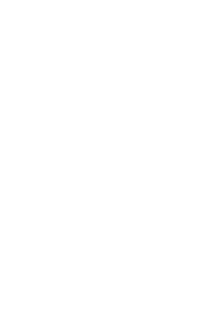
(प) विभी प्राचीत या तवात नियम व से १० फिलान व १०० मानाव वा ग्रहारा तिया जाता है जैसे पढ़ प्रत्येय जातीन एक व स्वयं का जब पूर्णी व्यवसाय प्रदेश के दूरी समूच्यं को प्रता राज्यापन तल जाता.

्ड) श्रीयाण कर्म्युक्त कर्मा करिया वार्या कर्मा कर्मा वार्या वार्या कर्मा कर्म कर्मा कर्म कर्मा कर्म कर्मा कर्म कर्मा क







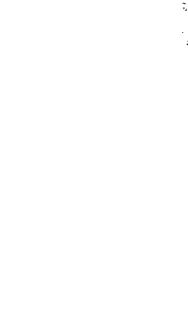












है, यह उच्च हिन्दी बहुतानी है। यूरोपीय विद्वान् स्मी को उच्च हिन्दी प्रयवा मागने बहुते हैं। प्राय निशित्र हिन्दू स्मी जाया को प्रयोग बनने हैं। इसी हिन्दी में बनेमान पूज का माहित्य नियन हो न्हा है और यहँ: बाल्ड्रभाषा के मिलानत को भी जिसूनित कर रहें। है।

रेखा:-- प्रारमी द्वारों ने प्रधिन विश्वय ने कारण निवन में मुम्क उर्दे ने वा स्वाप्त है। इसना व्यवशा मुख्यताय न इस्तारी में दिख्या का स्वाप्त है। इसना व्यवशा मुख्यताय न इस्तारी मुख्यमानी निवयों ने विचा । यह मुख्यमानी ने वेद्रे ने इस उत्पाद प्रधानमानी निवयों ने विचा । यह अध्याम-मुख्यदाय ने पेक्सी ने पर्ध निवस्ता । यहना विचा है। मध्यत्र मुख्यमानी ने विचा है। स्वाप्त ने स्वा

सर विनिधम जोस (१०४६-१७६६) — शेम माहय नवकना हाईकोर्ट में भीप बरिटन थे। यही धापने मन्हत का सम्मन्दन कर हुगेपीय भाषाओं में एक साम्य मूर्व देवा । १७६६ में दोर्चन परिवाहिक गीमान्दर्श की म्यापना की बीर सन्हत के महत्त्व की घोषणा की धौग इसे ग्रीक तथा लेटिन ने भी ग्रेस्ट बनाया। इस घोषणा के पत्त्वातु दूरोपीय विद्वानों का स्थान सम्हत की ग्रीव साहर्यित हुया।

योशोव प्रिव (१७६५-१६६३)—इनका जन्म जमंत्री में एक वकील के घर द्वारा पा प्राचीन जमंत्र नाया का इस्होने मत्यान विद्या तथा नगोत्रीय स्वाप्यमं में इसके नुकता की। प्रिम की सर्वाधिक महत्वपूर्ण पुनक उन्ने कर्मने प्राचा कर देवनाया त्यानरण (Deutsche Grammattk) है। यह जमंत्र भारता का व्यावरण १८६६ में प्रवासित हुया। इसके दूमरे सस्वरण में ध्वनि-प्रवरण में एक नदीनता थी तथा उनमें वर्ध-परिवर्तन का विवेचन किया गया है, जिसे साथ में प्रमन्तियन वहां जाने तथा या। जीवन के स्रतिन चरण में प्रमा विद्या में स्वर्णन पे प्रोर एक नदीन वान स्वर्णन में प्रमा विद्या में स्वर्णन पे प्रोर एक नक माया-विज्ञान सक्त्रभी वार्ष वार्य है थे थे

कासस बोध—रहोंने वेदिस के बाकर सन्दून वा प्रध्यपन किया। बांच पूननात्मक भाषा विज्ञान के पिता नहें जाते हैं। हरवी सदी के दूसरे चरण म रहतें। प्रसिद्ध पुततक 'तुननात्मक ध्यावस्य' क्याधित हुई। तुननात्मक स्थावस्य वी प्रचम पुतनक सही है। बिहान तेसक ने सन्द्रन, बेंद, समीतिवत्न, रोह, वेदिन, विष्धानियन, प्राचीन स्थावियन, गांची तथा प्रमंत वा पुतना-सक स्थावस्य दिया है। वे सङ्ग्रन, बोक, वेदिन का 'मूच स्थेव एक सानवे सन्द्रस्य स्थावस्य स्



स्माकरण पर भी महत्वपूर्व नार्य विचा है। बेंगना व्हान पर भी प्रत्योने विचार प्रषट कि है। मूल भागोपीय भागा ने सम्बन्ध म भा द्रवहा राम उच्चेत्र्य है। दिनहीं भागानीय मार्य-भागा भीर जिल्हों भी एन जिल्हों भागा न ज्यार रामुख सम्ब है।

प्रमग रूप में देखिये

भाषा-विज्ञात

द्यौरसनी—प्रदर्गस्य । प्राकृती व सर।।

धानम् त्या करुम् समृदायः १८० - (विज्यस्यः) इरियानः— इसे बोयस् करते हैं। १८० र विज्यस्यः।

छमीमतरा प्राप्त स्था

उदू — प्रस्त ३० ।

द्यविवर्णी--- प्रदेन रहे।

हिन्दी प्रदेश हैं।

हिन्दबी प्रधन ।

हिन्दुः नामा प्रदेश ।

∉के बरन -रा

ध्यक्षभी प्रस्त है। स्वास्त्रांक प्रस्ता है।

Elia 4 et- el 1/24 C -

प्रश्निष्ठः हिन्दी क राष्ट्रभावा राजभावा सार्शन्तक ॥ राजना नाव भाषा के पुरुष्या वर एक सांस्टर मुस्तरासक रिस्टरा निर्वास नेसी कि रिन्ट के विकास । १ - १ - ४ - १ - १ - १ - १ - १

HATE PORTUGATE THE PRIME CARE PORTUGATE AND A CONTROL OF THE PRIME STATE AND A CONTROL OF THE PRIME



एक प्रकार से राष्ट्रभाषा के रूप में रही है। परन्तु हिन्दी एक माहित्यिक भाषा, राज-भाषा भीर राष्ट्रभाषा की सामर्थ्य क्वती है।

प्रश्न ५३—हिप्पर्गो सिखिए।

स्रोतभूति, स्कट बाक्य मुद्र स्वीकरण ब्युव्यक्ति झारत्य के तिराम आगा कर स्वामानित प्रामितश्रमिक स्वोत बेदी से प्राक्त-त व स्वाहित आरणी आगा के स्वर विक्रितिषि मृत्यिषि कासी निषि प्रत्यत विश्वविक नाट रणांग तास नियम, स्वर्णक्षितान, उत्वाहण-स्वयत्य श्वित साम स्वर रोक्त कार सामस ।

स्वित्पृति—(Umlaut at Nowel mutation) स्वरत्याति र लिए ह्या है। इसका नामान्य स्वर हेलाइ ने किसी सानर्गत राह र स्वरण में सान वाल किसी सान कर सम्बन्ध नुष्य नामान्य स्वरण स्वरण क्षा के सान किसी सान कर सम्बन्ध निर्माण किस्त निर्माण किस्त निर्माण किस्त निर्माण किस्त निर्माण किसी नि

सपुट बावस (Articulate Speech) सानव-नमात्र सन्त क जिला जा गृह सक्ता है। प्राप्त दिवार को साधी से बहुत क जिला कमा कर्ण कर जार साधी हा प्रयोग बहुता है। भावभाषिता क गांव यह देन गार वांका के उपार प्राप्तीस्थादिक के पिन करणा है।



भाषा-विज्ञान २३७

असे प्रमेजी साद "संतु" का मूल हिन्दी सदद 'बोपना' से है. पर अये जी माना जाता है। (=) दो भाषामो के सप्दो में स्वयं भीर स्वित को दृष्टि से साम्य होने पर मनिस्तित दसा में एक परिचार मोर वर्ग के जानने पर उनकी व्यूप्पित के लिए मादि करनी मूल भाषा का समान सदद ने लेना चाहिए। जैस स० पिनु, स० फासर, हिन्दी पिना मिद।

भाषा पर प्राथारित प्रार्शनिहामिक लोज (Linguistic Palaentology)—
भाषा विज्ञान की यह याला इनिहाम, सम्मता कीर सम्हनि की दृष्टि में क्रान्यन स्टूल्यूचे हैं। इस खोज से इनिहाम के जत क्रान्यमुग पर जिनके सम्बन्ध में महिताम के प्राण्डी का जाना है। इस्में विज्ञी सामा के प्राण्डीन दान्दी को लेकर उन कुन की क्रम्य भाषाओं के प्राण्डीन शब्दों की सुनता के प्राण्डान एवं उत्तर दारों का सम्बन्ध दिश्यण कर उनने सामाजिक प्राण्डिक लगा प्राण्डी के प्राण्डीन प्रवर्ध की सुनता के प्राण्डान एवं उत्तर दारों का सम्बन्ध दिश्यण कर उनने सामाजिक प्राण्डिक लगा प्राण्डी का प्राण्डी के प

वेशे ने प्राकृत-ताब (Prakrissm in Veda)— स्वामंतिक कर हे सारव्य अर्जुति भाग के स्वित्य को जात है। यहां सरनता को भावता भाव के बादि का से से स्व प्राकृत उत्तर भी वह सकते है। इसरे सान्यों में भाव के मन्त्रत्य में इसे ह्या शाहृत उत्तर भी वह सकते है। इसर्वा विशेष गुन सहन वक्त मांगा मांगु कर हो जाती है। इसर्वा विशेष गुन सहन वक्त नामापर है। प्रावृत्त विशेष गुन सहन वक्त नामापर है। प्रावृत्त विशेष ग्रावृत्त भावता है। स्व किस्तर्य है। इसर्वा भीर सार्य का स्वावृत्त के दिश्च हुत का मांग्रिक विश्वान हुत मांग्रिक किस्तर्य है। इसर्व भीर सार्युक्त कर के स्वत्य के सार्य के स्वत्य के स्व मानत है। स्व हिस्तर्य के सार्य के स्वत्य के सार्य के स्वत्य के सार्य के स्वत्य के सार्य के



माधा-विगान २३६

स्वर-ध्वनियाँ निम्न हैं---

स्वर: ऐ(e), ए(e) फ्रो(n), मो(n), नमा(रा।धा) (यर स्वरहीत (unaccented) पेट कारूप पा)। विशासी के समानुसार हत पांची स्वरस्त्रियों वा मूल ऐ(e) -बिन हो घी, सब उसी से विकस्तित हासे।

ावकानन हुए था विक्र-सिविध में भाव व्यक्तित्वय में भाव व्यक्तित्वयण में चिप्त-सिविध में प्रथम हुई। नाह, मीच हार्थ दोन, यह ने हार बातव्य में बात व्यक्ति हुई। नाह, मीच हार्थ दोन, यह ने हार बातव्य में में बात तथा मिट्टी ने बतन भादि पर में बिज वनाये जान थे। मैच। पीटामिया तथा मुझे बाति में नम्ब हैं। यह नीजा द्वारा विव बेनने थे। पैरामिया तथा मुझे बाति में नम्ब हैं। यह नीजा द्वारा विव बेनने थे। देशने बेन्द्रास्त्र क्षारा (६६० हैं पूर्ण वेष्ट्र ने पास पानी का निय हैं। ये बिज दस प्रकार ने थे अंत दोहने हुए बछड़े न पास पानी का निय हैं। ये विज दस प्रकार ने थे अंत दोहने हुए बछड़े न पास पानी का निय हैं। ये विज दस प्रकार ने थे अंत दोहने हुए बछड़े न पास पानी का निय

बाह्री विविद्ध-यह विविद्धानन की नाष्ट्राय देशोर था। कुछ विहास उन विविद्धा उत्तरित योक प्रमाणी समीण होनाधार नथा नामा के दिना जो कर सानते हैं। बानते यो बाह्री। विविद्धाननका का मोनक प्रांतिकार है। देशोर प्रभान समीह पुरत्या ता आहं एका करा कहा बान रहा हो जा सारद समाज तथा बाह्या की विविद्धान के बाह्या करनाई हा परन्तु उत्तर्धा देशोरी विविद्धान के को भी प्रस्त क्षाया नहीं विना है। बारत्य वाहरानी के भी एक मा का सम्यन विद्धान है। है जुर करन्त्य उत्तर्धान कर बहुत का बाह्या का प्रभाव हहा है। बाहर में एक स्वर्ध विविद्धान कर बहुत हो की है।



Acc. No. 13 40

Class No. _____ Book No. _____

Author - श्रिक्षा प्रसाप

Title - प्रस्तो - स्मान

श्री जुविली नागरी भंडार

पुस्तकालय बोकानेर। १. पुस्तक १४ दिन तक रची जा सकती है। २. काय ससम्य से मांग महोने पर हो पुस्तक पुन: सो जा तकेगी।

्र वासक को बाहना तथा विहित करना निषम के किया है। ४. वृश्यक काहने, कोने वर मृत्य या वासक हैती होगी। वश्यक को स्वस्त व शुल्य स्थने में सहायसा को स्वस्त व शुल्य स्थने में







